Every Fortnight

February I 2015

मूल्य ♦ बारह रुपए

# वर्कटेस्ट

राजस्थान पत्रिका प्रकाशन

चित्रकथा
गुलिवर्स ट्रेवल्स-3

वर्ष- 29 अंक- 14 1-15 फरवरी, 2015 पृष्ठ- 68

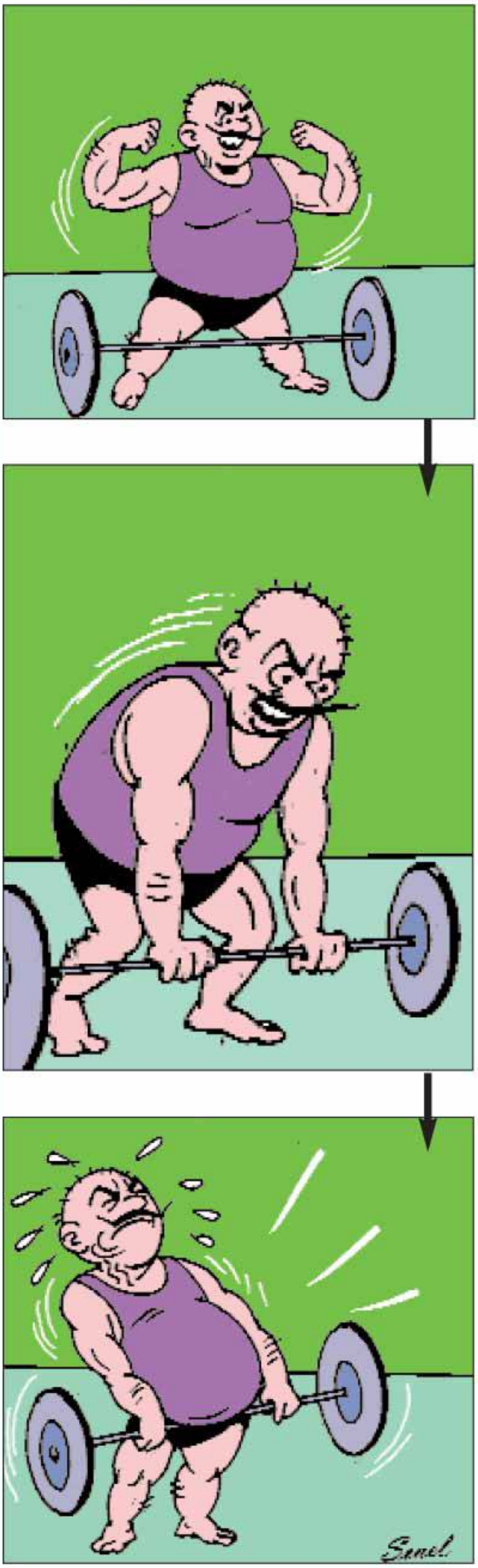
Sanel

वर्ष- 29 अंक-14 फरवरी (प्रथम) 2015, जयपुर

# विविध

कविताएं- 5
शब्द ज्ञान पहेली- 8-9
गुदगुदी- 12-13
सीख सुहानी- 14
सैरसपाटा- 16-17
बालहंस न्यूज़- 18
खोज-बीन/बूझो तो...- 19
बोलें अंग्रेजी- 21
तथ्य निराले- 22-23
सामान्य ज्ञान- 24-25
क्यों और कैसे/
कमाल है- 30
क्रॉसवर्ड पजल्स- 31
बालमंच- 32
नॉलेज बैंक- 33
बालहंस पोस्टर 34-35
आर्ट जंक्शन- 50-51
माथापच्ची- 52-53
किड्स क्लब- 54
बिंदु से बिंदु- 55
जानवरों के बारे में
मिथक- 56-57
ढूंढो तो...- 61
कैसा लगा- 66

## कहानियां

तीन बातें और तीन मोहरें- 6-7
घमंडी शेर- 10-11
बचपन वाले काका- 26-29

## चित्रकथा

*शंटी- 15*
*गुलिवर्स ट्रेवल्स*
*37-49*
*महाभारत*
62-65

## प्रतियोगिताएं

प्रतियोगिता परिणाम-58
ज्ञान प्रतियोगिता-59
रंग दे प्रतियोगिता-60

संपादक
**आनन्द प्रकाश जोशी**

उप संपादक
**मनीष कुमार चौधरी**

संपादकीय सहयोग
**किशन शर्मा**

चित्रांकन
**प्रतिमा सिंह**

*पृष्ठ सज्जा:* शेरसिंह
*फोटो एडिटिंग:* संदीप शर्मा

संपादकीय सम्पर्क

**बालहंस (पाक्षिक)**
राजस्थान पत्रिका प्रकाशन,
5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र,
जयपुर (राजस्थान) पिन-302 004
**दूरभाष:** 0141-3327700 **Ext.** 50191
**e-mail: balhans@epatrika.com**

ग्राहक शुल्क

कृपया ग्राहक शुल्क (सब्सक्रिप्शन) की राशि बैंक ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से **बालहंस, जयपुर** के नाम भिजवाएं।
वार्षिक- 300/-रुपए
अर्द्धवार्षिक- 150/-रुपए

सब्सक्रिप्शन एवं वितरण संबंधी जानकारी के लिये निम्न फोन नं. पर संपर्क करें-
0141-3327700 **Ext. 50352, 50358**

अब बालहंस एक क्लिक पर, log on करें : balhans.patrika.com
फेसबुक पर पढ़िये: www.facebook.com/patrikabalhans

*हंसमुख व्यक्ति वह फुहार है, जिसके छींटे सबके मन को ठंडा करते हैं।*

## संपादकीय

**दोस्तो,**

बात जब भी फूलों की छिड़ती है तो मन प्रफुल्लित हो जाता है। क्योंकि खिला हुआ फूल कोई भी हो, मुस्कराहट का हमारे जीवन में क्या स्थान है, यह बताता है। और फिर बच्चों के चेहरे पर जब तक मुस्कान न हो तो वह बचपन ही क्या! आप लाख अच्छी वेशभूषा धारण किये हों, यदि चेहरा मुर्झाया हुआ है तो वह परिधान अपनी उपयोगिता खो बैठते हैं। इसके विपरीत परिधान चाहे आपने साधारण पहने हों, लेकिन चेहरा खिलखिलाता हुआ हो या उस पर मुस्कान हो तो सब कुछ अच्छा लगता है। बात सीधी-सी है। मुस्कराहट से दूसरा अच्छा भेष कोई नहीं हो सकता। फूल यही तो संदेश देते हैं। वसंत के इस मनभावन मौसम में फूलों का स्वागत करें। खुद भी मुस्कराएं, औरों के बीच भी मुस्कराहट बिखेरें।

**तुम्हारा बालहंस**

# फूलों से महका चमन

सरसों के पीले खेतों में
हवा सुहानी झूम रही थी।
वहीं पास में नीली-नीली
तितली रानी घूम रही थी।
काला-भूरा भंवरा आया
मजेदार संगीत सुनाया।
पीले फूल हंसे खेतों में
मौज-मजे की धूम रही थी।
सूरजमुखी खिले थे पीले
पीछे थे मिट्टी के टीले
टीले पर चढ़ छुटकी प्यारी
फूल-फूल को चूम रही थी।

# लो आया वसंत

लो वसंत पंचमी आ गयी, सरसों ने फरमाया
पीली धरती पीला अम्बर, मन मेरा मुस्काया।
मम्मी पीले कपड़े लायी, दादी इक रुमाल
पापा पीला बटुआ लाये, मैंने रखा संभाल।
पीली हल्दी के पानी से, मैंने आज नहाया
सरस्वती का पूजन करके, पीला पेड़ा खाया।
उपवन में पीले फूलों से, खिलती क्यारी-क्यारी
वासन्ती त्योहार मना लें, सबने की तैयारी।
कोयलिया ने राग बसंती, बड़े जतन से गाया।
पीछे से छोटी बुलबुल ने भी, आलाप सुनाया।

-पूनम पांडे

# तीन बातें और तीन मोहरें

**पुराने** जमाने का किस्सा है। रामदीन नाम का एक युवक किसी जमींदार के यहां नौकरी करता था। कई सालों तक नौकरी करते-करते रामदीन को अपने माता-पिता और पत्नी, बच्चों की याद सताने लगी।

एक दिन उसने जमींदार से अपने मन की बात कही। जमींदार ने कहा, 'जरूर जाओ बेटा, लेकिन जाने से पहले तुम्हारी पगार के अलावा मैं तुम्हें उपहारस्वरूप कुछ देना चाहता हूं। उपहार के रूप में तुम्हारे पास दो विकल्प हैं। पहला, सोने की तीन मोहरें, दूसरा विकल्प है, तीन समझदारी की बातें। रामदीन अपने मालिक की चतुराई से काफी प्रभावित था। उसने कहा, 'साहब! पैसे तो मेरे पास हैं। मैंने पगार के पैसों में भी काफी बचत की है। मुझे आप समझदारी की तीन बातें बता दें।'

जमींदार ने कहा, 'तो ध्यान से सुनो। पहली समझदारी की बात है। कभी भी पुराने के बदले नया रास्ता चुनोगे, तो तुम्हें नई मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा। दूसरी बात है, देखो ज्यादा, बोलो बिल्कुल कम...। और समझदारी की तीसरी बात है, कोई भी चीज करने से पहले भलीभांति सोच लो।' ऐसा कहकर जमींदार ने उसे एक मोटी-सी रोटी दी और कहा कि जब भी वह सचमुच खुशी महसूस करे तब उस रोटी को तोड़ ले।

**आखिर तीन बातें सोने की तीन मोहरों पर भारी पड़ीं। रामदीन चाहता तो सोने की मोहरें ले सकता था, लेकिन उसने तीन अनमोल बातें चुनीं। क्या थीं वे तीन बातें। पढ़ें इस कहानी में ...।**

## कहानी

रामदीन जमींदार से विदा लेकर चल पड़ा। रास्ते में उसे दूसरे राहगीर मिले। उन्होंने रामदीन से कहा, 'हम तो छोटे रास्ते से आगे बढ़ेंगे। समय कम लगेगा।' तभी रामदीन को जमींदार की बात याद आ गई। उसने कहा, 'नहीं दोस्तो! मैं तो इसी राह से आगे बढ़ूंगा।' रामदीन आगे बढ़ा।

आधे रास्ते चलने पर उसने कुछ धमाके सुने। वह समझ गया कि उसके साथ चल रहे दूसरे लोग जो छोटे रास्ते से गये हैं, डकैतों के शिकार बन गए हैं। अब तक रामदीन को भूख लग गई थी। वह एक सराय में भोजन और आराम करने पहुंचा। उसे खाना परोसा गया। रामदीन को खाना कुछ अजीब लगा। उसने देखा, उसे जो मांस परोसा गया था, वह इंसान का था। उसने सराय के मालिक को फटकारने की बात सोची, लेकिन तभी जमींदार की दूसरी बात याद आ गई। उसने चुपचाप खाने के पैसे चुकाए और आगे बढ़ने लगा।

तभी सराय के मालिक ने कहा, 'सुनो! आज तुमने अपनी जान बचा ली। जिसने भी मेरे भोजन में मीनमेख निकाला, उन्हें मैंने खूब पीटा और मार डाला। फिर उनका मांस पका कर बेच दिया।' रामदीन ने उसकी बात सुन ली, लेकिन कुछ कहा नहीं।

शाम तक रामदीन घर पहुंच गया। उसने देखा कि घर में उसकी पत्नी एक युवक के साथ हंस-हंस कर बातें कर रही हैं। उसे बड़ा गुस्सा आया। वहां पड़ी एक लाठी से उस युवक का सिर फोड़ने ही वाला था, तब तक उसे जमींदार की तीसरी बात याद आ गई।

वह पत्नी के नजदीक पहुंचा, तो पत्नी खुशी से उछल पड़ी। उसने युवक से कहा, 'अरे दीपंकर! ये तुम्हारे पिताजी हैं।' फिर उसने रामदीन से कहा, 'यह आपका बेटा है। देखो कैसे संयोग हैं। यह भी कई सालों तक पढ़ाई करके आज ही लौटा है, और आप भी।' रामदीन की खुशी का ठिकाना न रहा। अगर उसने जमींदार से समझदारी की तीन बातें न सीखी होती तो या तो वह घर पहुंच ही नहीं पाता, किसी तरह पहुंच पाता तो आज बेटे की हत्या कर बैठता।

तभी उसे जमींदार द्वारा दी गई रोटी की याद आई। उसने कहा था कि सचमुच खुश होने पर रोटी को तोड़ना। रोटी तोड़ते ही उसमें से तीन सोने की मोहरें निकलीं, जिसे उसके दयालु मालिक ने छिपा रखा था।

–अंजू जैन

# शब्द ज्ञान पहेली

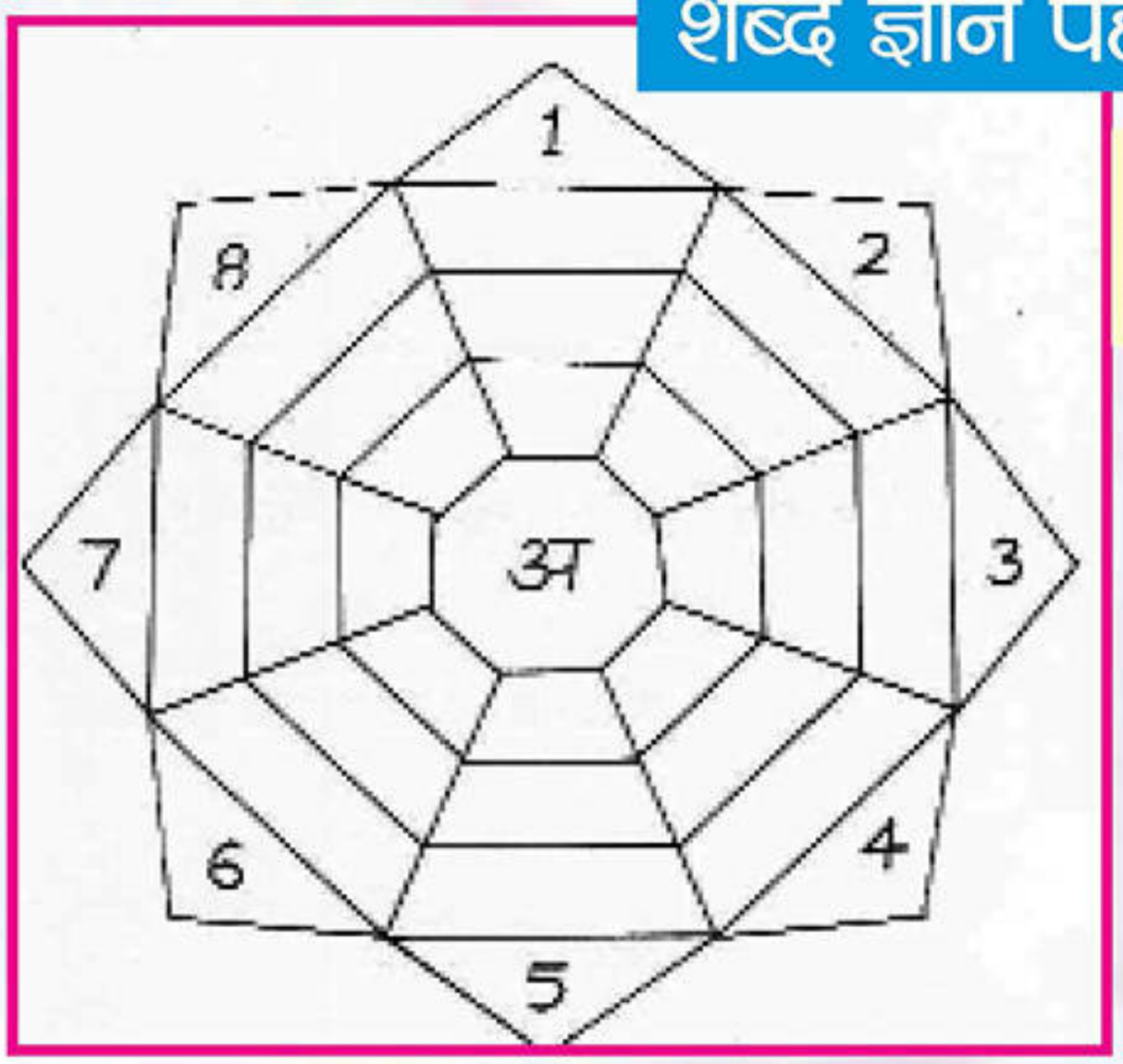


दिए गए 'अ' अक्षर से अंकों की ओर बढ़ते हुए इन शब्दों के समानांतर शब्द भरिये।

1. आश्चर्य 2. अज्ञात 3. अकस्मात 4. पुनरुक्ति 5. पद से च्युत 6. उड़ी हुई खबर 7. नाटक का खेल 8. एक प्रकार की बांसुरी।

उत्तर

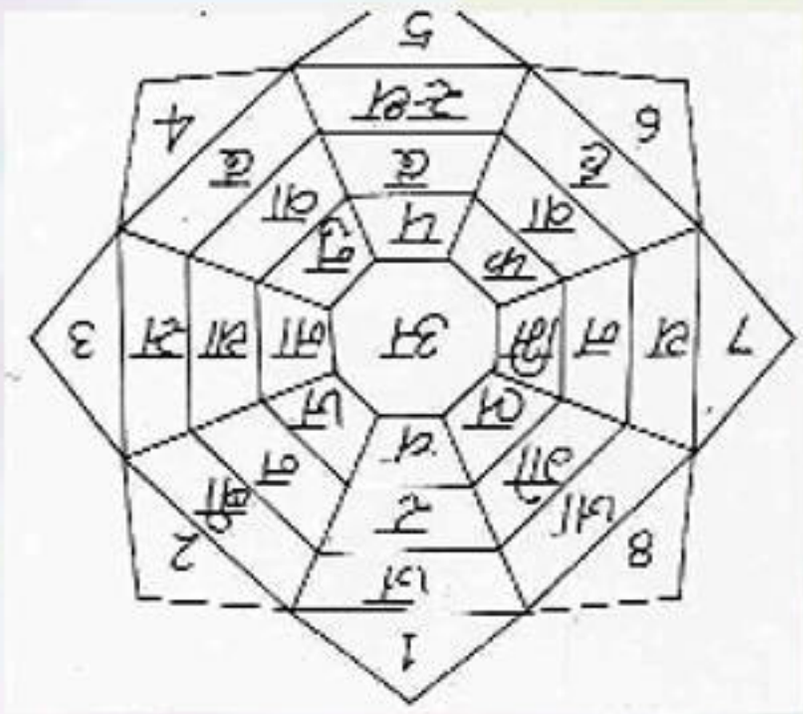

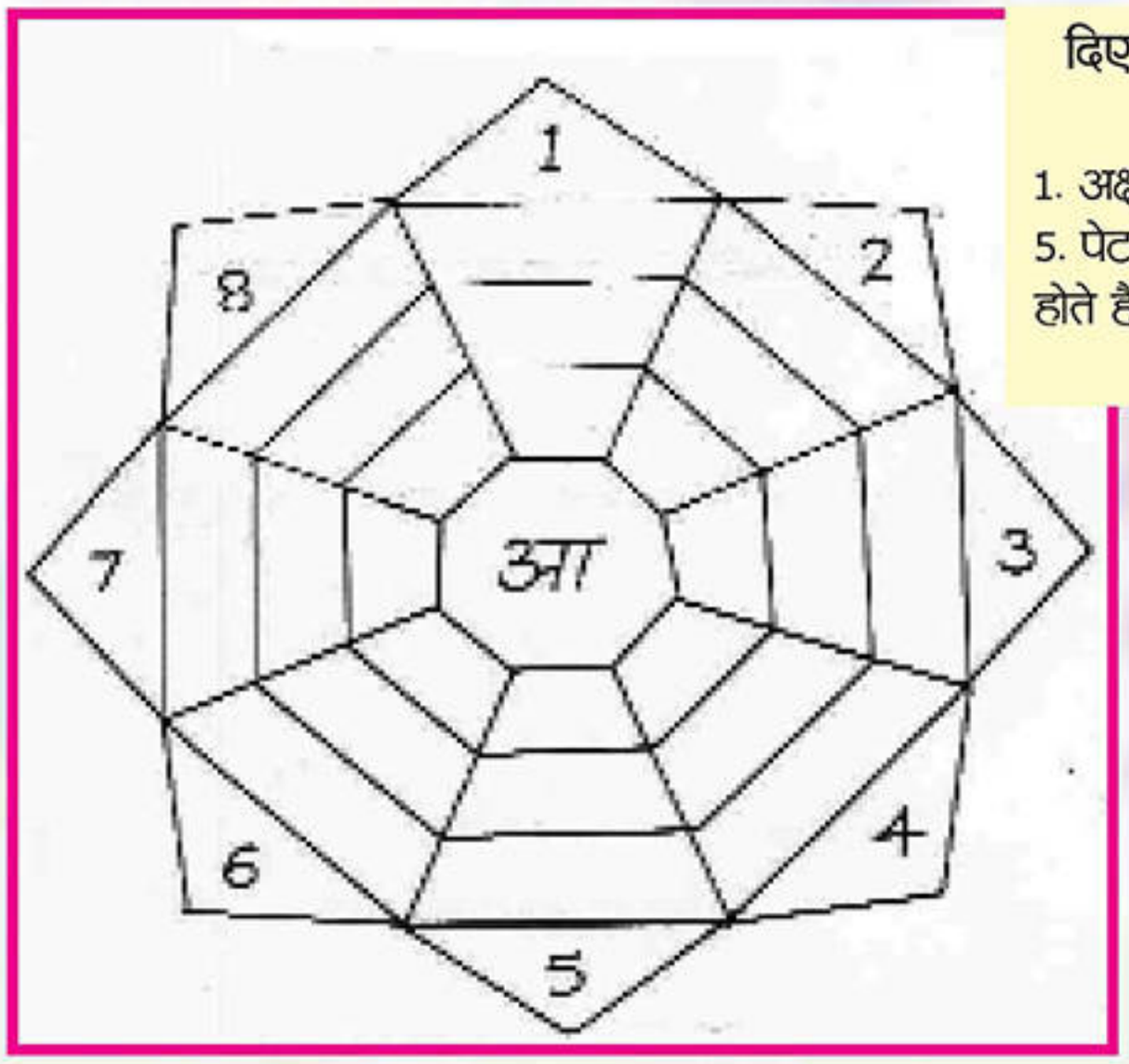


दिए गए 'आ' अक्षर से अंकों की ओर बढ़ते हुए इन शब्दों के समानांतर शब्द भरिये।

1. अक्षय तृतीया 2. घबराया हुआ 3. व्यवहार 4. अपनी-अपनी चिंता 5. पेट के अंदर की वह थैली, जिसमें भोजन किए हुए पदार्थ एकत्रित होते हैं और पचते हैं 6. निवेदन करने वाला 7. आकाश 8. छीनना।

उत्तर

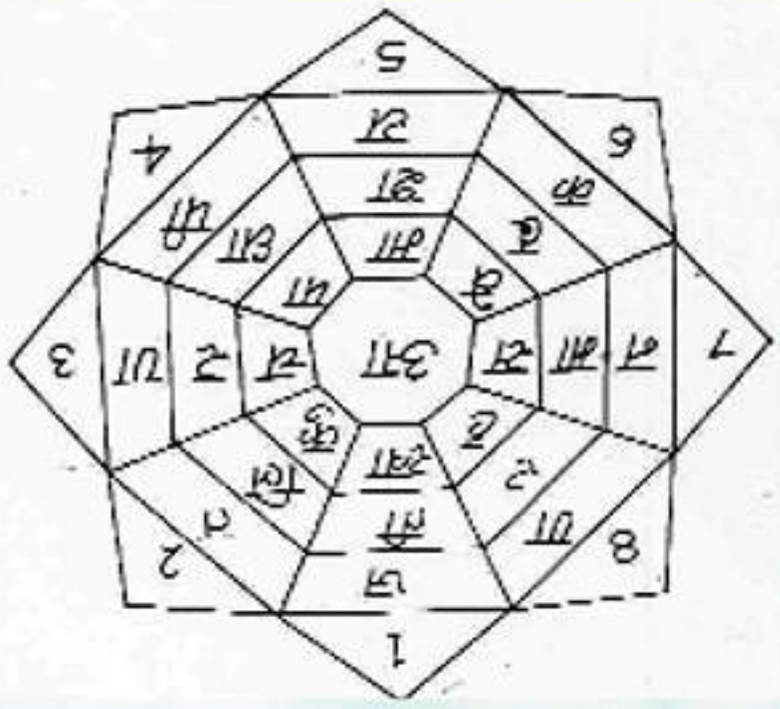

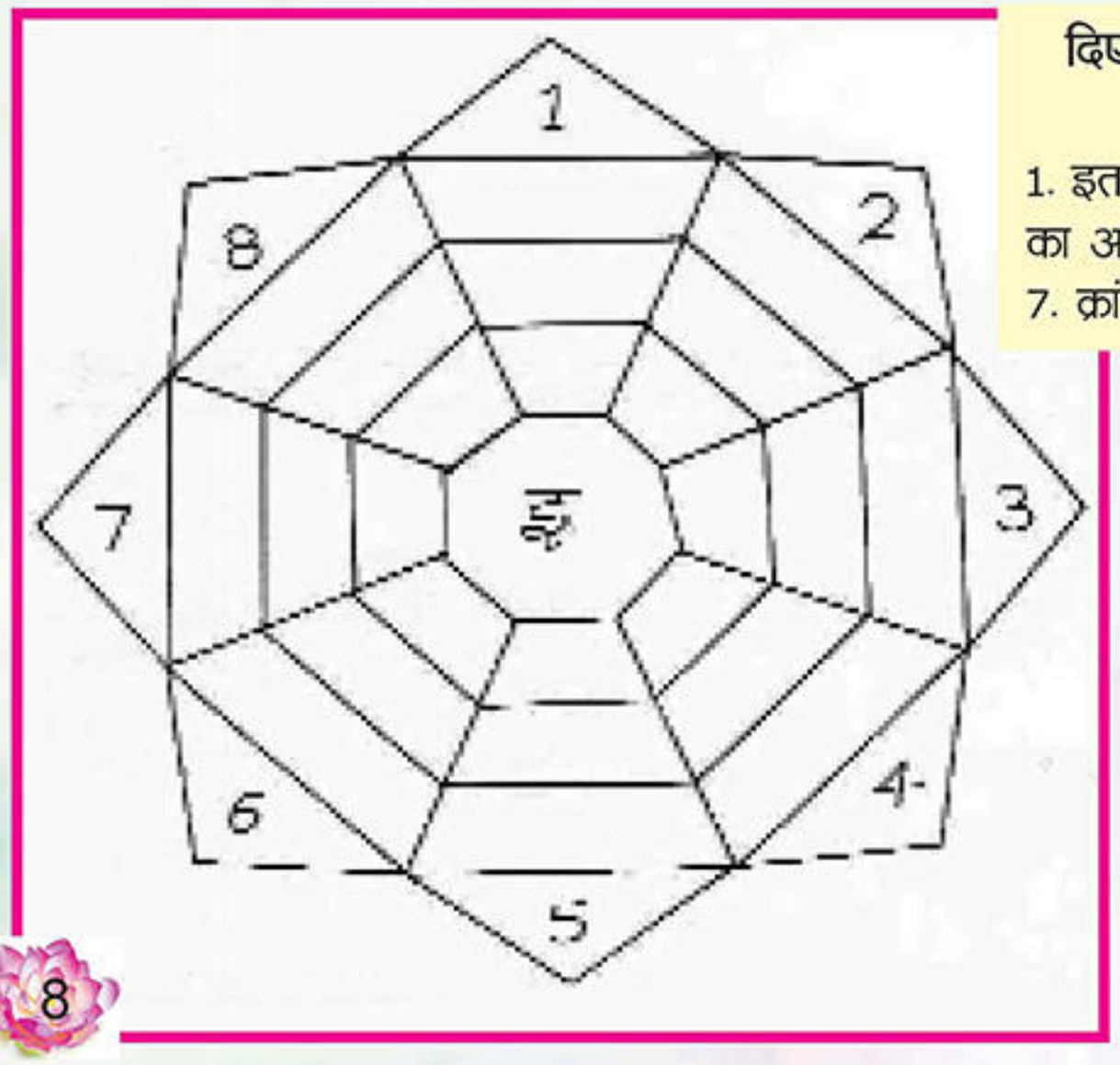


दिए गए 'इ' अक्षर से अंकों की ओर बढ़ते हुए इन शब्दों के समानांतर शब्द भरिये।

1. इतराना 2. एक प्रकार की जलेबी जैसी मिठाई 3. अपने मां-बाप का अकेला बेटा 4. एक तार वाला बाजा 5. मनमौजी 6. रविवार 7. क्रांति 8. तीरंदाज।

उत्तर

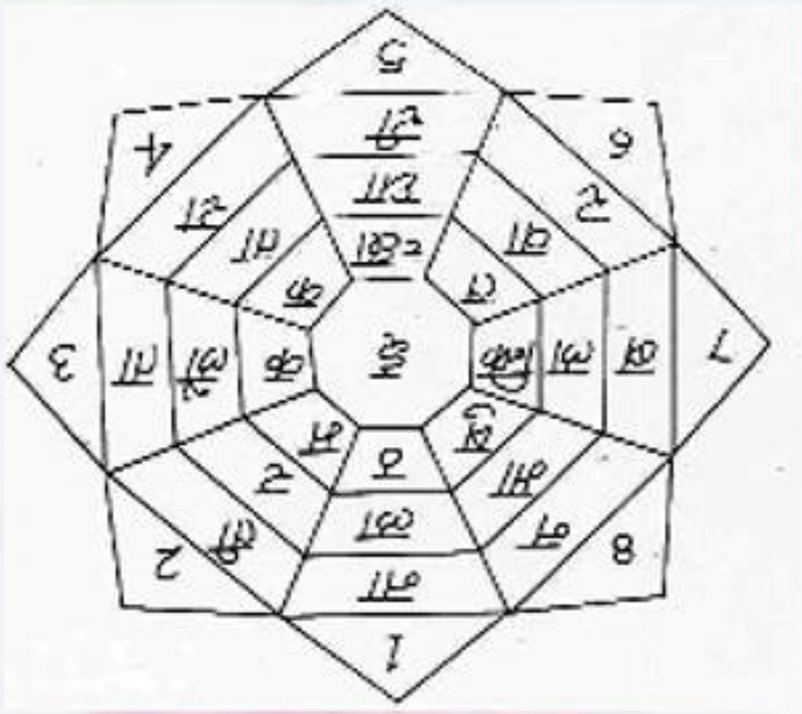

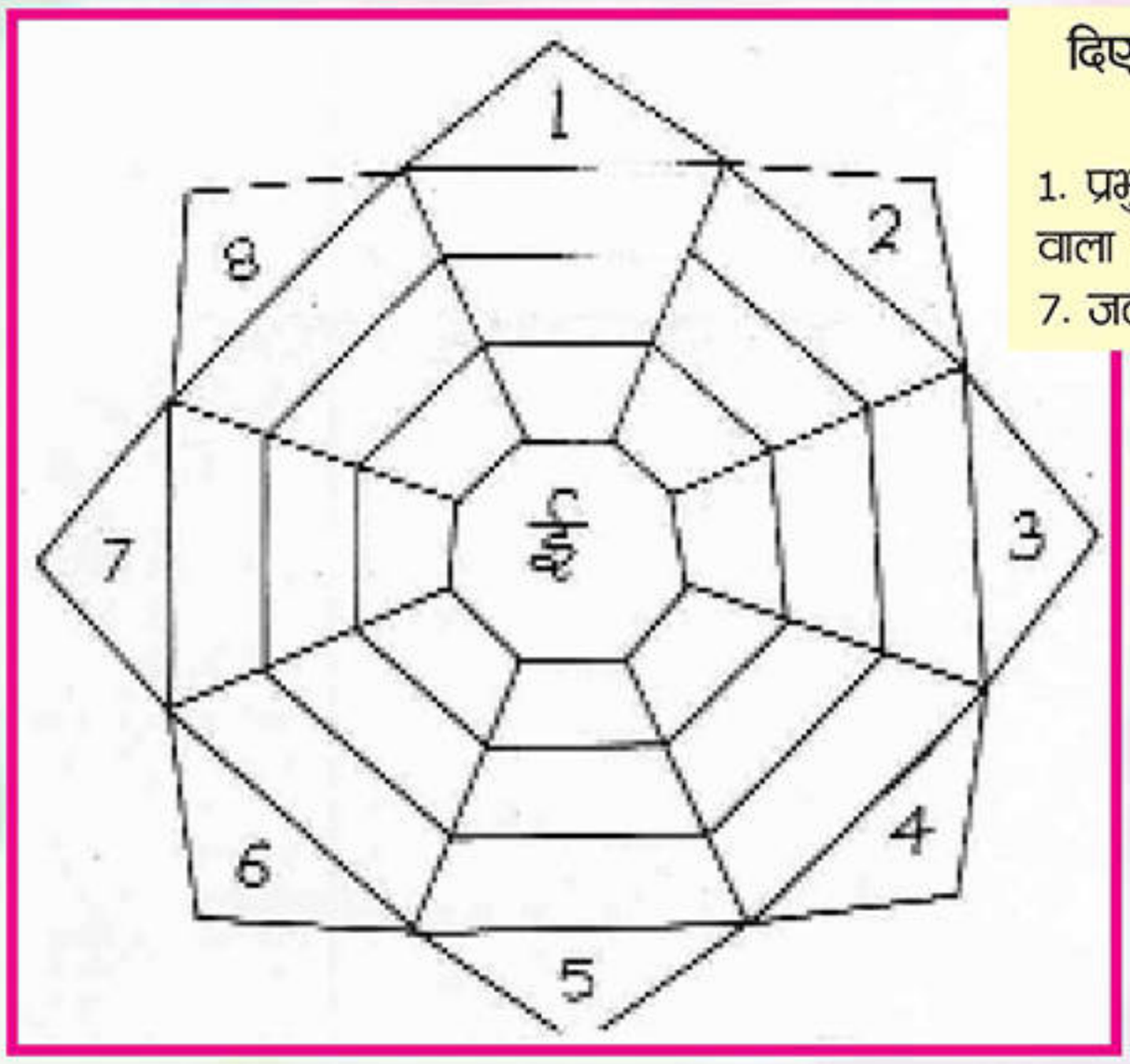


दिए गए 'ई' अक्षर से अंकों की ओर बढ़ते हुए इन शब्दों के समानांतर शब्द भरिये।

1. प्रभुता 2. ईद की नमाज पढ़ने का स्थान 3. बहुत खर्च करने वाला 4. लकड़बग्घा 5. ईश्वर संबंधी 6. कुर्बानी वाली ईद 7. जलने वाला 8. किंचित, अत्यल्प।

उत्तर

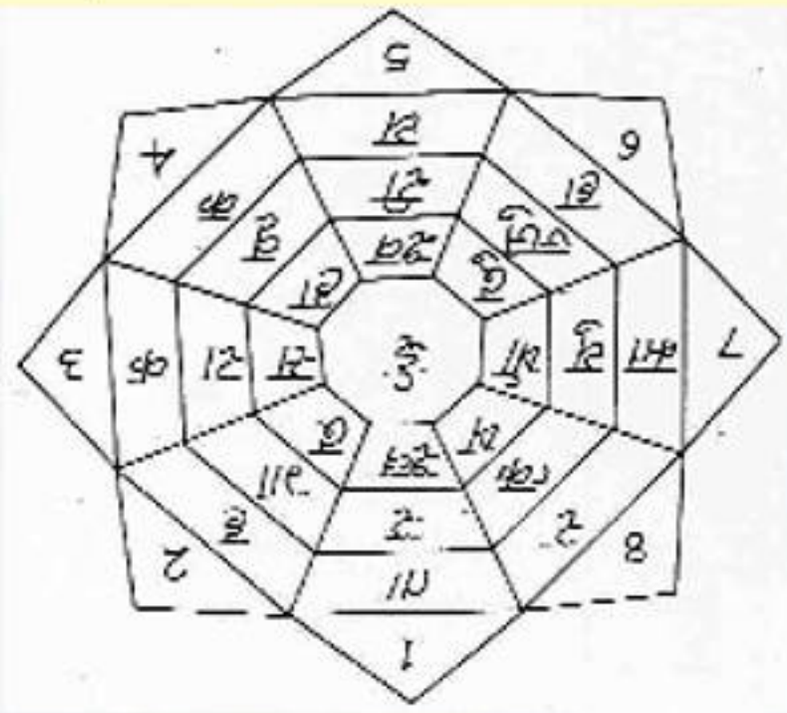

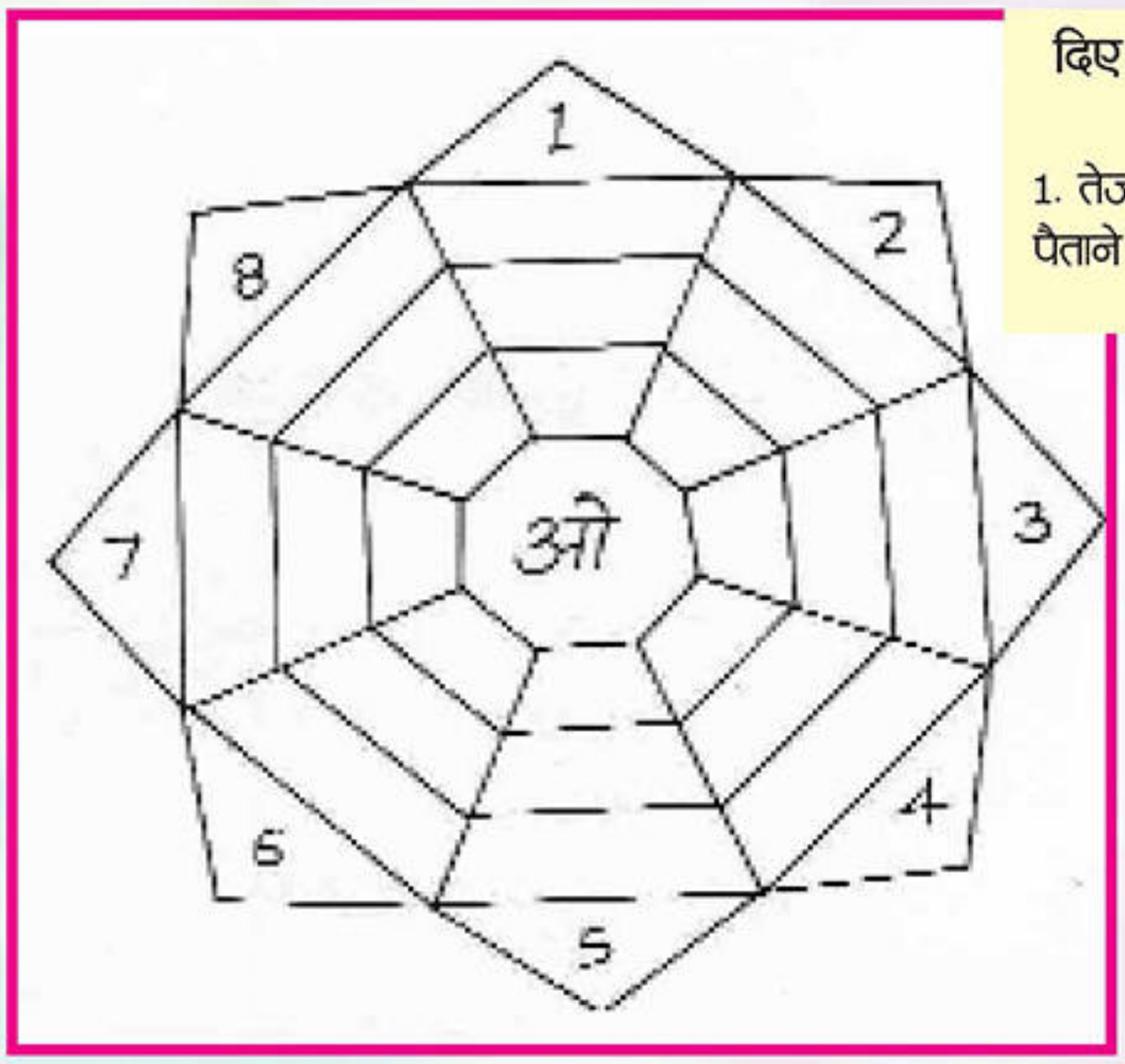


दिए गए 'ओ' अक्षर से अंकों की ओर बढ़ते हुए इन शब्दों के समानांतर शब्द भरिये।

1. तेज 2. बहुत मिला-जुला 3. विपरीत 4. विदीर्ण होना 5. खाट में पैताने की रस्सी 6. प्रारंभ 7. लटकना 8. लेटना।

उत्तर

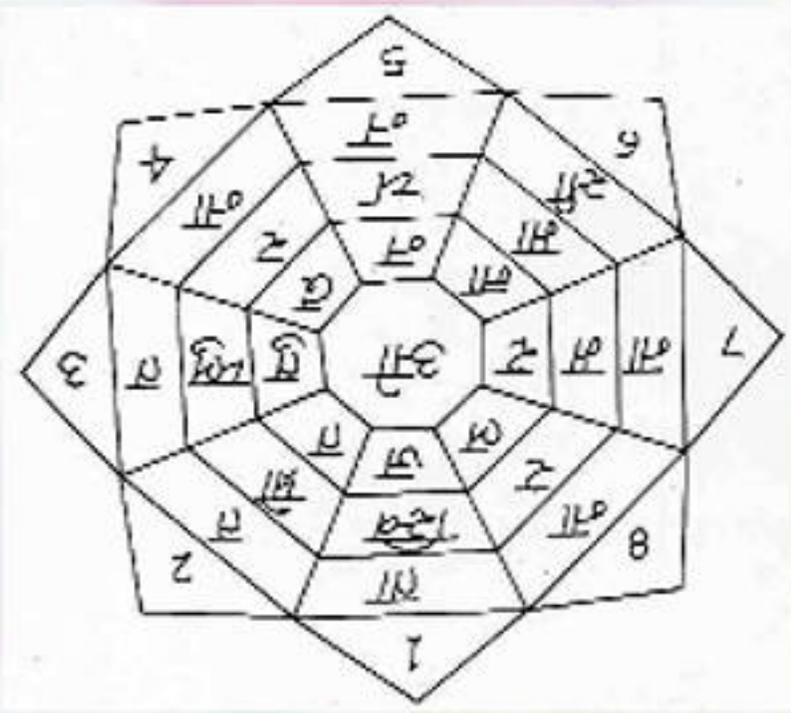

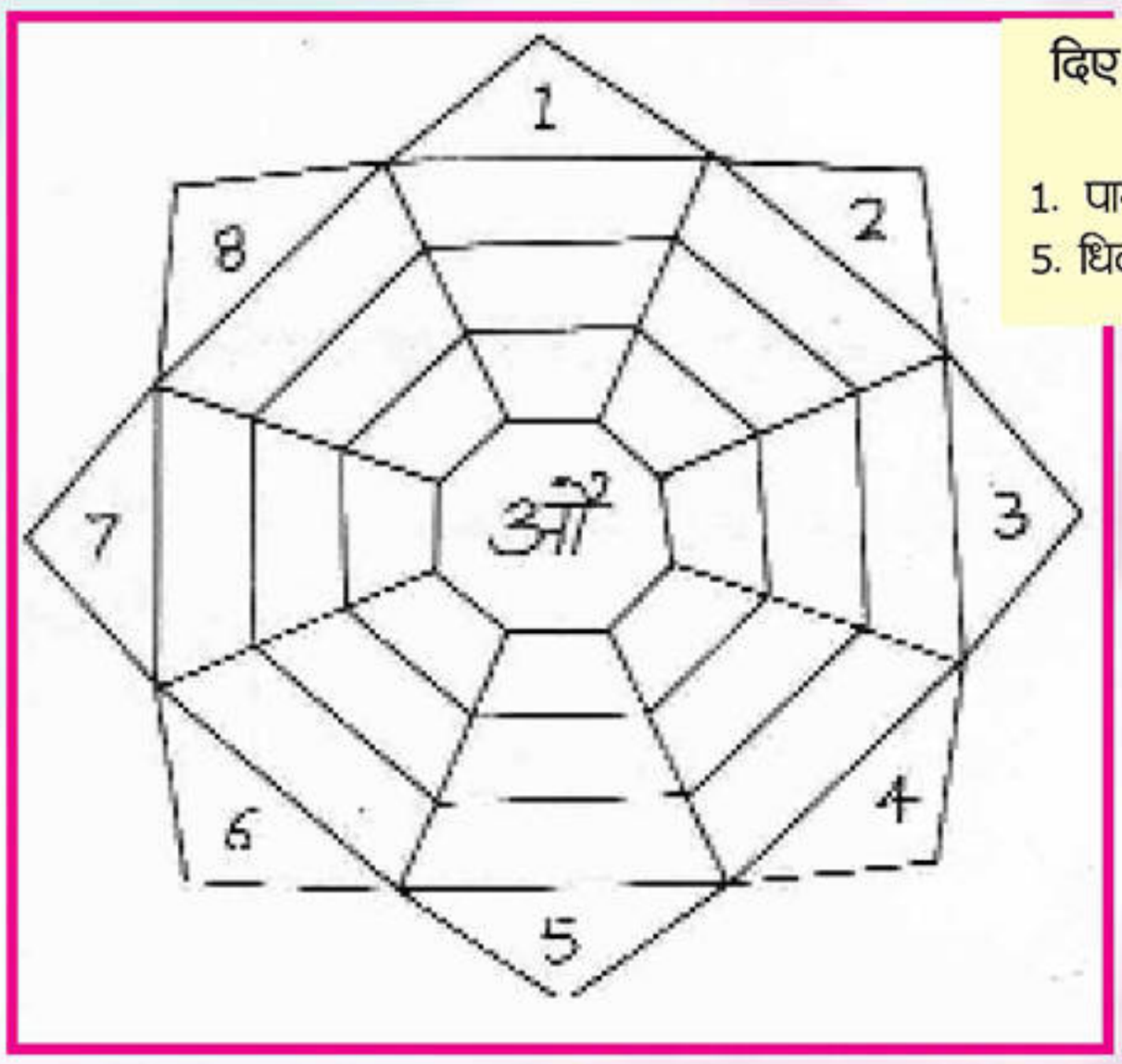


दिए गए 'औ' अक्षर से अंकों की ओर बढ़ते हुए इन शब्दों के समानांतर शब्द भरिये।

1. पार पाना 2. अघोरी 3. हल्का बर्ताव 4. बहुत खाने वाला 5. धिक्कारना 6. बुरे उपाय 7. अवतीर्ण 8. रसोईया।

उत्तर

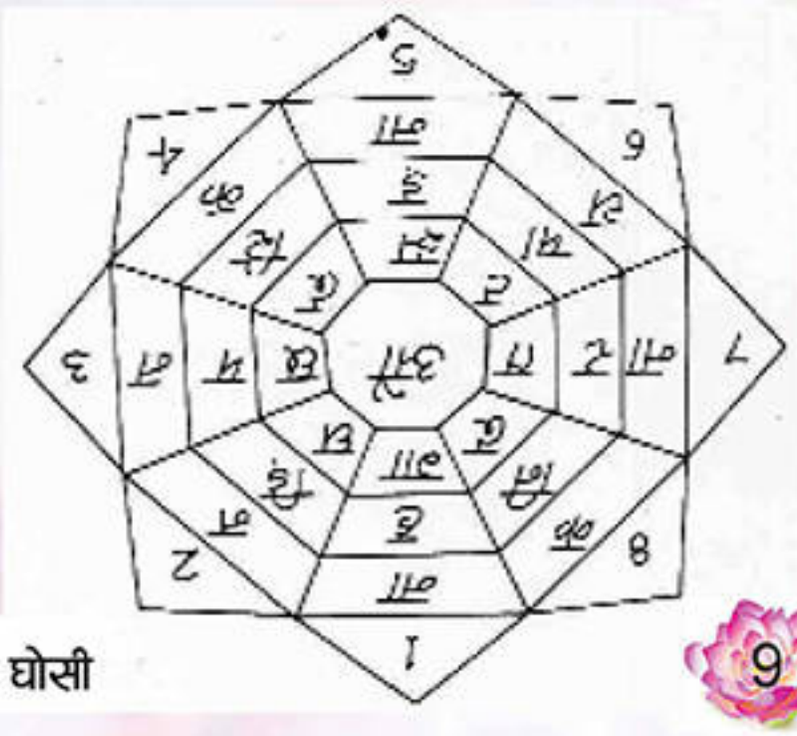

चांद मोहम्मद घोसी

# घमंडी शेर

**जंगली** कुत्तों का एक झुंड बहुत खतरनाक है। उनमें काला कुत्ता बहुत शक्तिशाली और अपने झुंड का नेता है। वे कुत्ते रोजाना शिकार के लिए निकलते। कोई शिकार दिखाई देता तो काला कुत्ता आगे बढ़कर उस पर झपटता और अन्य कुत्ते उसे घेर कर मार गिराते।

इस जंगल में कई शेर भी हैं। उनमें बड़ा शेर बहुत घमंडी है। वह अपने क्षेत्र में दूसरे शेरों को रहने नहीं देता है। सभी उसे घमंडी शेर कहते हैं। वह बातें भी बड़ी बनाता है। यही कि मैं अकेले ही बड़े से बड़े जानवर को मार सकता हूं। मुझे तुम लोगों की कोई जरूरत नहीं है।

अन्य सभी शेर उस घमंडी को छोड़कर चले गये। घमंडी शेर ने एक दिन अपनी शक्ति दिखाने के लिए हाथी पर हमला कर दिया। दोनों में घमासान लड़ाई हुई। हाथी के साथ शेर भी घायल हो गया। उन दोनों के गहरे घाव हो गये। लेकिन इस लड़ाई में कोई नहीं जीता। शेर अपनी मांद की ओर लौट आया। उसे कई दिनों तक पुराने शिकार का बासी मांस खाना पड़ा। घमंडी शेर अपने घावों को जीभ से चाट-चाट कर ठीक करता रहा। जंगल के जानवर यह नहीं समझें कि वह मर गया है, इसलिए घमंडी शेर जोर-जोर से दहाड़ते हुए कहता, 'मैं इस जंगल का राजा हूं। हाथी भी मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सका।' दूसरे जानवर यह सुनते और डर जाते। हिरनों को शेर से सबसे अधिक डर लगता है। लेकिन यहां भैंसे भी डरे रहते हैं। वे जानते हैं कि जैसे ही घमंडी शेर अच्छा हो जायेगा, वह उन पर भी हमला कर सकता है।

'अगर हम लोग एक हो जाएं, तब भी शेर को मार नहीं सकते हैं,' भैंसे आपस में सलाह कर रहे हैं।

'फिर क्या किया जाए?' दूसरे भैंसे ने पूछा।

'हम क्यों नहीं काले कुत्ते से विनती करें? वह भी बहुत खतरनाक है।' छोटे भैंसे ने सलाह दी।

'लेकिन इसमें भी खतरा है। वे कुत्ते हमें नोच कर खा जाएंगे।' डरते हुए एक भैंसा बोला।

'यह खतरा तो लेना पड़ेगा। अन्यथा घमंडी शेर एक-एक करके हम सभी को खा जायेगा,' भूरा भैंसा कहने लगा।

'हमें कुत्तों से इतना डर नहीं। वे अधिकतर छोटे जानवरों का शिकार करते हैं।' वे अवसर देखकर कुत्तों के झुंड के पास उस समय गये, जब वे पेट भरने के बाद आराम कर रहे थे। कई भैंसों को अपनी ओर आते देखकर काला कुत्ता संभल कर खड़ा हो गया। वह जानता है कि भैंसा शिकार नहीं करता है, फिर भी चौंकन्ना खड़ा है।

'क्या बात है? तुम लोग यहां क्या बात करने आये हो?' काले कुत्ते ने भूरे भैंसे से पूछा।

'तुम लोग बहुत बहादुर हो। किसी भी जानवर का शिकार कर सकते हो। हमें घमंडी शेर से बचाओ।' भूरे भैंसे ने विनती की। कुत्ते केवल चालाक ही नहीं बल्कि समझदार भी होते हैं। 'हमें क्या लाभ?' काले कुत्ते ने पूछा।

'तुम लोग जब शिकार पर जाओगे, हम तुम्हारे बच्चों की देखरेख और सुरक्षा कर सकते हैं।' भैंसे खूब सोच-समझ कर आये हैं।

यह बात सही है कि जब कुत्ते शिकार पर निकल जाते हैं। उनके बच्चे अकेले ही होते हैं। कई बार बच्चों को अकेला पाकर गीदड़ उन्हें खा गये। वे अगर बच्चों को साथ ले जायें, तो शिकार का पीछा करने और उसे मार गिराने में अड़चन होती है।

'ठीक है, हम घमंडी शेर का शिकार करेंगे, लेकिन समय आने पर।' काले कुत्ते ने भैंसों को टालते हुए कहा। कुत्ते कम चालाक नहीं, वे घमंडी शेर से भिड़ना नहीं चाहते।

गर्मी आई। इस बार इतनी अधिक गर्मी पड़ी कि जंगल में पानी नहीं बचा। पानी के गड्ढे और तालाब सूख गये। इस कारण बहुत जानवर इस जंगल से अन्य जंगलों की ओर निकल गये, जहां पानी हो। कुत्ते रोजाना शिकार के लिए निकलते, परन्तु कोई जानवर नहीं मिला। वे भूख से परेशान होने लगे।

इधर घमंडी शेर भी अपना जंगल छोड़कर नहीं गया। उसे भी कई दिनों से खाने के लिए कुछ नहीं मिला। आज भी किसी शिकार की खोज में निकला है। संयोग से कुत्ते भी शिकार ढूंढते उसी ओर आ गये। उन्हें घमंडी शेर की गंध आ गई। वे अभी कोई फैसला नहीं कर पाये थे कि घमंडी शेर सामने आ गया। कुत्तों ने भूख से परेशान होकर घमंडी शेर को घेर लिया। वे सदैव बड़े जानवर को तीनों ओर से घेर लेते हैं। लेकिन छोटे जानवरों जैसे खरगोश का अकेला कुत्ता ही शिकार करता है। तब उन्हें शिकार को घेर कर मारने की जरूरत नहीं होती। लेकिन बड़े जानवर, खासतौर पर शेर को घेर कर मारते हैं। वे जानते हैं कि अगर शेर के हाथ लग गये, तो वह उन्हें चीर-फाड़ कर खा जाएगा।

कहानी

घमंडी शेर ने कुत्तों को देखकर सोचा, 'इन्हें मारना कोई बड़ी बात नहीं।' उसके मुंह में पानी आने लगा। वह सोचकर बहुत खुश है कि ये कई कुत्ते हैं। उसके कई दिनों के खाने के काम आएंगे।

काला कुत्ता हमेशा की तरह शेर के सामने पहुंच गया। वह थोड़ी दूरी पर खड़ा हुआ, वरना शेर उसके टुकड़े-टुकड़े कर देता। अन्य सभी कुत्ते तीनों ओर से शेर को घेरे हुए हैं। चतुर कुत्ते जानते हैं कि शेर सामने खड़े काले कुत्ते पर झपटेगा। वे तभी शेर पर दायें, बांये और पीछे से हमला कर देंगे। फिर वही हुआ। जैसे ही घमंडी शेर सामने खड़े काले कुत्ते की ओर झपटा। उसके पीछे खड़े दो कुत्तों ने उसके दांत गड़ा दिये। घमंडी शेर ने दर्द और क्रोध से कहा, 'अभी तुम्हें मजा चखाता हूं।' इससे पहले कि शेर पीछे मुड़ता, उसके दोनों ओर घेरे हुए कई कुत्तों ने हमला कर दिया।

वे उसके पेट में दोनों ओर काटने लगे। थोड़ी देर में घमंडी शेर के शरीर पर घाव ही घाव हो गये और उनमें से खून बहने लगा। शेर के पीछे कई कुत्ते उसकी दोनों टांगों को नोच रहे हैं। वह जमीन पर गिर पड़ा। घमंडी शेर को अब भी विश्वास है कि वह कुत्तों को मार डालेगा। तभी वे कुत्ते उसके पेट और पीठ को फाड़ने लगे। असहाय शेर ने अपनी गर्दन डाल दी। देखते ही देखते काले कुत्ते ने शेर की गर्दन को फाड़ना शुरू कर दिया। घमंडी शेर की आंखें बंद हो चुकी थीं। जंगली कुत्ते अच्छी तरह जानते थे कि एकता में बड़ी ताकत होती है।

-इदरीस सिद्दीकी

एक आदमी को खंभे पर लगे पोस्टर पढ़ने का बहुत शौक था। एक दिन रात को अंधेरा होने के कारण आदमी से एक पोस्टर नहीं पढ़ा गया। आदमी स्पाइडरमैन की तरह खंभे पर चढ़ गया। पास जाकर उसने देखा, वहां लिखा था- खंभे पर नया पेंट किया है, इसको हाथ नहीं लगाना।

पवन को अपना गधा बेचना था, उसने अपने सारे दोस्तों को एसएमएस किया- 'अगर तुम्हें कभी किसी गधे की जरूरत हो तो मुझे याद कर लेना!'

मंगत की तपस्या से खुश होकर भगवान बोले- वर मांगो वत्स...
मंगत- प्रभु! जैसा आप सोच रहे हो मैं वैसा नही हूं। .... मुझे वधु चाहिए....।

चिंटू (पिता से)- पापा पति और पत्नी में क्या अंतर है?
चिंटू- पति परिवार का सिर है और पत्नी परिवार की गर्दन, जो सिर को किसी भी ओर घुमा सकती है।

डॉक्टर आधी रात को उठा और पत्नी से बोला- मैं हॉस्पिटल जा रहा हूं... फोन आया है, इमरजेंसी है।
पत्नी- किसी को तो अपनी मौत मरने दो।

एक लड़का अपनी गर्लफ्रेंड से मिलने गया। कुछ बातचीत के बाद लड़की चाय बनाने चली गई। लड़की का फोन सोफे पर था, लड़के ने सोचा देखता हूं फोन में मेरा नंबर किस नाम से सेव है....? लड़के ने अपने फोन से मिस कॉल दिया, लड़की के फोन पर उसका नाम लिखा आया- मुर्गा नं. 5...

दिनेश (सुरेश से)- तेरे कुत्ते ने मेरी किताब फाड़ दी!
सुरेश- मैं उसे सजा देता हूं।
सुरेश- मैंने सजा दे दी।
दिनेश- कैसे?
सुरेश- मैं उसकी कटोरी का दूध पी गया।

विदेश यात्रा से लौटकर आये महेश ने अपनी पत्नी से पूछा- क्या मैं विदेशी जैसा दिखता हूं?
पत्नी- नहीं तो...
महेश- ...तो फिर लंदन में एक औरत क्यों पूछ रही थी कि मैं विदेशी हूं या नहीं?

टीचर- बताओ बच्चो कि लड़की की शादी 18 साल बाद और लड़के की 21 साल बाद क्यों करना चाहिए?
एक लड़का- क्योंकि लड़का बड़ा और लड़की छोटी होनी चाहिए!
एक लड़की- नहीं बेवकूफ, क्योंकि लड़की को अक्ल 18 साल बाद और लड़के को 21 साल बाद आती है...!

ट्रैफिक पुलिसवाला (बुढ़िया से)- मैं कितनी देर से सीटी बजा रहा था, आप रुकी क्यों नही?
बुढ़िया- बेटा अब मेरी सीटी सुनकर रुकने की उम्र नहीं है।

वकील- गीता पर हाथ रखकर कहो कि...
मुजरिम- ये क्या, सीता पर हाथ लगाया तो कोर्ट में बुलाया, अब फिर गीता पर हाथ...!

फकीर- आपके पड़ोसी ने पेट भर कर खाना खिलाया है, आप भी कुछ खिलाओ।
छोटू- ये लो हाजमोला।

भिखारी- एक रुपये दे दो बाबा, रोटी खानी है...
राहगीर- एक हजार रुपए दूंगा, पहले ये बता कि इतनी महंगाई में एक रुपए की रोटी दे कौन रहा है...

एक कंजूस पति को करंट लगा...
पत्नी- आप ठीक तो हो ना?
कंजूस- मैं ठीक हूं... तू मीटर देख, यूनिट कितना बढ़ा है।

चिंटू (पिंटू से)- तू शीशे के सामने बैठकर क्यों पढ़ता है?
पिंटू- इसके बहुत फायदे हैं।
1. साथ में रीविजन हो जाता है।
2. खुद पर नजर भी रहती है।
3. पढ़ने के लिए कंपनी मिल जाती है।

ग्राहक (दुकानदार से)- इस शीशे की क्या गारंटी है?
दुकानदार- आप इसको 100वीं मंजिल से नीचे गिराओगे तो भी शीशा 99वी मंजिल तक नहीं टूटेगा।
ग्राहक- वाह बहुत बढ़िया, पैक कर दो।

टीचर- बेटा चोरी करना बुरी बात है, चोरी का फल हमेशा कड़वा होता है।
चिंटू- लेकिन मैंने जो सेब चोरी करके खाया था वो तो मीठा था।

सीख सुहानी

# सुख-दुख का चक्र

**एक** बार तथागत बुद्ध श्रावस्ती में विहार कर रहे थे। विशाखा नामक एक स्त्री नियमित उनके प्रवचन सुनने आया करती थी। लेकिन एक दिन वह आई तो उसके केश और वस्त्र भीगे हुए थे। वह बड़ी शोकाकुल दिखाई दे रही थी। तथागत ने उसकी ओर देखा और बोले, 'विशाखा, यह कैसी दशा कर ली है तुमने अपनी? तुम्हें इस दशा में देखकर मुझे आश्चर्य हो रहा है।' विशाखा ने धीमे स्वर में उत्तर दिया, 'मेरे पौत्र का निधन हो गया है, भंते! उसी के प्रति शोकाचरण है यह।' इस पर तथागत ने उससे प्रश्न किया, 'क्या तुम बता सकती हो कि श्रावस्ती में कितने नर-नारियों की रोज मृत्यु होती होगी?'

विशाखा ने कुछ देर विचार करने के बाद उत्तर दिया, 'निश्चित संख्या तो नहीं बता सकती, इस महानगरी में रोज जाने कितने ही मनुष्य पंचतत्त्व में विलीन होते होंगे।' फिर तथागत ने पूछा, 'श्रावस्ती में जितने नर-नारी हैं, उनके प्रति तुम्हें आत्मीय भाव जाग्रत होता है?' उसने जवाब दिया, 'हां, भंते!' तथागत ने पूछा, 'और उनके पुत्र-पौत्रों के प्रति?' विशाखा ने कहा, 'हां, उनके लिए भी मेरा पुत्रवत व्यवहार रहता है।' तथागत ने कहा, 'यानी रोज एक न एक बालक तो पंचतत्त्व में विलीन होता ही होगा। तब बताओ विशाखा, प्रतिदिन क्या तुम इसी दशा में रहती हो?' विशाखा ने कुछ सोचकर उत्तर दिया, 'नहीं, भंते!' अब तथागत ने कहा, 'तब जान लो कि जिसके सौ सगे-संबंधी होंगे, उसे सौ दुःख होंगे और जिसका केवल एक संबंधी होगा, उसे एक ही दुःख होगा। लेकिन जो इस संसार में अकेला है और जिसका कोई सगा-संबंधी नहीं, उसे कोई दुःख नहीं होगा।

संसार में आने के बाद यह तो संभव नहीं है कि हमारा कोई सगा-संबंधी न हो, लेकिन यदि हम स्वयं को उनके प्रति ममत्व-भाव से मुक्त कर लें। तब अवश्य हम सुखी रह सकते हैं। जिस तरह दुर्जन से भेंट शोक का विषय है, उसी प्रकार प्रियजन से वियोग भी दुःख का प्रयोजन है। यदि हम हमेशा दुःख-शोक से परे रहना चाहते हैं, तो हमें राग-द्वेष से भी मुक्ति पाना होगी।' तथागत की बात सुनकर विशाखा का शोक दूर हो गया और उसमें क्षणभंगुर जीवन के प्रति बोध जाग्रत हो गया।

*सीख : मृत्यु अवश्यंभावी है। हमें सुख-दुख में सम रहना चाहिए।*

# देश की उन्नति

**राजा** राममोहन राय का मानना था कि अगर भारतीय समाज से कुप्रथाओं और अंधविश्वास को मिटाना है और दुनिया के साथ कदम से कदम मिलाकर चलना है, तो भारतीयों को अंग्रेजी, साइंस और टेक्नॉलोजी की शिक्षा भी हासिल करनी होगी। उनका सपना था कि कोलकाता (तब कलकत्ता) में एक ऐसा कॉलेज खोला जाए, जिसमें देश की नई पीढ़ी आधुनिक ज्ञान प्राप्त करे।

इसके लिए शहर की जानी-मानी हस्तियों की एक बैठक बुलाई गई। बैठक में राममोहन राय के काफी सारे समर्थक एवं कुछ विरोधी भी उपस्थित थे। कॉलेज खोलने के लिए पैसा इकट्ठा करने और प्रबंध समिति बनाने पर चर्चा शुरू हुई। किसी ने राममोहन राय को प्रबंध समिति का अध्यक्ष बनाने का प्रस्ताव रख दिया। इस प्रस्ताव पर उनके विरोधी उखड़ गए। उनका कहना था कि राममोहन राय को प्रबंध समिति का सदस्य बनाया गया या उनसे एक पैसा भी इस कॉलेज के लिए लिया गया, तो वे कॉलेज खुलने ही नहीं देंगे। राममोहन राय चाहते तो इस प्रबंध समिति में आसानी से आ सकते थे और कॉलेज खुलवाने का सारा श्रेय ले सकते थे। पर उन्होंने इससे हटने का फैसला किया। एक दिन उनके एक मित्र ने इसका कारण पूछा तो वह बोले, 'यह महत्त्वपूर्ण नहीं है कि मैं प्रबंध समिति में हूं या नहीं। महत्त्वपूर्ण यह है कि ऐसा कॉलेज खुल रहा है, जिसमें शिक्षा प्राप्त करके, नए विचारों के साथ युवक देश की सेवा करेंगे। मेरे लिए मेरे अहं से बढ़कर देश की उन्नति है।' राजा राममोहन राय का सपना पूरा हुआ और कॉलेज खुला, जो बाद में प्रेसीडेंसी कॉलेज ऑफ कलकत्ता के नाम से प्रसिद्ध हुआ। आगे चलकर नेताजी सुभाष चंद्र बोस भी कुछ समय तक इसके प्रिंसिपल रहे।

*सीख : हमें मतभेद भूलकर देश की उन्नति में अपनी शक्ति लगानी चाहिए।*

शंटी
कथा एवं चित्रांकन
विकास मिश्र
1
एक बार शंटी को एक साहूकार के पास नौकरी मिली।
बेटा शंटी, मैं तुम पर काफी भरोसा करता हूं। मैं दो दिन के लिए बाहर जा रहा हूं....
साहूकार ने शंटी पर विश्वास करके शंटी को एक दीवार बनवाने का काम सौंपा।
शंटी बेटा यह रहा दीवार का विशेष नक्शा ...
जी सर, आप चिंता मत कीजिए दीवार बढ़िया बनेगी। हा... हा...
अगले दिन शंटी ने मजदूरों से काम शुरू करवा दिया।
3
हे भगवान यह मार डालेगा...
मैं जैसा कहूं, वैसा ही करो...
4
जल्दी-जल्दी काम करो, आज दीवार पूरी होनी चाहिए।
....और शाम को दीवार पूरी तरह बन गई।
5
साहेब आपके कहे अनुसार दीवार पूरी तरह बन गई है, हमार पैसा...
बस-बस यह लो अपना पैसा, और जाओ। हा... हा...
दो दिन बाद साहूकार वापस आए तब...
6
ओ... बेटा शंटी मैं आ गया, और तुम्हारे लिए ढेर सारा सामान भी लाया हूं।
7
सर जी, मैंने आपके कहे अनुसार दीवार एक दिन में पूरी करवा दी है, चलिए।
चलो बेटा।
8
अरे शंटी, दीवार उल्टी क्यों है, दरवाजा ऊपर और हाय...
सर जी, आप ने नक्शा ही उल्टा दिया था तो मैं क्या करूं...।
(समाप्त)

# उज्जैन

प्राचीन शहर उज्जैन क्षिप्रा नदी के तट पर स्थित है। उज्जैन मंदिरों की नगरी है। यहां हर बारह वर्ष में कुंभ मेला लगता है। भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों में एक महाकालेश्वर (महाकाल) मंदिर इस नगरी में स्थित है। उज्जैन का प्राचीन नाम अवंतिका, उज्जयनी, अमरावती, सुवर्णगंगा है। यह शहर भारत के प्रमुख तीर्थस्थल के रूप में जाना जाता है। पवित्र क्षिप्रा नदी के दाहिने तट पर स्थित इस नगर को भारत की सप्तपुरियों में से एक माना जाता है। तत्कालीन समय में उज्जैन विक्रमादित्य के राज्य की राजधानी थी। इसे कालिदास की नगरी के नाम से भी जाना जाता है। इस बार उज्जैन का आध्यात्मिक सैरसपाटा।

सैर सपाटा

## महाकालेश्वर मंदिर

उज्जैन के महाकालेश्वर मंदिर भारत के प्रमुख बारह ज्योतिर्लिंगों में एक है। महाकालेश्वर मंदिर का माहात्म्य विभिन्न पुराणों में विस्तृत रूप से वर्णित है।

महाकालेश्वर की प्रतिमा दक्षिणमुखी है। तांत्रिक परंपरा में प्रसिद्ध दक्षिणमुखी पूजा का महत्त्व बारह ज्योतिर्लिंगों में केवल महाकालेश्वर को ही प्राप्त है। महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग तीन खंडों महाकालेश्वर, ओंकारेश्वर और श्री नागचंद्रेश्वर में विभाजित है। महाकालेश्वर मंदिर के मुख्य आकर्षणों में भगवान महाकाल की भस्म आरती, नागचंद्रेश्वर मंदिर, भगवान महाकाल की शाही सवारी आदि हैं। कहा जाता है कि प्रतिदिन सुबह होने वाली महाकाल की भस्म आरती नहीं देखी तो आपका महाकालेश्वर दर्शन अधूरा है।

## श्री बड़े गणेश मंदिर

श्री महाकालेश्वर मंदिर के निकट हरसिद्धि मार्ग पर बड़े गणेश की भव्य मूर्ति प्रतिष्ठित है। मंदिर परिसर में सप्तधातु की पंचमुखी हनुमान प्रतिमा के साथ-साथ नवग्रह मंदिर और कृष्ण यशोदा आदि की प्रतिमाएं भी विराजित हैं।

## मंगलनाथ मंदिर

पुराणों के अनुसार उज्जैन नगरी को मंगल की जननी कहा जाता है। लोग अपने अनिष्ट ग्रहों की शांति के लिए यहां पूजा-पाठ करवाने आते हैं। कहा जाता है कि यह मंदिर सदियों पुराना है। हर मंगलवार के दिन इस मंदिर में श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है।

## हरसिद्धि मंदिर

उज्जैन नगर के प्राचीन और महत्त्वपूर्ण धार्मिक स्थलों में हरसिद्धि देवी का मंदिर प्रमुख है। इस मंदिर में सम्राट विक्रमादित्य द्वारा हरसिद्धि देवी की पूजा की जाती थी।

## क्षिप्रा घाट

उज्जैन नगर के धार्मिक स्वरूप में क्षिप्रा नदी के घाटों का प्रमुख स्थान है। घाटों पर विभिन्न देवी-देवताओं के नए-पुराने मंदिर भी है। क्षिप्रा के इन घाटों का गौरव सिंहस्थ के दौरान देखते ही बनता है, जब लाखों-करोड़ों श्रद्धालु यहां स्नान करते हैं।

## गोपाल मंदिर

गोपाल मंदिर उज्जैन का दूसरा सबसे बड़ा मंदिर है। यह मंदिर नगर के मध्य व्यस्ततम क्षेत्र में स्थित है। मंदिर में भगवान कृष्ण प्रतिमा है। मंदिर के चांदी के द्वार यहां का एक अन्य आकर्षण हैं।

## गढ़कालिका देवी

गढ़कालिका देवी का मंदिर कालिका देवी को समर्पित है। सातवीं शताब्दी के दौरान महाराजा हर्षवर्धन द्वारा इस मंदिर का पुनर्निर्माण किया गया था। माना जाता है कि इस मंदिर की स्थापना महाभारत काल में हुई थी, लेकिन मूर्ति सत्य युग की है। मां कालिका के इस मंदिर में दर्शन के लिए हजारों भक्तों की भीड़ एकत्र होती है। देवी कालिका तांत्रिकों की देवी मानी जाती हैं। इस मंदिर की भव्यता को देखते हुए ग्वालियर के महाराजा ने भी इसका पुनर्निर्माण कराया था। इस मंदिर के पास से ही क्षिप्रा नदी बहती है।

## भर्तृहरि गुफा

क्षिप्रा तट के ऊपरी भाग में भर्तृहरि की गुफा है। एक संकरे रास्ते से गुफा के अंदर जाना पड़ता है। इस गुफा के बारे में कहा जाता है कि यहीं पर भर्तृहरि रहा करते थे और तपस्या करते थे। भर्तृहरि महान विद्वान और कवि थे।

## काल भैरव

काल भैरव मंदिर क्षिप्रा नदी के तट पर स्थित है जो अत्यन्त प्राचीन एवं चमत्कारिक माना जाता है। यह मंदिर शिव जी के उपासकों के कापालिक सम्प्रदाय से जुड़ा हुआ है। आज भी मंदिर के अंदर काल भैरव की एक विशाल प्रतिमा है। प्राचीनकाल में इस मंदिर का निर्माण राजा भद्रसेन ने कराया था।

## सिंहस्थ

सिंहस्थ उज्जैन का महान स्नान पर्व है। बारह वर्षों के अंतराल से यह पर्व तब मनाया जाता है। जब बृहस्पति सिंह राशि पर स्थित रहता है। पवित्र शिप्रा नदी में पुण्य स्नान की विधियां चैत्र मास की पूर्णिमा से प्रारंभ होती हैं और पूरे मास में वैशाख पूर्णिमा के अंतिम स्नान तक भिन्न-भिन्न तिथियों में सम्पन्न होती है।

उज्जैन के महापर्व के लिए पारंपरिक रूप से दस योग महत्त्वपूर्ण माने गए हैं। देशभर में चार स्थानों पर कुंभ का आयोजन किया जाता है। प्रयाग, नासिक, हरिद्वार और उज्जैन में लगने वाले कुंभ मेलों के उज्जैन में आयोजित आस्था के इस पर्व को सिंहस्थ के नाम से पुकारा जाता है।

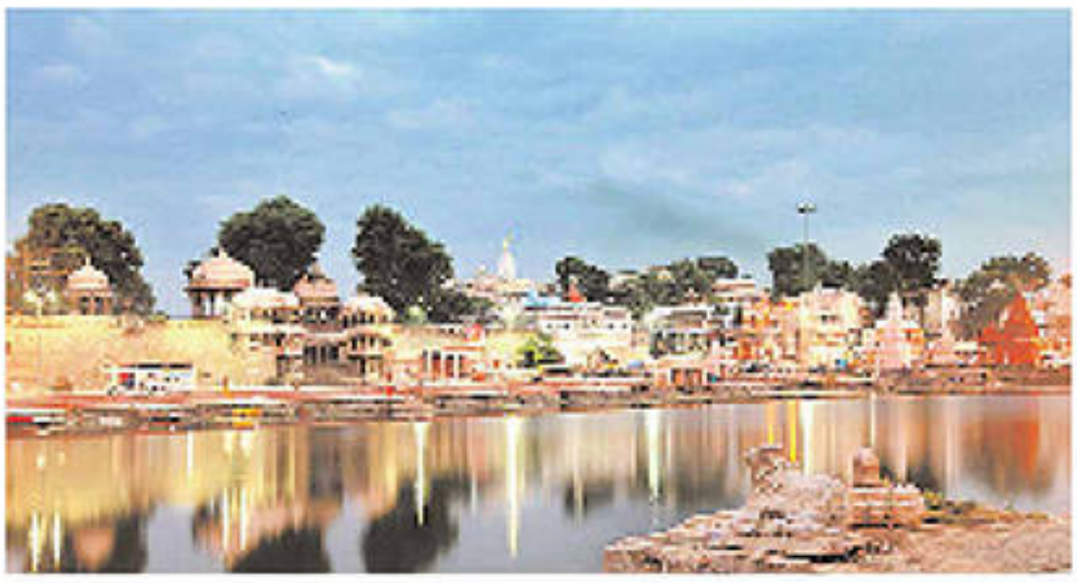

# फॉर्म हाउस नहीं स्नेक हाउस

**चीन** के चॉन्गकिंग प्रांत में रहने वाले दो भाई यांग जुनी और यांग जुनलुन मिलकर के 3.3 एकड़ में फैले फार्म हाउस में सिर्फ सांपों का राज है। आपको जानकर हैरानी होगी कि उनके इस फार्म हाउस में 30 हजार कोबरा रहते हैं और 20 हजार अति विषैले सांप। इनको संभालना दो लोगों के लिए मुश्किल है, इसलिए इनकी केयर के लिए दोनों भाइयों ने 20 लोगों को नौकरी दे रखी है।

ये किसी भी व्यक्ति को नौकरी पर रखने से पहले उन्हें 3 महीने की कड़ी ट्रेनिंग देते हैं। यांग कहते हैं कि उन्हें कई बार सांपों ने काटा भी है। लेकिन, सांप को पालने का शौक और उनसे मिलने वाला फायदा उन्हें पसंद है। यांग बताते हैं कि जब उन्हें सांप काटते हैं तो वो खुद की बनाई हुई आयुर्वेदिक दवाइयां लगाते हैं और ढेर सारे पानी से उसे धो देते हैं।

दोनों भाईयों का कहना है कि जो 20 लोग उन्होंने रखे हैं, वो 50 हजार सांपों के खाने के इंतजाम के साथ ही अन्य जानवरों को मारकर सांपों के लिए खाना भी लाते हैं। वो अंडे को भी बड़ा करते हैं, ताकि उनकी देखभाल की जा सके। यांग भाई छह सालों से ये फार्म हाउस चला रहे हैं। वे इन सांपों को बड़ा कर बाहर बेचते हैं। साथ ही उनकी खाल बेचने से भी उन्हें अच्छी खासी रकम मिलती है।

# कुत्तों के लिए लिफ्ट

**इंसानों** के लिए लिफ्ट तो हर कोई लगवाता है, लेकिन ब्रिटेन में कुत्तों के भारी वजन के कारण अब उनके लिए लिफ्ट बनाई गई है। क्योंकि कुत्तों को मोटापा और चर्बी की समस्या से गुजरना पड़ रहा है। जाहिर है कि अतिरिक्त वजन के कारण ये पालतू कुत्ते घरों में पहली या दूसरी मंजिल तक चढ़-उतर नहीं पाते। इस लिफ्ट में पैर रखने की काफी चौड़ी जगह बनाई गई है। ताकि कुत्ते अपने चारों पैर आसानी से रख सकें। इस लिफ्ट की लागत लगभग 4 लाख रुपए है।

# इस लंबाई के क्या कहने!

**तुर्की** की सात फीट लंबी 17 साल की लड़की रूमेसा गेल्गी का नाम सबसे लंबी लड़की के रूप में गिनीज बुक में दर्ज किया गया है। रूमेसा ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ती है। एक बीमारी (वीवर सिंड्रोम) की वजह से उसका शारीरिक विकास उम्र के लिहाज से बहुत ज्यादा हो गया है। लंबाई की वजह से रूमेसा चल-फिर नहीं पाती।

उसके लिये खास व्हीलचेयर बनाई गयी है। उसके जूते भी अमेरिका में विशेष रूप से बनाये गये हैं। तुर्की के सफरान बोलू शहर निवासी रूमेसा गेल्गी अपने माता-पिता और बड़े भाई-बहनों के साथ रहती है।

हालांकि रूमेसा को अपनी लंबाई की वजह से कई परेशानियां झेलनी पड़ती हैं, लेकिन इसके बावजूद वह इसे एंजॉय करती हैं। रूमेसा ने बताया कि लोग पहले उसका मजाक उड़ाते थे, लेकिन उसने लंबे होने की खूबियों पर ध्यान दिया। उसे सबसे अलग दिखना पसंद है और वह ऊंची जगह पर रखी चीजों को भी आसानी से निकाल लेती है।

# खोज-बीन

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दि | ली | प | र्वे | ग | स | र | क | र | मं |
| नु | अ | बि | री | र | वि | शा | स्त्री | वि | सू |
| रा | कृ | म | श | व | बे | थ | ध | ज | र |
| सु | प्र | के | दे | न | ना | न | र | य | अ |
| णा | नी | ल | भ | श्व | सिं | क | ग | ह | ली |
| नू | पि | ल | वि | जि | डे | ह | ट | जा | खा |
| क | र | प्पा | गा | वा | टे | क | बे | रे | न |
| फ | ड | ओ | त | ब | रे | श्व | र | दी | प |
| गु | बु | जि | र | दी | स्क | धी | ह | र | टौ |
| त | अ | ला | ला | अ | म | र | ना | थ | दी |

## कैसे हल करें

इस ग्रिड में भारतीय टेस्ट क्रिकेट टीम के कप्तान रह चुके 10 खिलाड़ियों के नाम दिए गए हैं। नाम बाएं से दाएं, ऊपर से नीचे की ओर व तिरछे हो सकते हैं।

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| त | म | रे | रा | क | प | से | न | भी | ज |
| आ | अ | जा | री | ड | ल | रा | बां | प | ल |
| ना | ऊ | मो | हू | ली | बे | नू | श | ब | ती |
| सा | प्र | टी | र | म | वु | ज | व | र | हा |
| ग | रे | चि | भ | कं | घा | ल | ग | अं | मे |
| र | प | र्य | ल्का | जि | ट | पु | र | जा | न |
| स | र | र | र | बे | टे | ली | तू | ड | मे |
| बे | ना | छा | ला | म | बे | क | र | की | चो |
| लो | भी | म | ता | ल | रू | ट | ह | र | ची |
| त | अ | म | ह | ल | बे | नू | मू | री | द |

## कैसे हल करें

इस ग्रिड में देश की 10 खास झीलों के नाम दिए गए हैं। नाम बाएं से दाएं, ऊपर से नीचे की ओर व तिरछे हो सकते हैं।

## हल

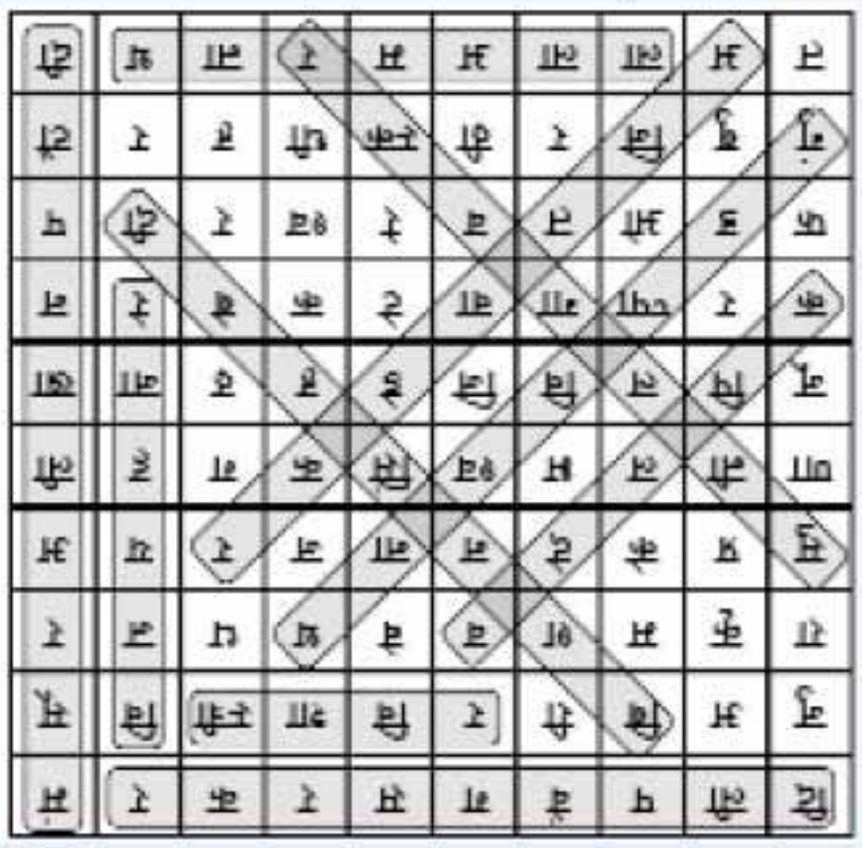

## बूझो तो...!

1. ऊपर से नीचे बहता हूं
हर बर्तन को अपनाता हूं।
देखो मुझको गिरा न देना
वरना कठिन हो जाएगा भरना।

2. लोहा खींचू ऐसी ताकत है
पर रबड़ मुझे हराता है।
खोई सूई मैं पा लेता हूं
मेरा खेल निराला है।

3. आदि कटे तो गीत सुनाऊं
मध्य कटे तो संत बन जाऊं।
अंत कटे साथ बन जाता
संपूर्ण सबके मन भाता।

4. सीधी होकर, नीर पिलाती
उलटी होकर दीन कहलाती।

5. सीधी होकर वह बहती है
उल्टी होकर वाह-वाह कहती है।

6. जा को तोड़ तो बनूं जापान
खान-पान में है मेरा मान।
पहले हरा बाद में हूं लाल
मुझे कहें अधरों की शान।

**उत्तर** 1. नदी 2. पुस्तक 3. संगीत, 4. गंगा, 5. हवा 6. पान

LIFE IS NOTHING
WITHOUT LOVE

Wisdom
begins in
Wonder.

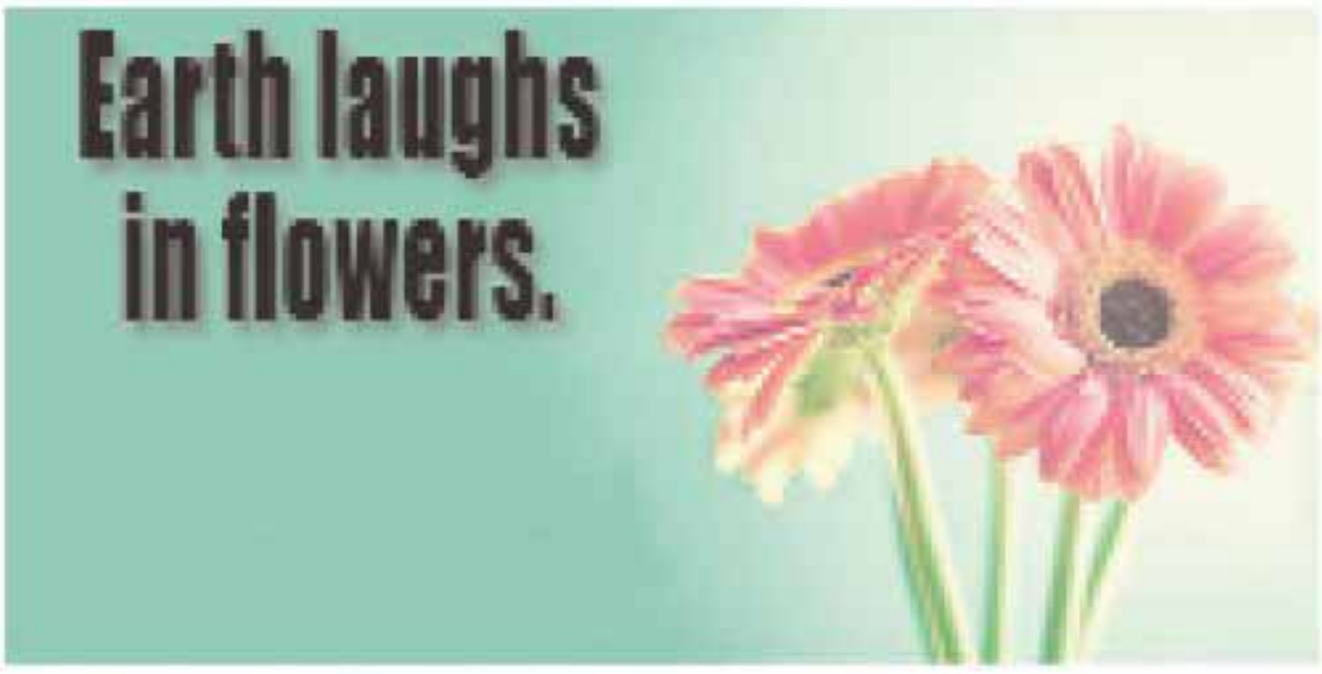
Earth laughs
in flowers.

# Quotes

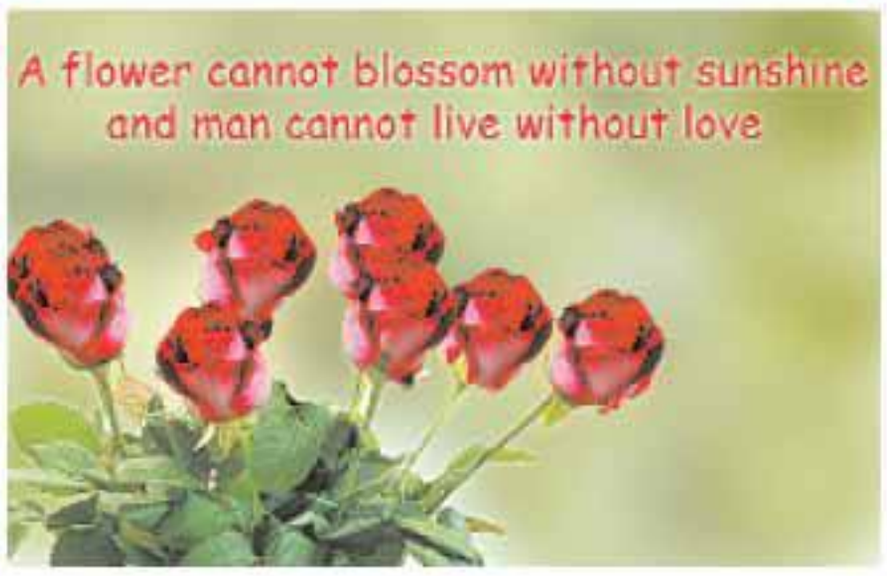
A flower cannot blossom without sunshine
and man cannot live without love

I have
decided to
stick with
love. Hate is
too great a
burden to
bear.

LIFE IS LIKE A FLOWER
ONLY TIME CAN TELL

BE
HAPPY

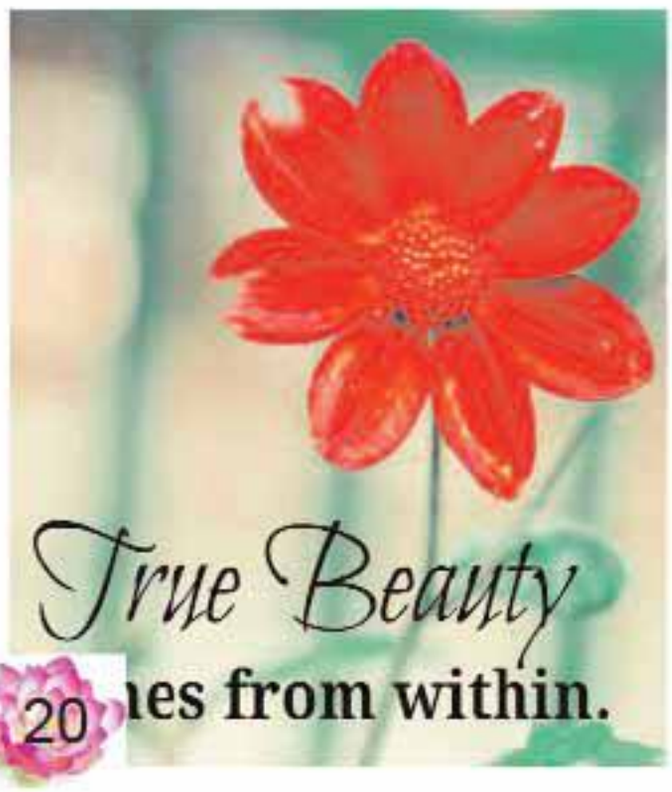
True Beauty
es from within.

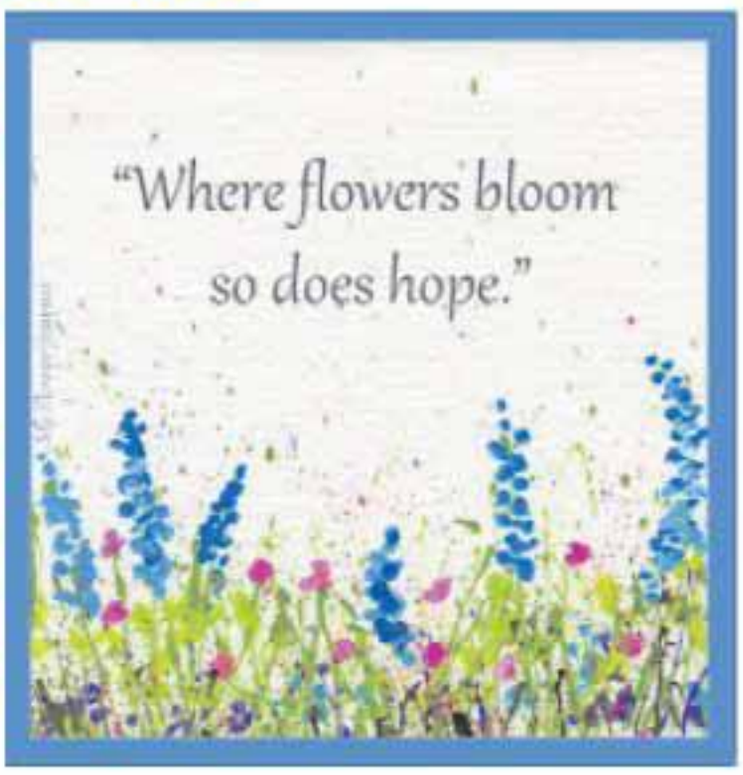
"Where flowers bloom
so does hope."

You can never make the
same mistake twice, because
the second time you make it,
it's not a mistake...
It's a choice.

# बोलें अंग्रेजी

Lesson- 222

Spoken English Practice

बच्चो, तुम्हें रोजाना अपने घर-स्कूल में अंग्रेजी बोलना चाहिए। इससे अंग्रेजी पर अच्छी पकड़ तो बनेगी ही, साथ ही तुम्हारी अंग्रेजी बोलने में होने वाली हिचकिचाहट भी दूर होगी और कॉन्फिडेंस भी बढ़ेगा। यहां तुम्हें रोजाना घर-बाहर बातचीत में काम में आने वाले वाक्य दिए जा रहे हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और अभ्यास करें।

## English-Hindi Phrases

In practice - व्यवहार में।
In preference to - की अपेक्षा।
In presence of - के समक्ष, के सामने।
In place of - के स्थान में, के स्थान पर।
In personal capacity - वैयक्तिक हैसियत से।
In prescribed manner - निर्धारित तरीके से, विहित रीति से।

## Word Power

Equipped
सुसज्जित

Occupied
अधिकृत

Outlook
दृष्टिकोण

Character
चरित्र

Passenger
यात्री

Substantially
मजबूती से

## Synonyms

Break- अंतराल, रुकावट डालना, अवसर, तोड़कर भागना।
Fracture, Rupture, Shatter, Smash, Wreck, Crash, Demolish, Atomize.

### IDIOM

Dress up- **Put on one's best clothes.**
He decided to dress up for dinner at the restaurant.

## Antonyms

**Dusk** - संध्याकाल
**Dawn** - सवेरा
**Early** - जल्दी
**Late** - देर
**Easy** - आसान
**Difficult** - कठिन
**Empty** - खाली
**Full** - भरा हुआ

1. मैं स्वैच्छिक काम करता हूं।
I do some voluntary work.

2. तुम किसके लिए काम करते हो?
Who do you work for ?

3. क्या तुम एक छात्र हो?
Are you a student?

4. मैं स्व रोजगार हूं।
I'm self-employed.

5. मैं खुद के लिए काम करता हूं।
I work for myself.

6. तुम कहां काम करते हो?
Where do you work?

7. मैं घर से काम करता हूं।
I work from home.

8. मैं अभी एक पाठ्यक्रम कर रहा हूं।
I'm on a course at the moment.

9. मैं अभी कार्य-अनुभव पर हूं।
I'm on work-experience.

10. मैं एक इंटर्नशिप कर रहा हूं।
I'm doing an internship.

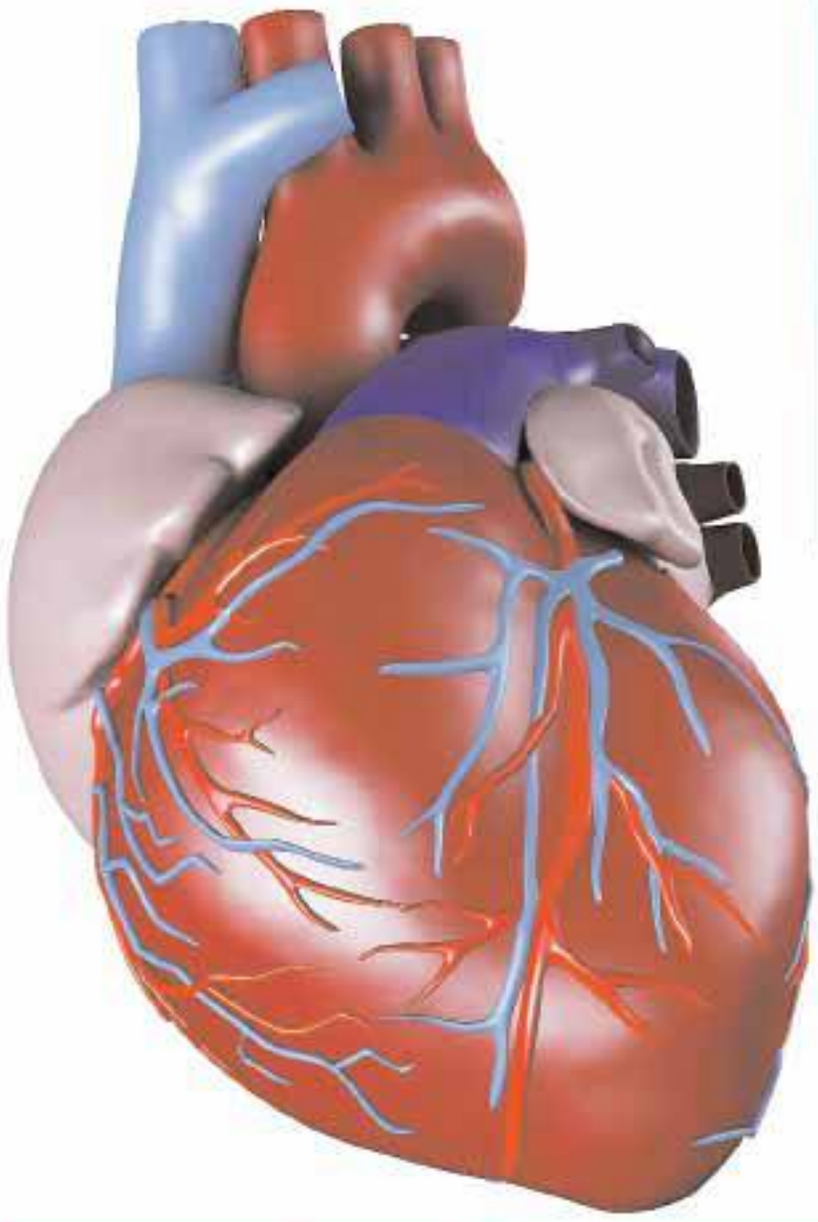

आपका दिल एक दिन में लगभग 100,000 बार धड़कता है।

Tape worms एक प्रकार के कीड़े होते हैं, जिनकी लंम्बाई 0.04 इंच से 50 फीट तक हो सकती है।

झींगुर तापमान ठंडा या गर्म होने पर अलग-अलग तरह की आवाजें निकालते हैं। कुछ लोग इनकी आवाज को सुनकर तापमान के ठंडे या गर्म होने का अंदाजा लगा लेते हैं।

## तथ्य निराले

वायलिन बनाने में सत्तर तरह की लकड़ियों का प्रयोग किया जाता है।

चूहा ऊंट से भी ज्यादा दिनों तक पानी के बिना रह सकता है।

'डैजर्ट माइस' यानी मरुस्थलीय चूहे कभी भी पानी नहीं पीते। वे रसदार पौधों के माध्यम से पानी को खाते हैं।

एक्सरे दिखती नहीं हैं, लेकिन वह नीले रंग की होती हैं।

ब्रिटेन में समुद्र किनारे कोई मृत व्हेल मिल जाए तो आपका उस पर मालिकाना हक नहीं होगा, क्योंकि ऐसी सूरत में व्हेल का मुंह राजा का और पूंछ रानी की मानी जायेगी।

तोते बहुत तरह के शब्द सही बोल लेते हैं। मगर तोते केवल वही शब्द सीखते हैं, जो इन्हें सिखाए जाते हैं। या फिर यह नकल करते हैं। जंगली तोते नकल नहीं कर सकते। सिर्फ पालतू तोते ही नकल कर सकते हैं। अफ्रीका के भूरे तोते सबसे ज्यादा नकलची होते हैं।

रेड सी दुनिया का सबसे नमकीन समुद्र है।

शुतुरमुर्ग केवल आगे की ओर लात चला सकता है।

फ्लैमिंगो नामक पक्षी के पंखों का गुलाबी रंग उन गुलाबी रंग के केकड़ों से आता है। जिन्हें ये पक्षी खाते हैं। यदि फ्लैमिंगो इन केकड़ों को न खाएं जैसा कि चिड़ियाघरों में होता है, तो उनका गुलाबी रंग सफेद हो जाएगा।

हाथी के शरीर का सबसे मुलायम हिस्सा उनके कान के पीछे होता है जिन्हें knule कहते हैं।

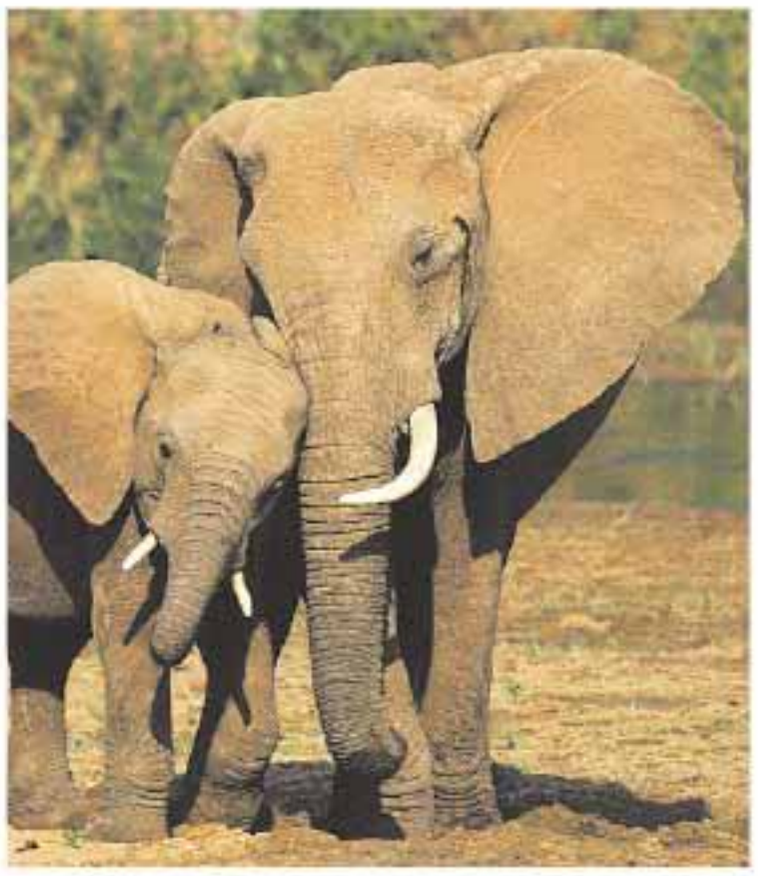

अफ्रीकन हाथियों के कान भारतीय हाथियों से बड़े होते हैं।

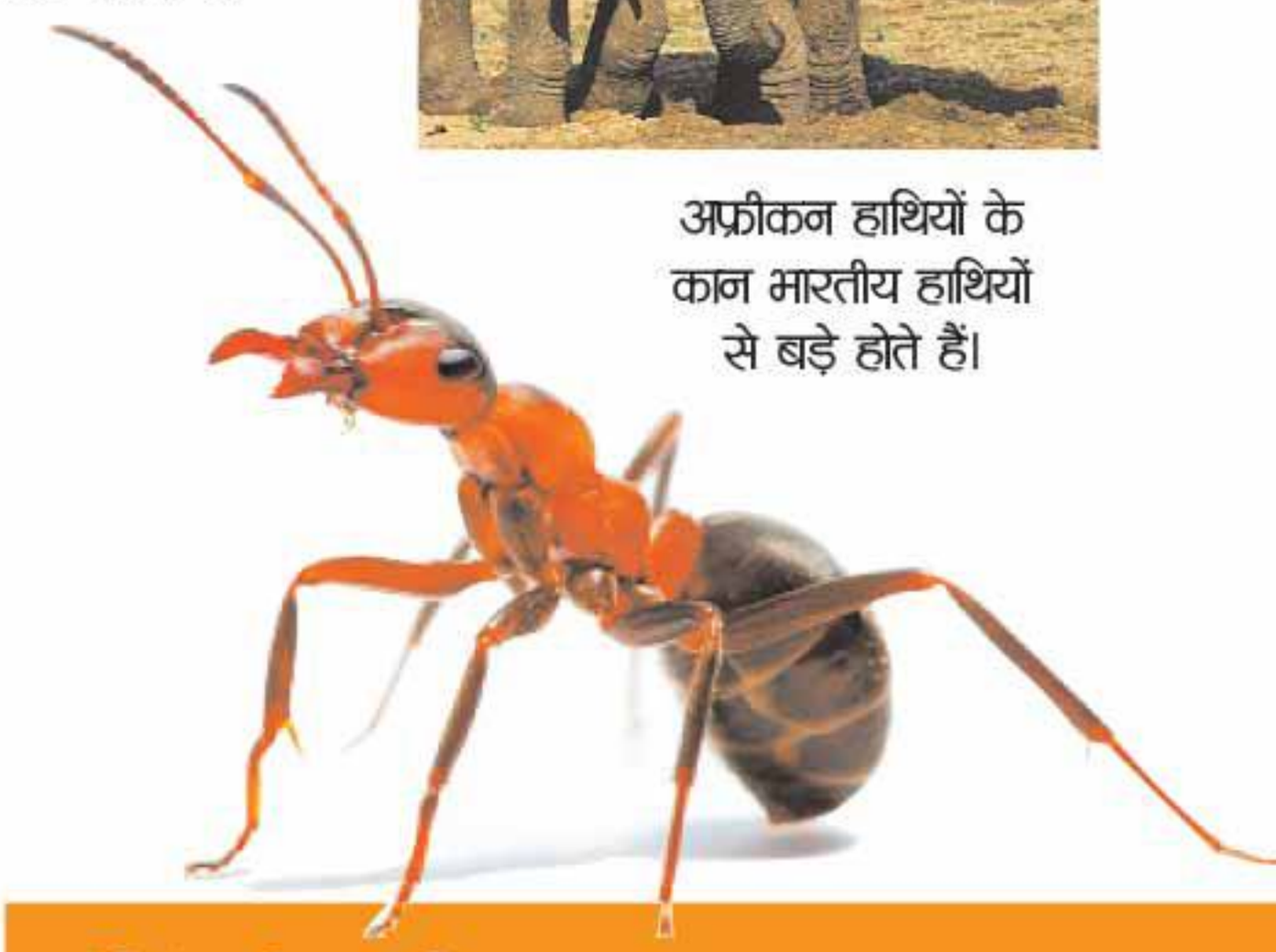

चींटियां अपने वजन से 30 गुना ज्यादा दबाब लगा सकती हैं, और 50 गुना ज्यादा वजन उठा सकती हैं।

# बर्फ के नीचे भी जीवित रहते हैं जीव-जन्तु

**सर्दियों** में पहाड़ी इलाकों में अक्सर नदियां, तालाबों और झीलों की सतह जम जाती है। आसमान से गिरती बर्फ और जमीन पर जमा हुआ पानी, इस स्थिति में इंसान तो किसी तरह आग और गर्म कपड़ों के सहारे सर्दियों का मौसम पार कर लेता है। क्या कभी सोचा है, पानी में रहने वाले जीव सर्दी से कैसे बच पाते हैं?

सर्दियों के मौसम में वातावरण का तापमान शून्य डिग्री सेल्सियस से कम हो जाता है, तो तालाबों, झीलों और नदियों का पानी जम जाता है। ठंडे पहाड़ी इलाकों के लिए यह आम बात है। फिर भी इस जमे हुए पानी में रहने वाले जीव-जन्तु मरते नहीं है। अब सवाल यह उठता है कि भला वे बर्फ में जिन्दा कैसे रहते हैं? दरअसल झीलों, तालाबों आदि में पानी की केवल ऊपरी सतह ही जमकर बर्फ में बदलती है। नीचे का पानी नहीं जमता है। यह तरल रूप में ही रहता है। इसमें ऑक्सीजन भी पर्याप्त मात्रा में होती है। सभी जन्तु इस द्रव पानी में आराम से रहते हैं और मरने से बच जाते हैं।

जब जाड़े के दिनों में ठंडे इलाकों में तापमान गिरता है, तो झीलों और तालाबों के पानी की ऊपरी सतह ठंडी होने लगती है। इस प्रक्रिया में जब ऊपरी सतह का तापमान 4 डिग्री सेल्सियस तक गिर जाता है, तो इसका घनत्व बढ़ने लगता है। सरल भाषा में कहा जाए, तो इस तापमान पर झीलों और तालाबों की ऊपरी परत का पानी भारी हो जाता है।

भारीपन के कारण यह पानी नीचे की ओर बैठना शुरू हो जाता है और नीचे का पानी ऊपर आने लगता है। यह प्रक्रिया तब तक जारी रहती है, जब तक कि पूरे पानी का तापमान 4 डिग्री सेल्सियस नहीं पहुंच जाता।

इसके बाद शुरू होता है कुदरत का असली खेल। ठंड और बढ़ने पर सतह के पानी का तापमान 4 डिग्री सेल्सियस से भी कम होने लगता है। ताज्जुब की बात यह है कि अब इसका घनत्व कम होना शुरू हो जाता है और इस पानी का नीचे जाना बन्द हो जाता है। लगातार बढ़ती ठंड के कारण एक वक्त वह भी आता है, जब वातावरण का तापमान गिरते-गिरते शून्य डिग्री सेल्सियस पहुंच जाता है। ऐसा होने पर झीलों और तालाबों में पानी की ऊपरी सतह तो बर्फ में बदल जाती है, जबकि नीचे की परतें 4 डिग्री सेल्सियस वाले पानी के रूप में ही रहती हैं। इस पानी में मछली और दूसरे जीव आराम से जिन्दा रहते हैं।

यही वजह है कि दुनिया के बहुत ठंडे इलाकों में भी इंसान और भालू-लोमड़ी जैसे शिकारी पशु बर्फ की परत तोड़कर नीचे तैरती मछलियों को निकाल लेते हैं। इसे कुदरत का अनूठा इंतजाम ही कहेंगे कि बर्फ की ऊपरी परत ही पानी में मौजूद जीवधारियों के लिए मौसम से बचने की ढाल और जमीन पर रहने वाले जीवों के लिए खराब मौसम में खुराक का इंतजाम बन जाती है।

# इसलिए गिरती है बर्फ

जब बादल का तापमान हिमांक से नीचे पहुंच जाता है, तब वहां नन्हे-नन्हे हिमकण बनने लगते हैं। जब ये कण बादल से नीचे की ओर गिरते हैं, तो वे एक दूसरे से टकराते हैं और एक-दूसरे में जुड़ जाते हैं। इस प्रकार इनका आकार बड़ा होने लगता हैं। जितने ज्यादा हिमकण आपस में जुड़ते हैं, हिमकण का आकार उतना ही बड़ा होता जाता हैं। पृथ्वी पर वे छोटे छोटे रुई के फाहों के रूप में झरने लगते हैं। इन्हें हिमपर्त कहते हैं। ये हिमपर्त षट्कोणीय होते हैं, और कोई भी दो हिमपर्त आकार में एक से नहीं होते।

हिमकण प्रकाश को प्रतिबिम्बित करते हैं, इसलिए ये सफेद दिखाई देते हैं। अगर हवा का तापमान हिमांक से नीचे न हो तो ये हिमकण गिरते समय पिघल जाते हैं। केवल सर्दी होने से बर्फ नहीं गिरती है। इसके लिए हवा में पानी के कण होना जरूरी है। गिरी हुई बर्फ कहीं बहुत हल्की तो कहीं बहुत गहरी भी हो सकती है। क्योंकि बर्फ हवा से उड़ती हुई इधर-उधर जाती है और एक जगह पर इकट्ठा हो जाती है। गिरती हुई बर्फ हमेशा नर्म नहीं होती। कभी-कभी यह छोटे-छोटे पत्थरों के रूप में भी गिरती है। इन पत्थरों को ओले कहते हैं। इनमें बर्फ की कई सतहें होती हैं।

अभी तक सबसे बड़ा ओला 1.2 किलो का पाया गया है। उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव पर बर्फ के पहाड़ हैं। इन पहाड़ों से बर्फ के बड़े-बड़े टुकड़े अलग होकर तैरते हुए आगे बढ़ते हैं। इन टुकड़ों को हिमशिला कहते हैं। बर्फ पानी पर इसलिए तैरती है क्योंकि वह पानी से हल्की होती है।

# थाइलैण्ड

**थाइलैण्ड** एशिया का एकमात्र देश है, जहां कभी किसी यूरोपीय शक्ति ने अधिकार नहीं किया। वर्ष 1932 में एक स्थानीय क्रांति के बाद यहां राजतंत्र की स्थापना हुई। यहां अधिकांश समय सैनिक शासन स्थापित रहा है। वर्ष 1991 में संविधान अंगीकृत कर नेशनल असेंबली की स्थापना की गई।

**आधिकारिक नाम** - प्राथेत थाई। **राजधानी** - बैंकाक। **मुद्रा** - ब्हात। **मानक समय** - जीएमटी से 7 घंटे आगे। **भाषा** - अंग्रेजी, मलय, खमेर। **कुल जनसंख्या**-6,54,44,371 **क्षेत्रफल** - 5,14,000 वर्ग किलोमीटर। **स्थिति** - थाइलैण्ड दक्षिण-पूर्वी एशिया में अंडमान सागर व थाइलैण्ड की खाड़ी के तट पर स्थित है।

**जलवायु** - उष्णकटिबंधीय है। **मानचित्रानुसार** - यहां का उत्तर पूर्वी भाग पठारीय है। दक्षिणी भाग निम्न भूमि युक्त है। यहां उष्णकटिबंधीय वर्षा वन पाए जाते हैं। **प्रमुख नदियां** - मीकोंग, चाओपिया, माए नाम मुन। **सर्वोच्च शिखर** - दोई ल्वांनन 2,595 मीटर। **प्रमुख बड़े शहर** - नरवोन, रचस्मिया, बैंकाक, चियांग माई। **निर्यात** - कम्प्यूटर, समुद्री भोजन, मत्स्य उत्पाद।

**आयात** - ईंधन, कच्चा औद्योगिक माल, उपभोक्ता सामग्री।

**प्रमुख उद्योग** - सीमेंट, बीयर, कृत्रिम तंतु, व्यापारिक वाहन, कच्चा इस्पात। **प्रमुख फसलें** - चावल, गन्ना, कसावा, मक्का, रबड़, अनानास, सोयाबीन, तरबूज, सूखे सेम।

**प्रमुख खनिज** - तांबा, सोना, सुरमा, चांदी, जस्ता, मैंगनीज, जिप्सम, जिर्कोंज, पेट्रोलियम व प्राकृतिक गैस।

**शासन प्रणाली** - संवैधानिक राजतंत्र। **राष्ट्रीय ध्वज** - लाल, नीले व सफेद रंग पर आधारित। **स्वतंत्रता दिवस** - 1238 ईस्वी।

**प्रमुख धर्म** - बौद्ध। **प्रमुख हवाई अड्डे** - बैंकाक, फुकेट और चियांग माई अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे।

**प्रमुख बंदरगाह** - बैंकाक। **इंटरनेट कोड** - .th

# बचपन वाले काका

**मैकू** काका के बगीचे में इस बार ढेर सारे अमरूद आए थे। अमरूद इतने अधिक थे कि पेड़ों की डालियां झुकी जा रही थीं। काका ने उन्हें सहारा देने के लिए बांस से टेक लगा रखी थी। अंकित की नजर जब भी उन पीले और बड़े-बड़े अमरूदों पर जाती, मुंह में पानी भर आता। लेकिन बगीचे की दीवार काफी ऊंची थी, इसलिए अंकित चाहकर भी उन रसीले अमरूदों को नहीं तोड़ पाता था। हां, काका से मांगता तो शायद अमरूद मिल भी जाते। पर इतने गंभीर स्वभाव वाले काका से कहना भी तो टेढ़ी खीर थी!

काका वास्तव में बहुत कम बोलते थे। बस अपने काम से काम रखते। वैसे भी अपने घर में वे अकेले थे। अलावा चितकबरी गैया के, जो घर के द्वारे, नीम के पेड़ के नीचे बैठी जुगाली करती रहती थी। पर कभी-कभी रातों में काका ऐसे बड़बड़ाते, मानो सन्नाटे से बातें कर रहे हों ।

बगीचे से ठीक लगा हुआ लाल खपरैलों का एक प्यारा-सा घर था, जिसके आगे फूस का छप्पर पड़ा हुआ था। घर का एक दरवाजा सामने की ओर तथा दूसरा बगीचे की ओर खुलता था। कुल जमा पूंजी यही काका का घर था, और अमरूदों का बगीचा जीने-खाने का साधन। खेती न बाड़ी...! अमरूदों से ही उनका गुजर-बसर हो जाता।

काका के बगीचे में एक ऐसा भी पेड़ था, जिसके अमरूद बहुत ही मीठे होते थे। इतने मीठे कि कभी-कभार ही काका उन्हें तोड़ पाते, अन्यथा तो सूरज निकलने से पहले ही हरियल तोते कुतर डालते थे उन्हें! वह पेड़ बहुत पुराना और विशाल था, जो बीच से दो हिस्सों में फटा हुआ था। कहते हैं, किसी समय उस पर बिजली गिरी थी और वह बीच से फट गया था।

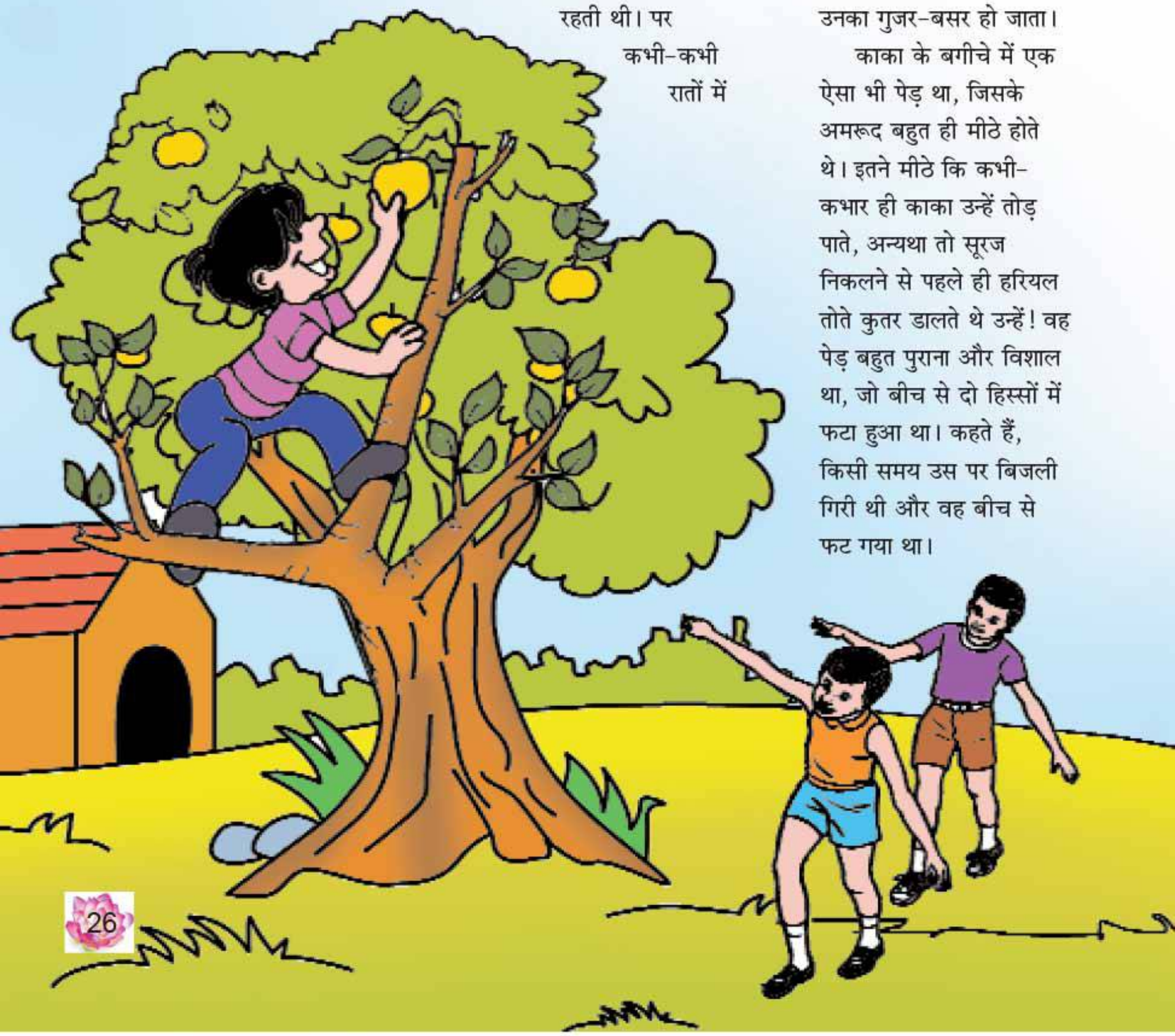

बीच का हिस्सा अब भी काला दिखता था।

एक दिन अंकित से रहा न गया। उसने मन ही मन सोच लिया कि काका के बगीचे से अमरूद जरूर खाऊंगा। वह अपने दोस्तों से जा मिला और सारी योजना कह सुनाई। मित्रों को यह योजना बहुत पसंद आयी।

'सुनो, पहले मैं बगीचे में कूदूंगा,' भोला ने कहा। अगर काका नहीं दिखे, तो मैं इशारा कर दूंगा, तुम सब आ जाना।

'मैं लोगों पर नजर रखूंगा।' सलीम ने कहा, 'अगर कोई आता दिखा तो सूचित करूंगा।'

'ठीक है, चलो चलते हैं।' अंकित ने कहा और सभी चल पड़े। वे बगीचे की पिछली दीवार की ओर जा खड़े हुए, जिधर अंधेरा और सन्नाटा रहता था और बड़ी-बड़ी घास उगी हुई थी। दोपहर का समय था।

भोला पिछली दीवार के टूटे हिस्से को पकड़कर धीरे-धीरे ऊपर चढ़ गया । फिर चारों ओर देखता हुआ बोला, 'सभी चुपचाप आ जाओ।' अंकित, सलीम भी बगीचे में आ गए। सभी अमरूद के पुराने पेड़ पर चढ़ गए। उस पेड़ की एक मोटी डाल काका की खपरैल वाली छत पर भी झुकी हुई थी। उस पर ढेर सारे पके अमरूद लगे हुए थे।

काका अपने आंगन से आवाज लगाकर तोतों को भगाते रहते थे, इसलिए इस डाल में सबसे अधिक अमरूद बचे हुए थे। अंकित उस डाली की ओर बढ़ने लगा। भोला और सलीम दूसरी डाल पर चढ़ गए। अंकित जल्दी-जल्दी अमरूद खाने लगा। वह आधा खाता और फिर उसे फेंककर दूसरा खाने लगता। वह तेजी से मुंह चला रहा था।

कहानी

अचानक उस पेड़ पर पहले से अटकी आधी ईंट फिसलकर खपरैलों पर जा गिरी। 'टन्न' की आवाज हुई। सभी डर गए और पेड़ की पत्तियों में छिप गए। तभी 'चर्रर्र...' की आवाज़ करता बगीचे का दरवाजा खुला। काका बगीचे में आ गए। उनके हाथ में एक डण्डा भी था। शायद बन्दर के डर से वे उसे लिए हुए थे।

उन्होंने ऊपर देखा, 'ओह, तो ये तुम लोग हो!' काका ने चीखकर कहा, 'चलो, नीचे आओ फौरन....!' उनकी कड़कदार आवाज सुनकर सभी की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। शुक्र था कि काका की नजर अंकित पर नहीं पड़ी थी। भोला और सलीम अपराधबोध से मुंह लटकाए नीचे उतरने लगे। अंकित सोचने लगा, 'काका जैसे ही दोनों को लेकर बाहर जाएंगे, मैं नीचे उतर कर एक-दो-तीन हो जाऊंगा।'

अचानक उनकी नजर पेड़ की जड़ पर गई, जहां तीन जोड़ा चप्पलें रखी हुई थीं। 'ओह! तो इसका मतलब तीसरा भी कोई है। चलो, निकलो बाहर...!' अंकित की जान सूख गई। उसे चक्कर-सा आने लगा।

'सुना नहीं, मैंने क्या कहा!' काका फिर से चिल्लाए, 'एक तो चोरी करते हो, ऊपर से मुंह चुराते हो? फौरन नीचे आओ।' इतना कहकर काका सभी की चप्पलें लेकर अन्दर चले गए। सभी बुरे फंसे थे। अब तो चप्पलें लाने के लिए काका के घर जाना ही था।

सभी काका के पास जा पहुंचे और बोले, 'हमें माफ कर दीजिए काका, अब हम अमरूद चोरी नहीं करेंगे।'

काका ने ऐनक सही की। फिर सभी पर एक नजर डालते हुए बोले, 'जाओ, ले लो चप्पलें...। पर ध्यान रखना, यह काम दोबारा नहीं होना चाहिए।' सभी छूटी हुई गोली की तरह भाग खड़े हुए।

*अगले पृष्ठों पर जारी...*

(पृष्ठ संख्या 27 से जारी...)

पर काका का डर सभी के दिलों में अधिक दिनों तक कहां बना रहता? कुछ ही दिनों में अमरूद सभी को फिर से अपनी ओर खींचने लगे। इस बार की योजना पहले से अधिक मजबूत थी।

भोला ने बताया, 'काका की नजरें बहुत कमजोर हैं। अगर ऐनक न हो तो हमें पहचान नहीं पाएंगे।' तभी अंकित चीख उठा,' क्यों न हम काका का ऐनक गायब कर लें!' उसकी बात से सभी खुश हो उठे, 'वाह! क्या बात कही है!'

इस बार सभी सतर्क थे। उस दिन जब दोपहर में काका आराम कर रहे थे तो भोला चुपके से गया और उनका ऐनक उठा लाया। फिर तो सभी ने जमकर अमरूद खाए। जब खटपट हुई तो काका जाग गए। उन्होंने फौरन अपना ऐनक टटोलना चाहा। पर स्टूल पर रखे गिलास के सिवा और कुछ हाथ न लगा। वे समझ गए कि यह बच्चों की करतूत है। वैसे भी उन्होंने उनकी आवाजें सुन ली थीं। वे जोर-जोर से चीखने लगे, 'बच्चो, अगर पुराने पेड़ पर चढ़े हो तो तुरन्त नीचे उतरकर मेरे कमरे में भाग आओ!'

वे लड़खड़ाते हुए बगीचे की ओर खुलने वाले दरवाजे की ओर लपके, लेकिन असंतुलित ढंग से दौड़ने के कारण ठोकर खाकर गिर पड़े। उनके घुटने छिल गए, जिनसे तेजी से खून बहने लगा।

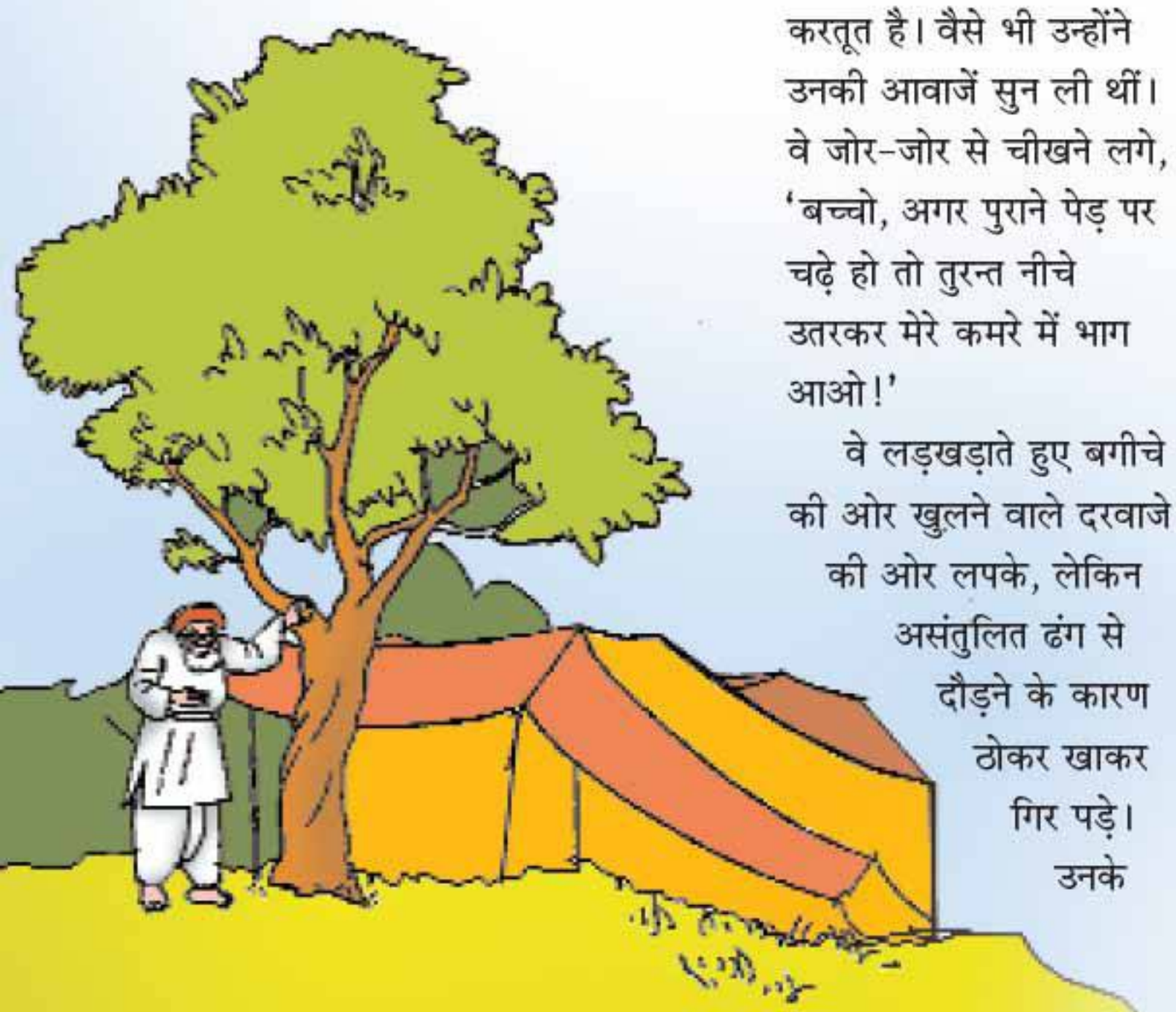

उन्होंने फिर भी चिल्लाना बंद नहीं किया था, 'बच्चो, जल्दी से मेरे कमरे की ओर भागो, मेरा कहा मानो...।'

बच्चे समझ नहीं पा रहे थे कि बात क्या है! पर काका के जोर-जोर से चिल्लाने से उन्हें डर जरूर लग रहा था। वे जल्दी-जल्दी भागकर काका के कमरे में आ गए। काका की नजरें बचाकर चुपचाप बाहर का दरवाजा खोलकर भागने ही वाले थे कि काका दीवार से टकराकर फिर से गिर गए। उनके घूर-घूरकर देखने से यही लग रहा था कि वह सभी को बहुत ही धुंधला-धुंधला देख पा रहे हैं। उन्हें इस बात का तो आभास था कि कुछ बच्चे हैं, पर यह पहचान पाना कठिन था कि वे कौन हैं?

काका की इस स्थिति को देखकर सभी का मन भर आया। सभी के बाहर जाते कदम वापस लौट आए। भोला ने दौड़कर ऐनक उनके हाथों में रख दी, 'लो काका, ऐनक यहां है...!' काका ने तुरन्त ऐनक अपनी आंखों पर चढ़ाया।

सभी की जान सूख गई कि अब तो खैर नहीं। पर जब उन्हें देखकर काका की आंखों में आंसू आ गए तो सभी आश्चर्य से एक-दूसरे का मुंह देखने लगे। काका ने सभी को बांहों में खींच लिया, 'तुम लोग ठीक तो हों बच्चो!'

काका के इस स्नेह से बच्चों का गला रुंध गया। आंखें पनीली हो गईं। जब काका को यह विश्वास हो गया कि सभी पूरी तरह से सुरक्षित हैं तो ईश्वर को धन्यवाद देते हुए बोले, 'बच्चो, अगर आज तुम्हें कुछ हो जाता तो मैं तुम्हारे माता-पिता को क्या जवाब देता...बोलो?'

अब सभी को कुछ-कुछ बात समझ में आने लगी थी कि काका ने किसी बड़ी मुसीबत से उन्हें बचा लिया था। अंकित का गला भर्रा गया, 'प...पर काका, बताइए तो, आख़िर बात क्या है?'

काका ने लम्बी सांस खींचते हुए कहा, 'शुक्र है, तुम लोग बच गए । मैंने कल शाम को एक जहरीला सांप उस पुराने पेड़ के फटे हुए तने में घुसते देखा था।' काका ने सिहरते हुए कहा, 'अभी कुछ समय पहले भी मैंने उसे पेड़ पर चढ़ते हुए देखा था।'

सभी ने महसूस किया कि काका की आंखों में उस जहरीले सांप की तस्वीर बन रही है। सभी अपराधबोध से धरती में गड़े जा रहे थे। उन्हें दु:ख हो रहा था कि जिस काका को उन्होंने परेशान किया था, वह मन के कितने कोमल हैं। उन्होंने सबकी जान बचाने के लिए अपने तन का होश भी नहीं रखा!

सभी फूट-फूटकर रोने लगे।

काका का हाथ अब भी स्नेहपूर्वक उनके सिर पर था । वे तो बस सभी को आशीष देते जा रहे थे, 'जुग-जुग जियो मेरे बच्चो! मेरा क्या है, चार दिन की जिन्दगी और बची है। तुम्हारे तो अभी हंसने-खेलने के दिन हैं...!'

-डा. मोहम्मद साजिद खान

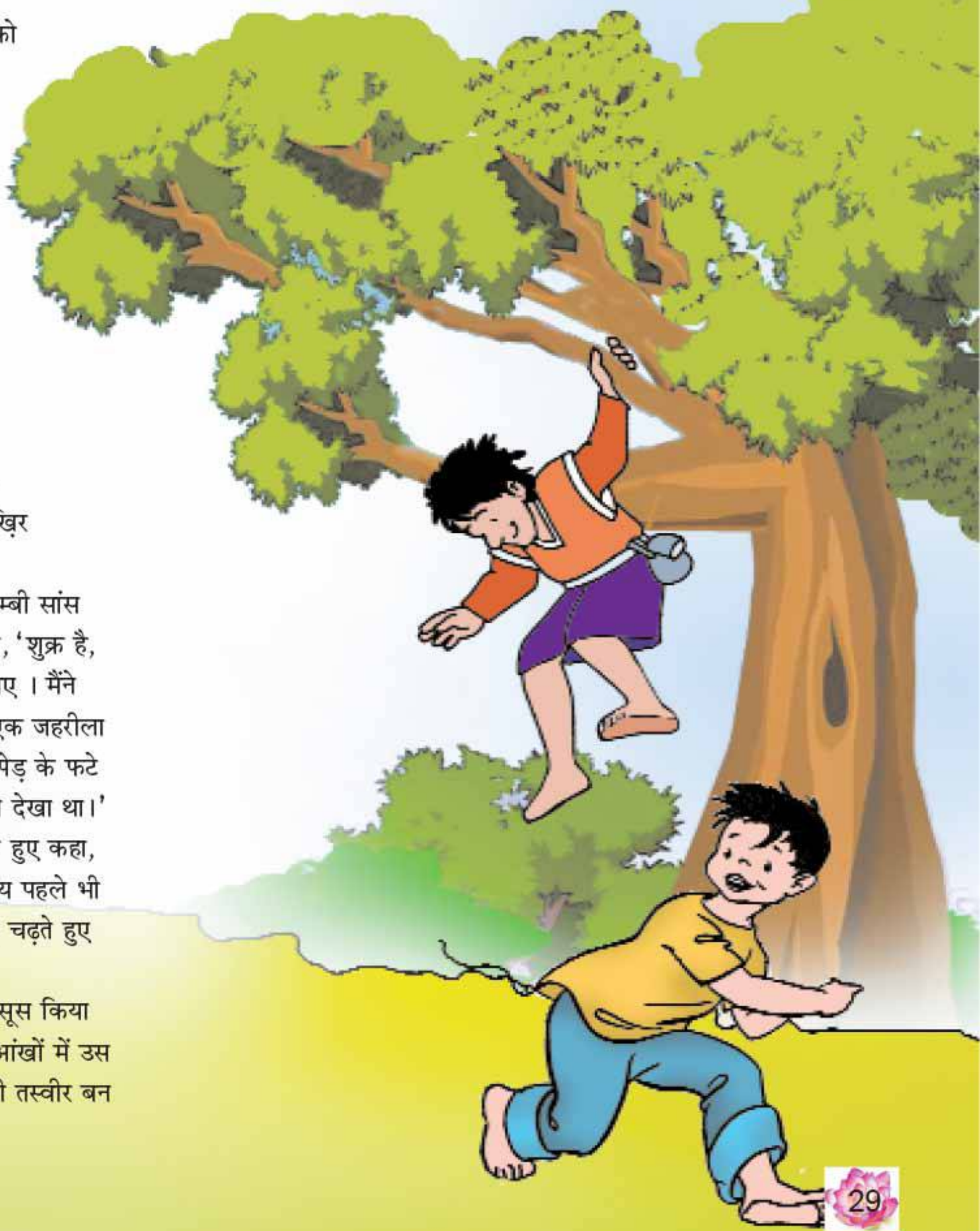

# क्यों और कैसे?

## ऐसे रंग बदलता है गिरगिट

**अपनी** त्वचा में मौजूद विशेष रंगीन कोशिकाओं के कारण ही गिरगिट के लिए रंग बदलना संभव हो पाता है। और यह होता है सिर्फ कोशिकाओं के फैलने या सिकुड़ने के कारण।

गिरगिट के रंग बदलने में इसके मूड के साथ-साथ वातावरण के तापमान और प्रकाश की स्थिति का भी महत्त्वपूर्ण प्रभाव रहता है। जबकि यह धारणा पूरी तरह आधारहीन है कि गिरगिट पृष्ठभूमि के हिसाब से अपना रंग बदलता है।

गर्म दोपहरी इसकी त्वचा के गहरे रंग वाली कोशिकाओं को फैला देती है। इससे यह गहरे भूरे या हरे रंग का नजर आने लगता है। ऐसे में पूरा शरीर पीलापन दर्शाने लगता है। इस तरह विभिन्न स्थितियों में यह सिर्फ हरे भूरे या पीले रंग के ही नहीं, बल्कि लाल व काले रंग वाले अलग-अलग बहुत तरह के शेड हासिल कर सकता है। और मजेदार बात तो यह है कि ऐसा करने के लिए इसे सिर्फ बीस सेकंड का ही समय लगता है।

## उम्र बता दो फोन नम्बर से

**सबसे** पहले तो तुम अपने किसी साथी से उसका फोन नम्बर पूछो। साथ ही उससे नम्बर को किसी कागज पर लिख लेने को कहो। जब वह नम्बर लिख ले तो उसे कहो कि दाहिनी ओर से चार अंक छोड़कर वह बाकी को काट दे।

इसके बाद बचे हुए चार अंकों को उलट-पलट कर एक नई संख्या बनाने के लिये बोलो अपने इस दोस्त को। साथ ही यह भी कि नई संख्या बनाने के बाद बड़ी संख्या में से छोटों को घटा दे। इस तरह नतीजे के तौर पर जो संख्या मिले, उसके सारे अंकों का अब योग निकालना है, तुम्हारे साथी को। हो सकता है कि योगफल फिर से दो अंकों वाली संख्या हो। ऐसा होने पर इनको भी जोड़ना पड़ेगा, ताकि अंत में नतीजा सिर्फ एक अंक में मिले। इस नतीजे में तुम्हारे दोस्त को 7 जोड़ना होगा। इसके बाद अपने साथी को तुम्हें यह कहना होगा कि वह अपने जन्म के वर्ष के आखिरी दो अंक (यानी दाहिनी ओर वाले पहले दो) इस संख्या में जोड़े और फिर इस तरह अंत में मिली संख्या तुम्हें बता दे।

तुम मन ही मन इस संख्या में से 16 घटाओगे तो तुम्हें अपने साथी के जन्म का वर्ष मिल जाएगा। जिससे उसकी उम्र का पता आसानी से लगाया जा सकता है। मान लो तुम्हारे साथी का टेलीफोन नम्बर है-272856, दाहिनी ओर से केवल चार अंक लेने पर 2856 होता है। तुम्हारा साथी इन 4 अंकों से जो नई संख्या बनाता है, वह है (मान लो) 6852, बड़ी संख्या में से छोटी संख्या घटाने पर 6852-2856 = 3996 इस संख्या के सारे अंकों का योग- 3+9+9+6 =27 2+7=9 इसमें 7 जोड़ने पर 9+7=16 साथी द्वारा अपने जन्म वाले वर्ष के आखिरी दो अंक जोड़ने पर (मान लो) वह वर्ष है 1981, इस तरह 16 + 81 = 97, इस तरह सारी गणित चुपचाप खुद करने के बाद तुम्हारे मित्र द्वारा 97 की संख्या तुम्हें बताये जाने पर मन ही मन इसमें से 16 घटा दोगे। 97-16 = 81 और लो उसके जन्म का वर्ष तुम्हें मिल गया। अब हमारे तरकीब बताये बिना तुम उम्र की गणना तो कर ही लोगे।

-आइवर

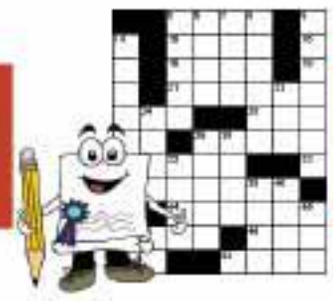

# CrossWord PuzzLeS

देवांशु वत्स

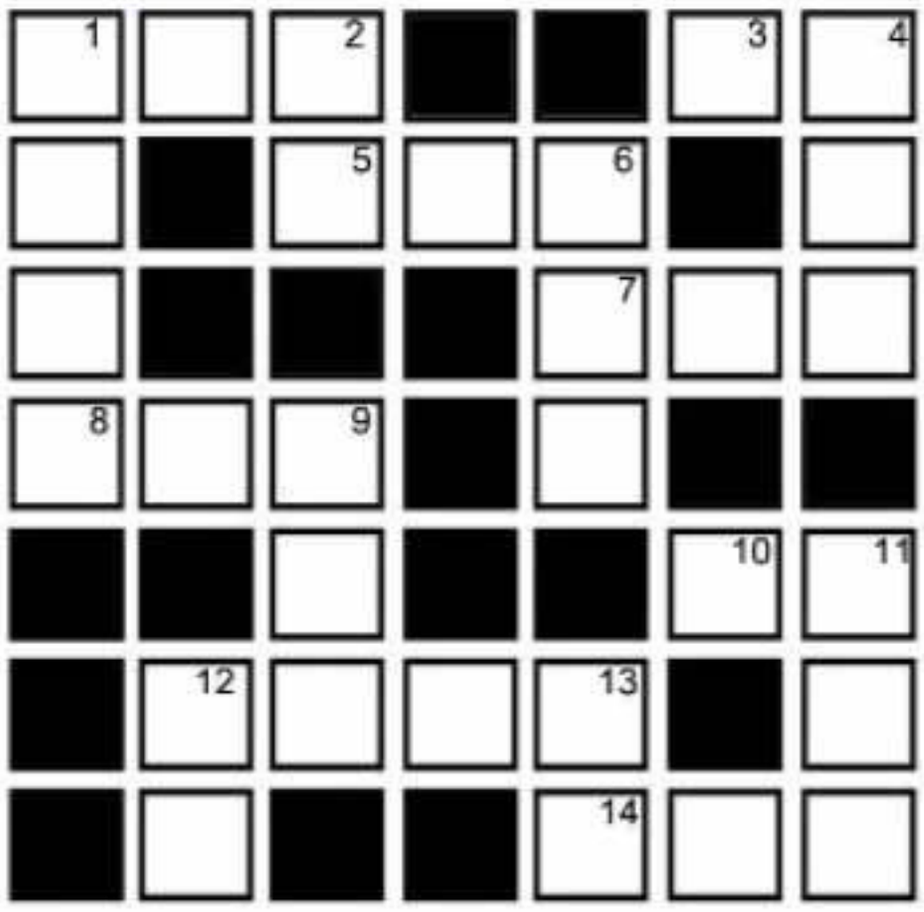

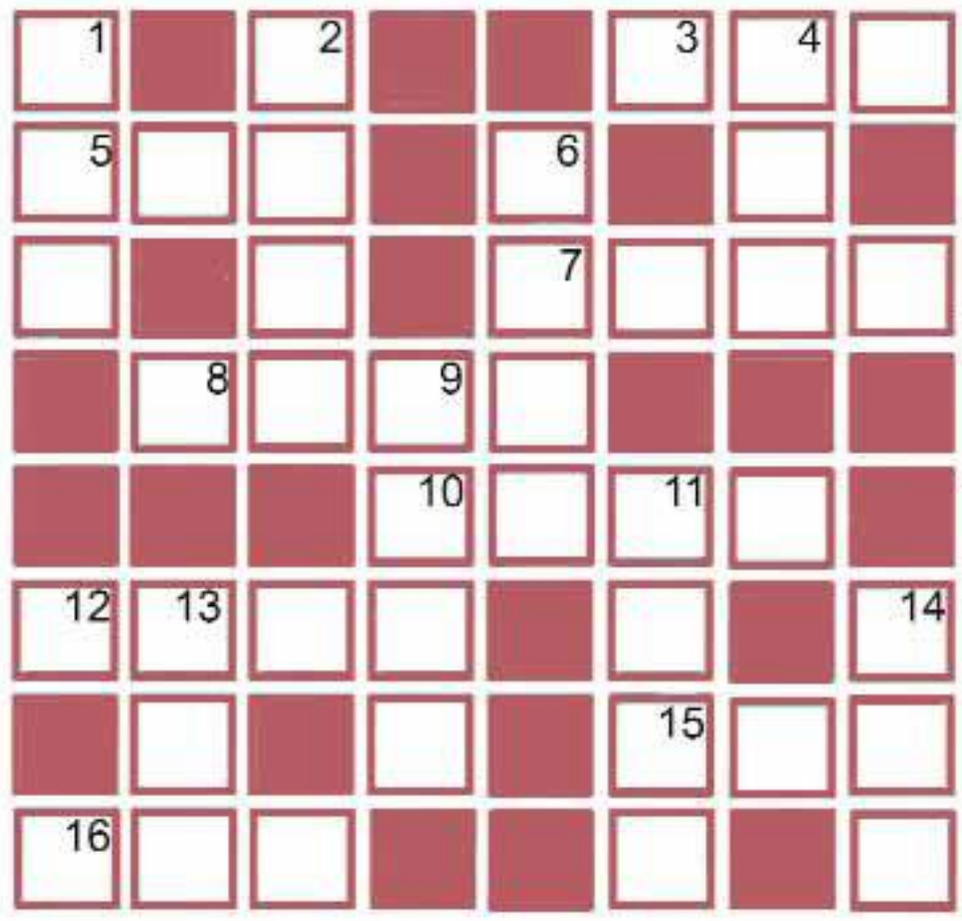

**बाएं से दाएं**

1. चिड़ियों का कलरव (3)।
3. निकट, जो दूर न हो (2)।
5. रुपया-पैसा, धन (3)।
7. विचित्र, अंधेर, विपत्ति (3)।
8. रात में न दिखाई पड़ने वाला नेत्र रोग (3)।
10. टहनी, डाली, अंग (2)।
12. सतर्कता, सावधानी (4)।
14. हनुमान को यह भी कहते हैं (3)।

**ऊपर से नीचे**

1. विलक्षण बात, करामात (4)।
2. हाथ, टैक्स (2)।
4. कारण, हेतु, साधन (3)।
6. दिमाग, मस्तिष्क (3)।
9. धैर्य (3)।
11. चुप, मौन, शांत (3)।
12. सभी, समग्र (2)।
13. तलाश, टकटकी, टक (2)।

**ACROSS**

3. The elementry stages of any subjects (3).
5. Be obliged to pay (3).
7. Someone who acts as assistant (4).
8. To perceive with the eyes, Catch sight of (4).
10. A kin for drying-hops (4).
12. A partiality that prevents objective consisderation of an issue or situation (4).
15. The outer part if a wheel to which the tire is attached (3).
16. A clever remark (3).

**DOWN**

1. A personal enemy, an armed adversary (3).
2. Large brownish-green New Zealand parrot (4).
4. Invoke upon,Ask for or request earnestly (3).
6. Common Indian weaver bird (4).
9. Affix in a public place or for public notice (4).
11. A person of a particular character or nature (4).
13. A word-wide federation of national standards bodies that develops international standards (3).
14. One who is playfully mischivevous (3).

हल

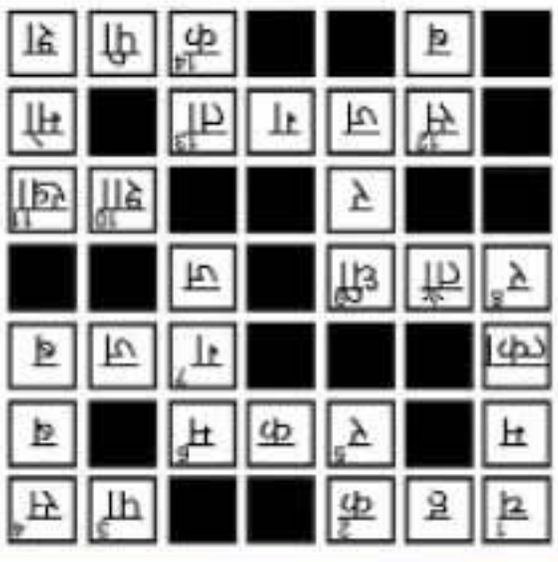

Answer

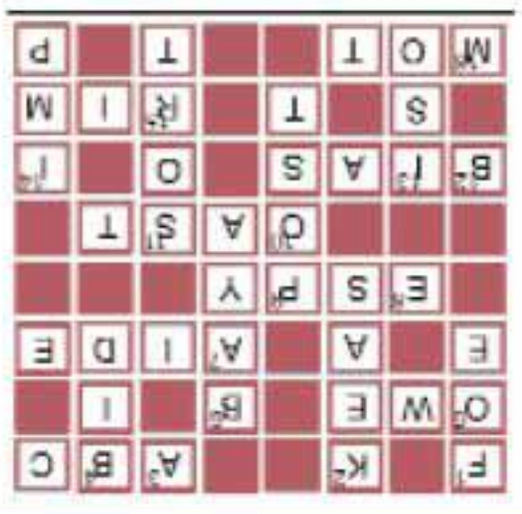

**हिमांशी वैष्णव**
बालोतरा (राज.)

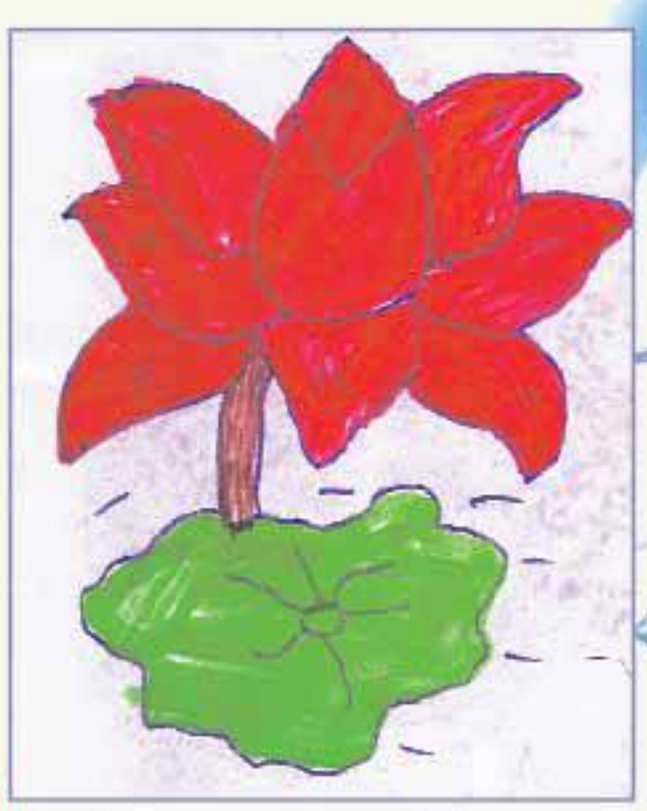

**सीताराम महावर,** खातौली (राज.)

**समर्थ मिश्रा**
लखीमपुर खीरी (उ.प्र.)

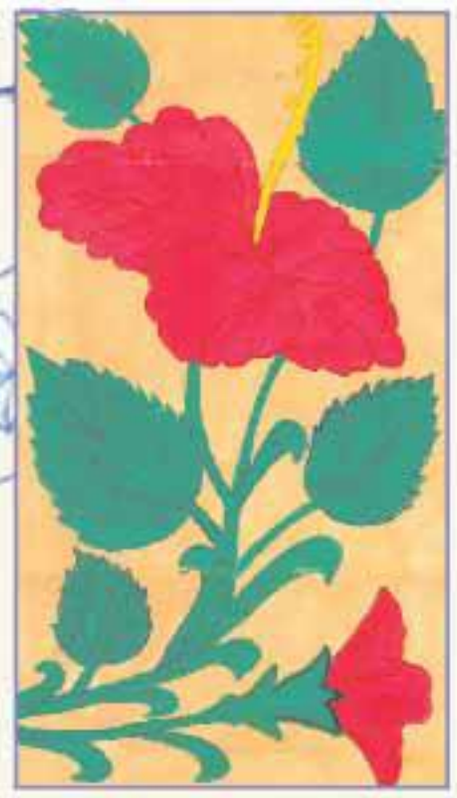

## वो यादें...वो बातें...

वह भी क्या जमाना था
जब चारों ओर हरियाली थी।
नहीं था कंकरीट का जंगल
सबके मनों में था बहुत मंगल।
लोग खूब घी-गुड़ खाते थे
बच्चों को नहीं था, पढ़ाई का डर।
कभी-कभी दिखता कोई चश्मिस
बहुत खाते थे काजू और किशमिश।
साफ रहते थे नदी, ताल-तलैया
बहुत थी घनी-घनी पेड़ों की छाया।
योग प्राणायाम से रहते थे, वो फिट
नहीं जानते थे, किसी तरह की जिम।
खाते थे, चूल्हे की मोटी-मोटी रोटी
आज की तरह नहीं होती थी छोटी-छोटी।
कहां गए वो दिन, उन्हें ढूंढता हूं आज
उम्मीद है फिर लौटेंगे वो सुनहरे दिन।

**-सूर्यमणि व्यास,** 'निष्काम',
मानसर खेड़ी, जयपुर (राज.)

## हर्षाई तितली

खुशबू पर ललचाई तितली
फूलों पर मंडराई तितली।
फूली नहीं समाई तितली
बहुत नाची-गाई तितली।
रंग-बिरंगी रानी तितली
रानी क्या पटरानी तितली।

**-मोईन खान,** कोटा (राज.)

बालमंच

# लिटिल स्टार

*विशेष बंसल*

अपने अभिनय के माध्यम से बाल अभिनेता विशेष बंसल लिटिल स्टार की श्रेणी में आ गया है। सीरियल 'बुद्ध' में शीर्षस्थ बाल सिद्धार्थ की भूमिका में खूब पसंद किया गया। मार्मिक दृश्यों में तो वह कलाकारों से इक्कीस ही रहा। दर्शक-पत्रकार, समीक्षकों से उसे खासी वाहवाही मिली। वह कहता है, 'महात्मा बुद्ध का जीवन सभी के लिए प्रेरणा स्रोत है। सैट पर मुझे भी अच्छी बातें सीखने एवं समझने को मिलीं। मैंने इस किरदार को ठीक-ठीक प्रकार से समझा और पर्दे पर प्रस्तुत किया।'

विशेष बंसल में एक्टिंग के गुण प्रकृति- प्रदत्त हैं। मगर अभिनय की यह विशेषता उसने मॉडलिंग और सांस्कृतिक आयोजन से बढ़ाई। सीरियल, 'बोले तुम...ना मैंने कुछ कहा' से उसका छोटे पर्दे पर पदार्पण हुआ। डायरेक्टर ने उसे अहम भूमिका में अवसर दिया। यह नन्हा सिलेब्रिटी छोटे पर्दे पर छा गया। और दर्शकों का पसंदीदा बन गया।

धारावाहिक 'इस प्यार को क्या नाम दूं' में आरव रायजादा की भूमिका में वह बाजी मार गया।

देश में कोई ऐसा चैनल नहीं है, जहां विशेष बंसल की धूम ना रही हो। सीरियल 'होंगे ना जुदा हम' में वह चिंटू की केंद्रीय भूमिका में सभी का मनोरंजन करने में सफल रहा। इसलिए उसकी भूमिका आगे से आगे बढ़ती गई। सीरियल 'महादेव' में वह तृप्ति के रोल में प्रखर होकर उभरा।

विशेष बसंल की आयु मात्र 13 वर्ष है। वह अपनी स्कूल में बेहतरीन पढ़ाई के लिए प्रशंसा पा चुका है। उसे बाल साहित्य व बाल-पत्रिकाएं पसंद है।

**-राजू कादरी रियाज**

# नॉलेज बैंक

## एक के तीन

Final -फाइनल- आखिरी- अन्तिम:

Gold -गोल्ड-सोना-स्वर्णम्, काञ्चनम्

Latest -लेटेस्ट-सबसे नया- नवीनतम:

Refund -रिफंड-वापस लौटाना-प्रतिदाय:

Compansation -कंपेसेशन-मुआवजा- हानिपूर्ति:

## शब्द युग्म

| | |
|---|---|
| आभार- कृतज्ञता | आहत- घायल |
| अभार- भारहीन | अहित- हानि |
| आभास- प्रतीत होना | आहूत- बुलाया गया |
| आवास- रहने की जगह | आहुति- होम, बली |
| आसन- बैठने की जगह | |
| आसान- सरल | |

## अंतर है

| | |
|---|---|
| Born - पैदा हुआ | Borne - सहन किया |
| Corpse- मृतक शरीर | Crops - फसल |
| Answer - प्रश्न का उत्तर | Reply- पत्र का जवाब |
| Accident- दुर्घटना | Incident- घटना |

## पर्यायवाची/समानार्थक शब्द

**केला** - कदली, रम्भा, भानुफल, गजवसा

**खिड़की** - वातायन, गवाक्ष, झरोखा, बारी, दरीचा।

**कौआ** - काक, वायस, पिशुन, काग, बलिपुष्ट, एकास

**गंगा** - मंदाकिनी, जाह्नवी, भागीरथी, देवनदी, सुरसरि, त्रिपथगा।

## उर्दू/ हिन्दी

**इबा**- घृणा, नफरत, घिन

**इब्कार** - सुबह, सवेरा, प्रभात

**इब्तिहाज** - आनंद, हर्ष, खुशी

**इफ्लास** - गरीबी, धनहीनता, कंगाली

**इमाम** - नेता, अग्रसर, नमाज पढ़ाने वाला

विपत्ति के फल मीठे होते हैं।
Sweet are the uses of adversity.

बुरे समय के बाद अच्छा समय भी आता है।
Every cloud has a silver lining to it.

कुर्सी को सलाम है।
Jack in office is a great man.

Belly worship - पेटूपन
The supreme being - परमेश्वर
Behind the time- प्राचीन, पुरातन
Belly pinched- भूखों मरता हुआ

प्रस्तुतिः किशन शर्मा

## One Word

- A woman with peevish nature - **Shrew.**
- Happening at the same time - **Simultaneous.**
- A study of word, science deals with formation of words- **Etymology.**
- A thing that cannot be seen with human eyes - **Invisible.**

- जो केवल एक आंख वाला हो - **एकाक्ष।**
- किसी एक पक्ष से संबंध रखनेवाला - **एकपक्षीय।**
- सांसारिक वस्तुओं को प्राप्त करने की इच्छा - **एषणा।**
- जिस पर किसी एक का ही अधिकार हो - **एकाधिकार।**

## लोकोक्तियां

**आम के आम गुठलियों के दाम** - दोहरा फायदा।
**उल्टा चोर कोतवाल को डांटे** - दोषी का निर्दोष पर दोषारोपण करना।
**एक हाथ से ताली नहीं बजती** - केवल एक पक्षीय सक्रियता से कार्य पूरा नहीं होता।

बालहंस Poster

A smile is a curve that
sets everything straight.

1. कोने में पत्थर लगा है।
2. खिड़की के बाहर कोई नहीं है।
3. स्टूल में एक ड्रॉवर नहीं है।
4. आग की लपट ज्यादा है।
5. आदमी के गाऊन का कोना नीचे की ओर है।
6. नीचे पड़ी हड्डियां दो हैं।
7. झाड़ू का कोना अंदर है।
8. मोमबत्ती के स्टेण्ड में दो डंडे हैं।
9. आदमी के बाल बाहर निकले हैं।
10. किताब के कवर पर नंबर नहीं हैं।

उत्तर

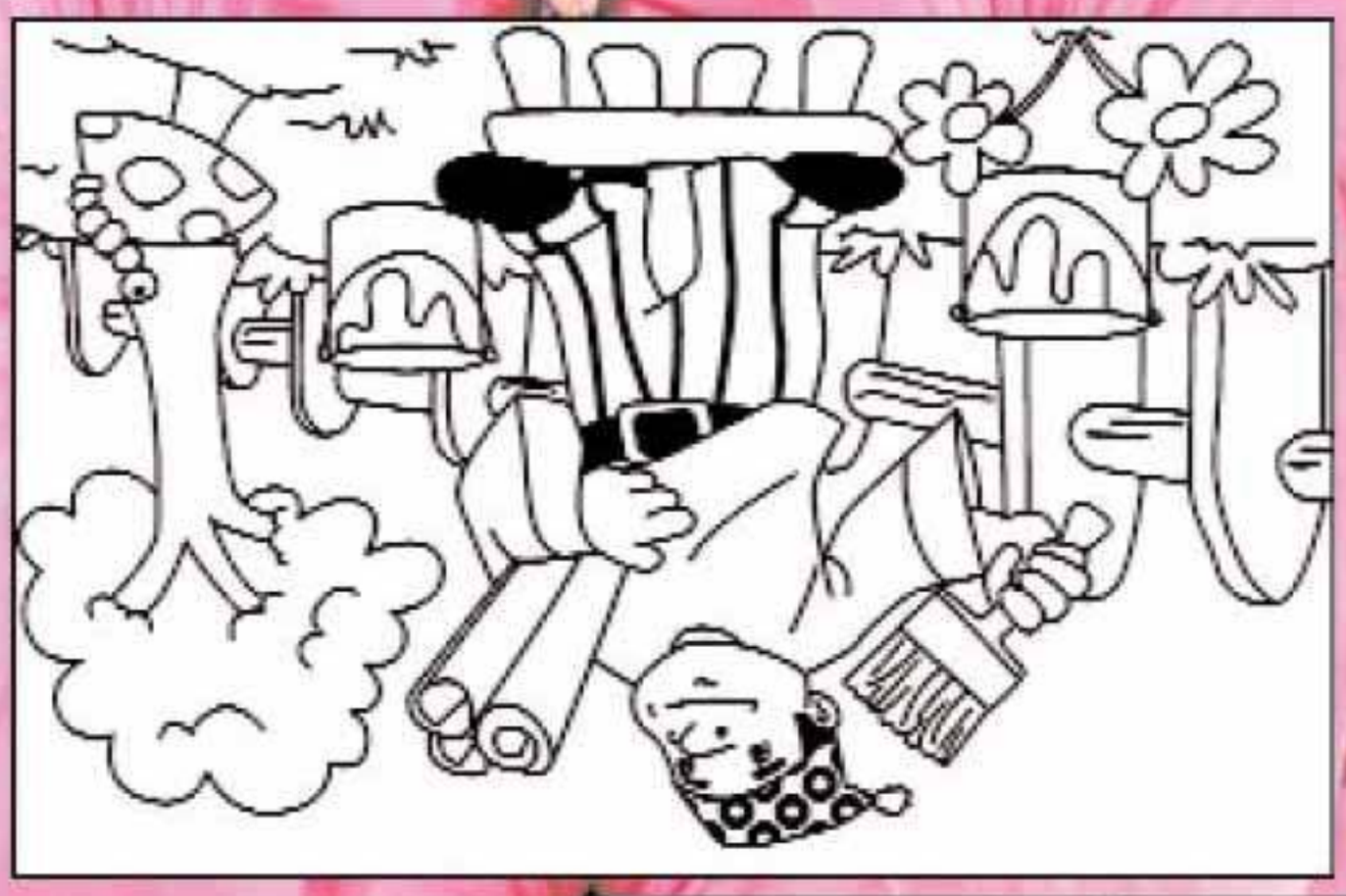

1. आकाश में चिड़िया नही हैं।
2. पीछे उगी झाड़ियां नहीं है।
3. आदमी की टोपी में फुंदना लगा है।
4. कुर्ते के गले में दो लाइन हैं।
5. हाथ में कागज के तीन रोल हैं।
6. पेड़ के तनों में कोटर नही है।
7. मशरूम पर कैटरपिलर है।
8. टेबल के चार पाए हैं।
9. फूल में एक पत्ती ज्यादा है।
10. बाल्टी का रंग ज्यादा बाहर है।

उत्तर

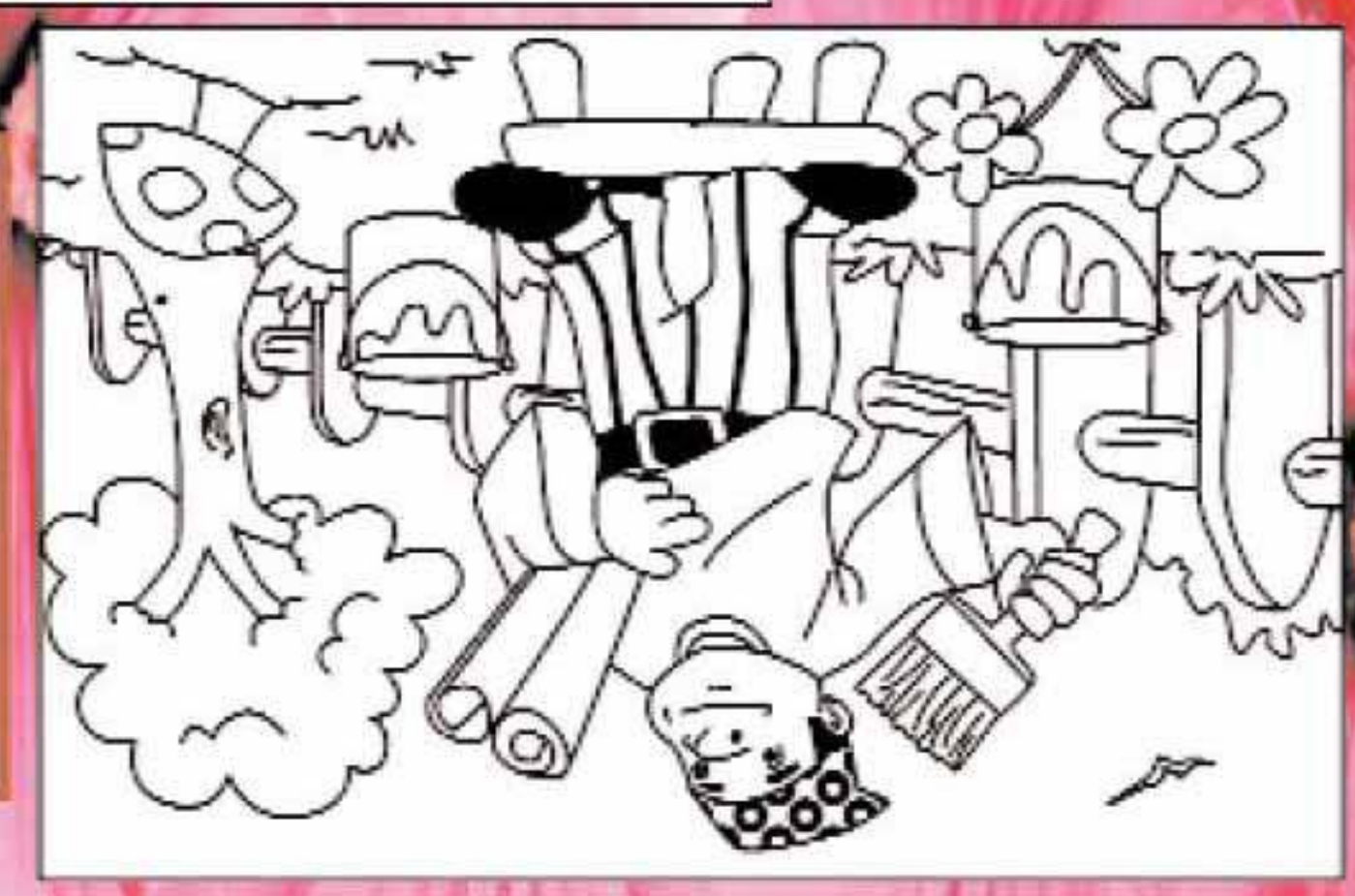

## अंतर
## बताओ

अब तक आपने पढ़ा कि गुलिवर साउथ अफ्रीका की यात्रा पर निकलता है। लेकिन एक ऐसे द्वीप पर पहुंच जाता है, जहां विशाल आकार के लोग रहते हैं। वहां वह एक विशाल आदमी के द्वारा पकड़ लिया जाता है। वह आदमी शहर में उसकी प्रदर्शनी लगाकर पैसा कमाता है। लेकिन इसी बीच वहां के राजा को यह मालूम पड़ जाता है। राजा उसे अपने यहां बुलवा लेता है। उसे अलग से सुसज्जित कमरा रहने के लिए बनवा देता है। कुछ दिनों बाद राजा-रानी समुद्र तट पर घूमने जाते हैं। गुलिवर भी अपने सेवक के साथ विशाल पिंजरेनुमा बॉक्स में बैठ कर जाता है। अब आगे पढ़ें...।

# गुलिवर्स ट्रेवल्स

## तृतीय भाग

Jingle Bell Creations

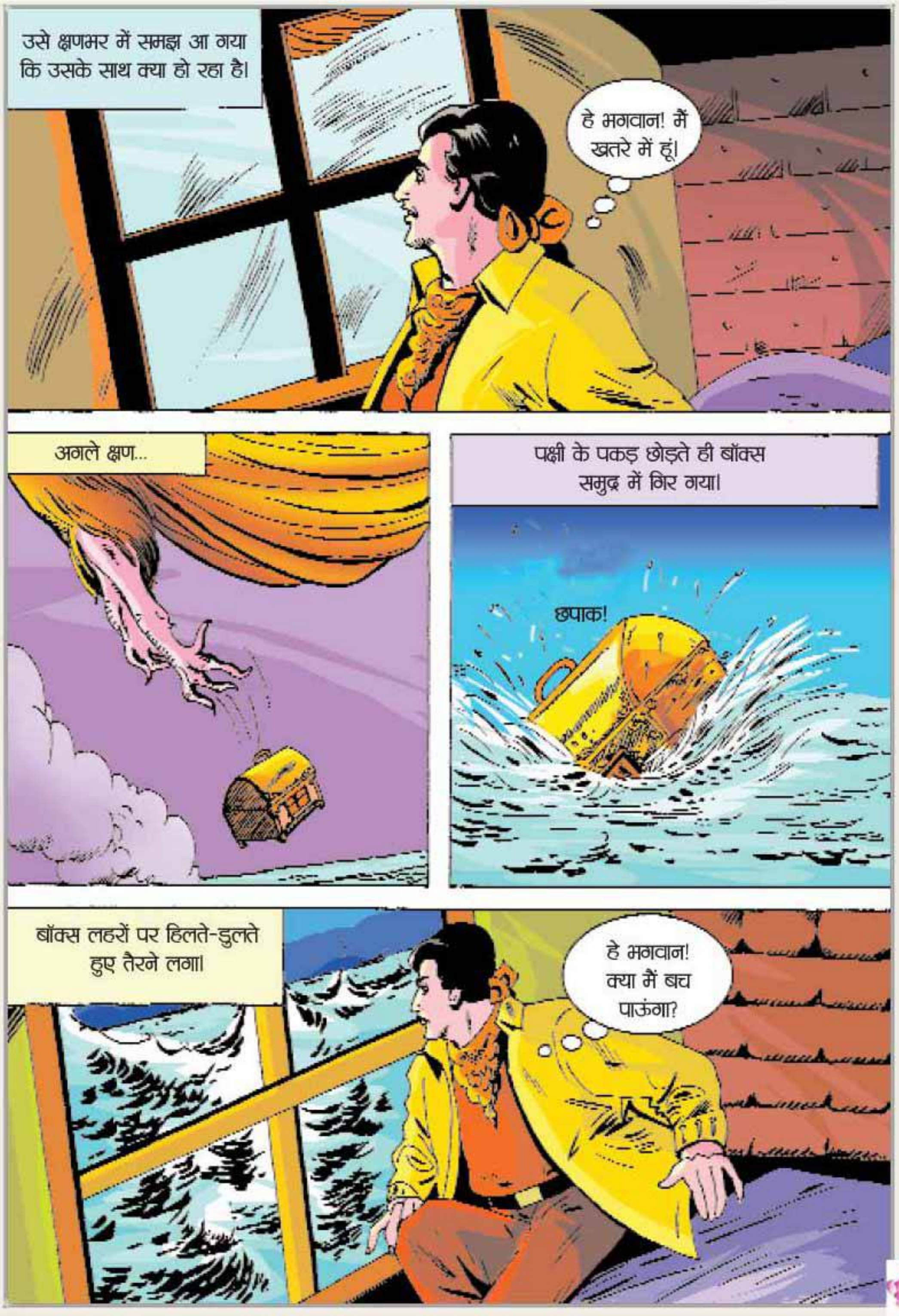

थोड़ी देर बाद, उधर से कुछ नाविक जहाजों से गुजर रहे थे। उन्होंने गुलिवर को बचा लिया।
ओह! मुझे जल्दी से जल्दी घर पहुंचना चाहिए।
गुलिवर घर पहुंचा। लेकिन जल्दी ही उसे होपवेल जहाज से एक अन्य यात्रा पर जाना पड़ा। वे ईस्ट इंडीज पहुंचे।
गुलिवर, तुम्हें इस जहाज से कुछ व्यापारिक कार्य के लिए जाना होगा।
हां, कैप्टन...
तभी एक समुद्री लुटेरों के समूह ने जहाज पर हमला कर दिया।
अपनी जगह से कोई नहीं हिलेगा...।

समुद्री डाकू जहाज से मूल्यवान चीजें लूटकर भाग गये।
मेरी नाव ही अब एकमात्र सहारा है।
बिना किसी लक्ष्य के गुलिवर अपनी नाव पर सवार होकर चलने लगा।
आहा! आखिर एक द्वीप आ ही गया...
भगवान का शुक्र है!
तभी गुलिवर को आभास हुआ कि पहाड़ की छाया जैसा आकारनुमा कुछ हवा में तैर रहा है।
अरे! ऐसा लग रहा है कि उस पर लोग हैं।

अरे... ओ!
गुलिवर उनकी तरफ हाथ हिलाते हुए जोर से चिल्लाया।
जल्दी ही तैरता हुआ द्वीप गुलिवर की तरफ आने लगा।
अरे! ये लोग कौनसी भाषा बोल रहे हैं।
शीघ्र की एक कुर्सी नीचे आयी।
खैर, जो भी हो, मुझे इस कुर्सी पर बैठ जाना चाहिए।

उन लोगों का व्यवहार बहुत ही अजीब था। उनमें से जो मुखिया थे, वे गहन सोच-विचार में लगे हुए थे।
हा-हा...। लगता है मुखिया नौकरों को समझा रहा है कि तुम अपना काम भूल गये हो। यह तो बड़ा मजेदार मामला है।

जब गुलिवर को राजा के सामने लाया गया तो, महाराज खुद भी सोच-विचार में डूब गये।
ये सभी लोग इतने सोच-विचार में क्यों डूबे हुए हैं?

कुछ दिन गुजर गये। एक दिन गुलिवर महाराज की आज्ञा से द्वीप से रवाना हुआ।
आप मुझे एक बार महाराज मुनोदी का महल दिखा लाओ।

गुलिवर वहां चारों ओर सोचनीय मुद्रा में बैठे लोगों को देखकर स्तब्ध रह गया।
ओह! यहां का जीवन बड़ा दयनीय है।
क्या तुम्हें मालूम है, यह भूमि किस प्रकार बर्बाद हो गयी।
इसके बाद गुलिवर महाराज मुनोदी की समृद्ध भूमि पर पहुंच गया।
तुम्हारा स्वागत है दोस्त!
मैं तुम्हें बताऊंगा कि यह सब कुछ बुद्धिमान लोगों की वजह से हुआ है।
ऐसा तभी से हुआ है, जब से ये लोग इस भूमि को स्वर्ग बनाना चाहते थे।

यहां हजारों खोजकर्ता हैं। वे सभी वर्षों से यहां मूर्खतापूर्ण प्रयोग कर रहे हैं।
ये किस पर, क्या प्रयोग करते हैं?
वे ककड़ी से पानी अलग करना और मकड़ी को कपड़े की सिलाई करना सिखाना चाहते हैं।
घर बनाने से पहले छत बनाना चाहते हैं...।
अब तक उनका एक भी प्रयोग सफल नहीं हुआ है।

गुलिवर वहां की भूमि को देखकर काफी खिन्न था कि खोजकर्त्ताओं ने इसे बर्बाद कर दिया।
ओह! काश, मैं इसे वापस इंग्लैण्ड को लौटा सकता।
क्या मैं आपका यह खच्चर ले सकता हूं।
गुलिवर खच्चर लेकर समुद्र तट की ओर रवाना हुआ।
जैसे ही वह बंदरगाह पर पहुंचा।
अब तो इंग्लैण्ड के लिए जहाज कुछ महीनों के बाद ही जाएगा।
खैर, आप काफी दूर से आये हो। क्या यहां पास ही स्थित द्वीप पर भ्रमण करने नहीं जाओगे?
ठीक है...

हा...हा...क्या तुम्हें जादूगरों का द्वीप नहीं मालूम?
ठीक है! मैं वहां जरूर जाऊंगा।
जादूगर द्वीप के गवर्नर ने गुलिवर का स्वागत किया।
गुलिवर को बैठने के लिए आसन देने के बाद, उसने एक इशारा किया। अचानक कुछ आत्माएं प्रकट हुईं।
जल्दी से हमारे मेहमान को कुछ पीने के लिए परोसो।

गवर्नर महाशय, क्या यहां ये सभी आत्माएं ही सारा काम करती हैं? वास्तव में बहुत आश्चर्यजनक है।
हा...हा...आश्चर्य वाली कोई बात नहीं है। मेरे बुलाने पर खतरनाक से खतरनाक आत्मा भी यहां उपस्थित हो जाती है।
गुलिवर ने वहां शताब्दियों से रह रहीं आत्माओं को भी देखा।
राजा सिकन्दर, होमर, अरस्तु...
गवर्नर महोदय, क्या मैं इन महान आत्माओं से बात कर सकता हूं?
हां, अवश्य! किसी भी विषय के बारे में बात कर सकते हो।

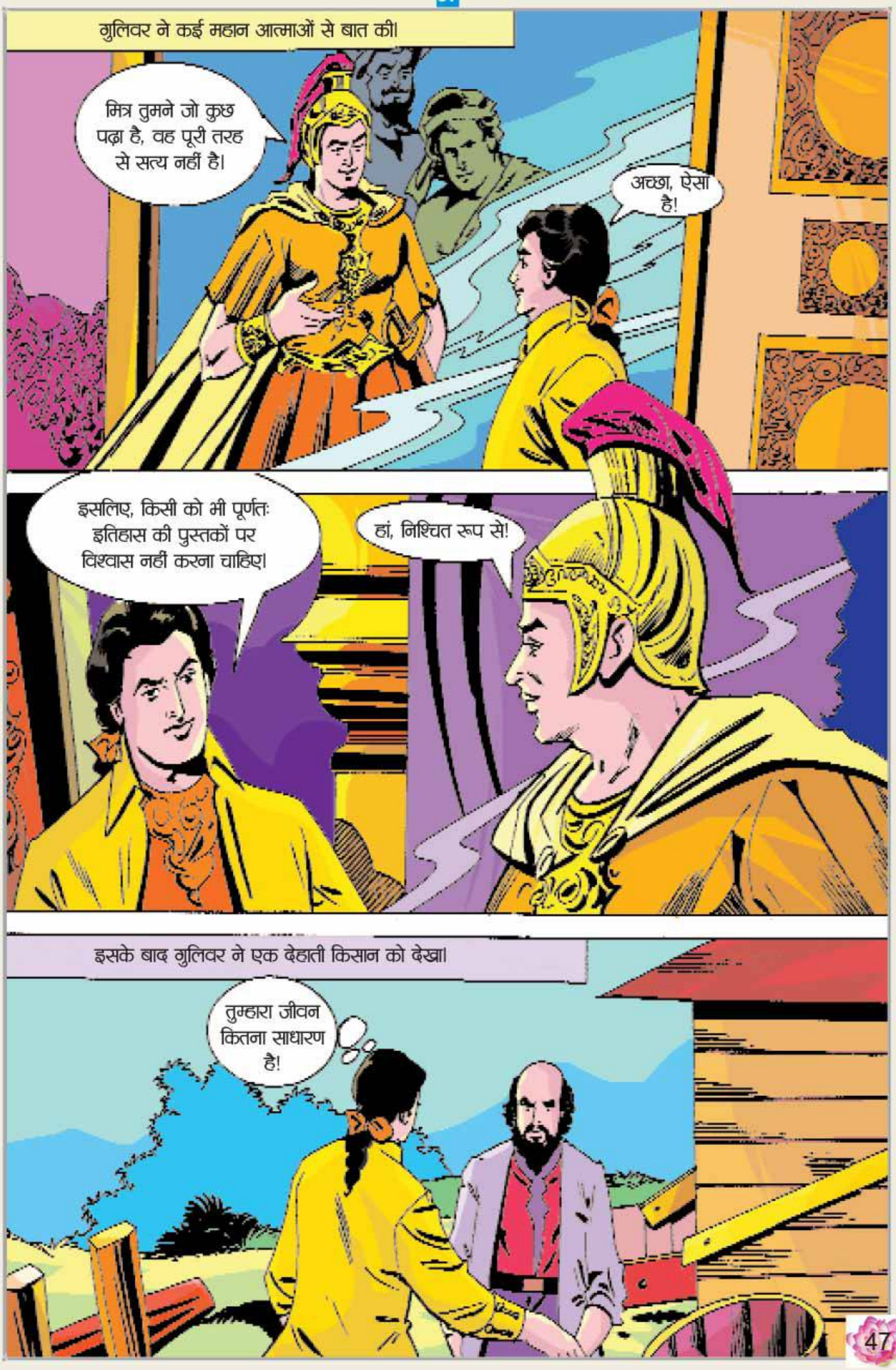
गुलिवर ने कई महान आत्माओं से बात की।
मित्र तुमने जो कुछ पढ़ा है, वह पूरी तरह से सत्य नहीं है।
अच्छा, ऐसा है!
इसलिए, किसी को भी पूर्णतः इतिहास की पुस्तकों पर विश्वास नहीं करना चाहिए।
हां, निश्चित रूप से!
इसके बाद गुलिवर ने एक देहाती किसान को देखा।
तुम्हारा जीवन कितना साधारण है!

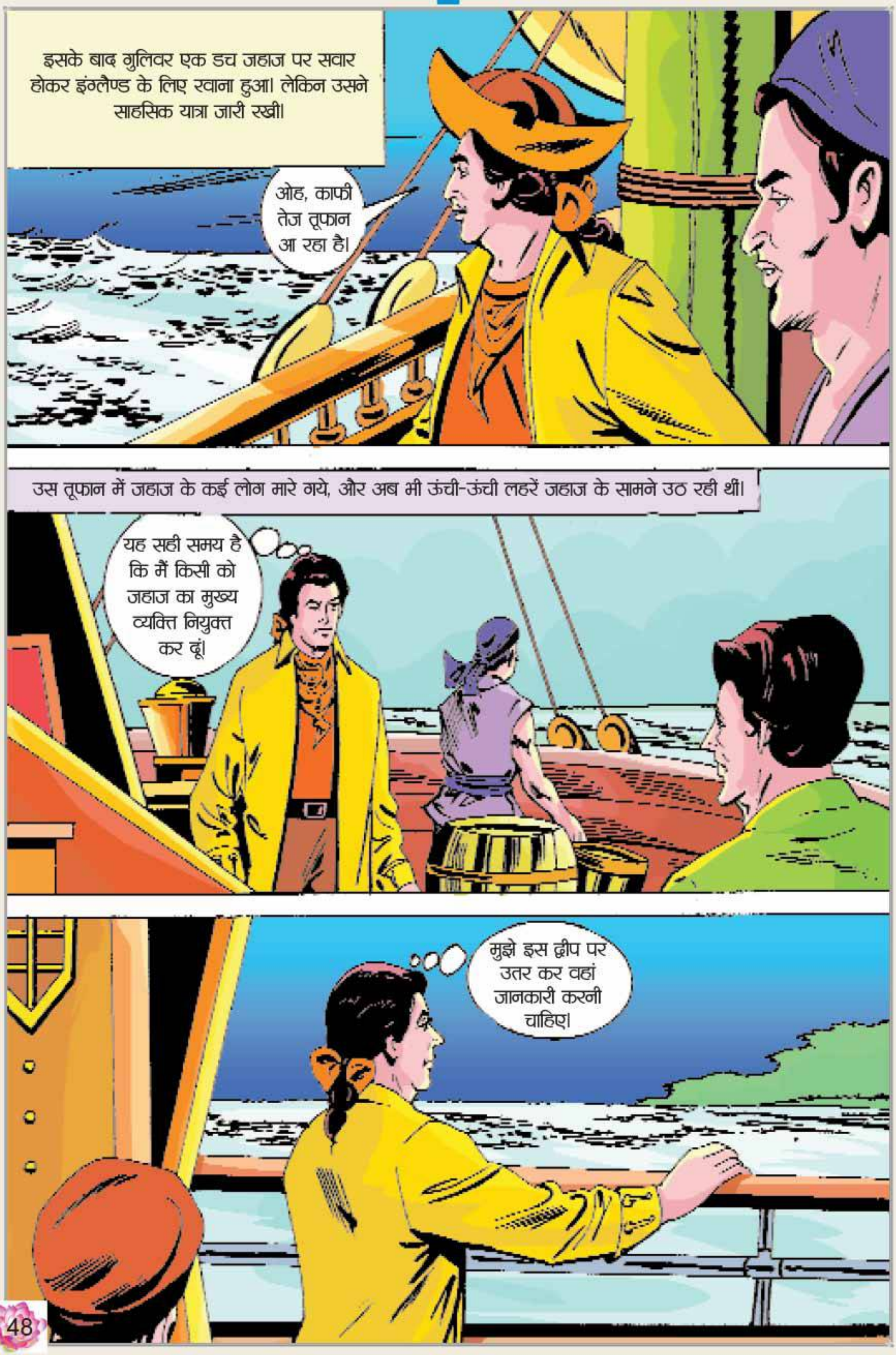
इसके बाद गुलिवर एक डच जहाज पर सवार होकर इंग्लैण्ड के लिए रवाना हुआ। लेकिन उसने साहसिक यात्रा जारी रखी।
ओह, काफी तेज तूफान आ रहा है।
उस तूफान में जहाज के कई लोग मारे गये, और अब भी ऊंची-ऊंची लहरें जहाज के सामने उठ रही थीं।
यह सही समय है कि मैं किसी को जहाज का मुख्य व्यक्ति नियुक्त कर दूं।
मुझे इस द्वीप पर उतर कर वहां जानकारी करनी चाहिए।

गुलिवर की यह रोमांचक यात्रा अब बेहद दिलचस्प हो चली थी। आगे भी उसकी यह यात्रा इसी तरह रोचक और रोमांचक बनी रहेगी, या वह किसी विपत्ति में फंस सकता है....! अगले अंक के समापन भाग में इन सबका खुलासा होगा।

*(अगले अंक में समाप्य)*

art junction

# सूखी पत्तियों का कमाल

**सामग्री :** सभी तरह की सूखी पत्तियां, फेविकोल, ड्रॉइंगशीट।

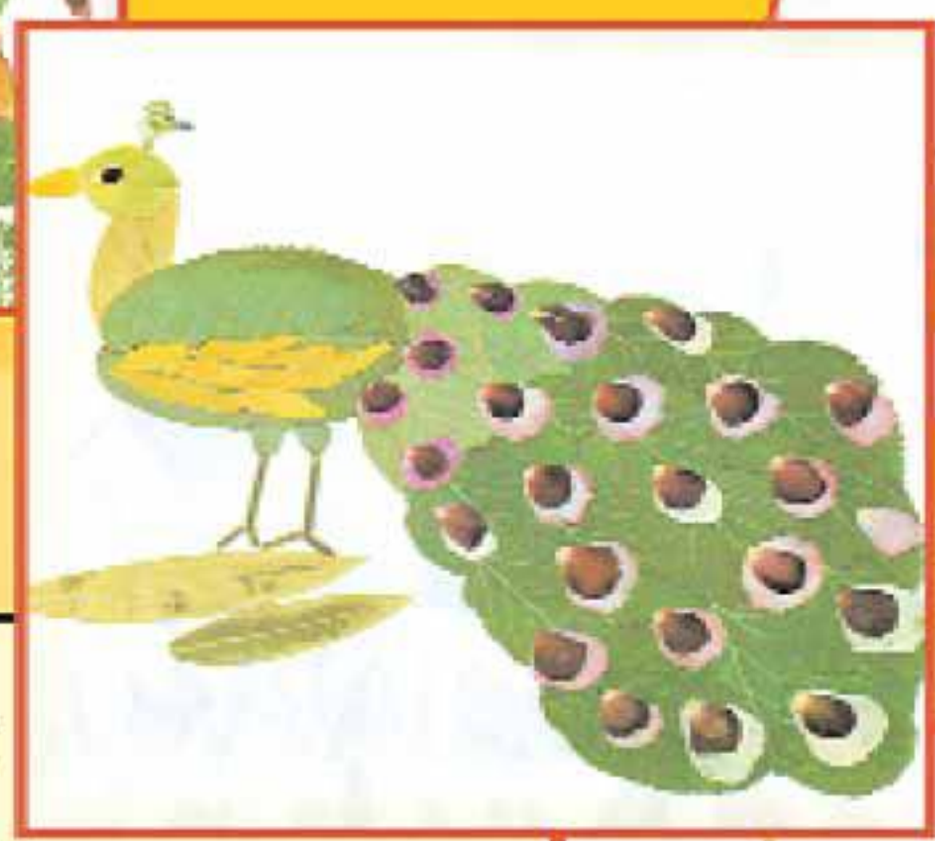

**विधि** : ड्रॉइंगशीट को चौकोर या लंबा जैसा भी आप चाहें काट लें। सूखी पत्तियों को दिखाए गए चित्रानुसार चिपकाकर जानवर, पक्षी बनाइए। आप चाहें तो अपने मन से भी बना सकते हैं। शीट पर चिपकाने के बाद इन्हें डार्क कलर के वैलवेट शीट पर फ्रेम करवा कर अपने ड्रॉइंगरूम में लगाएं।

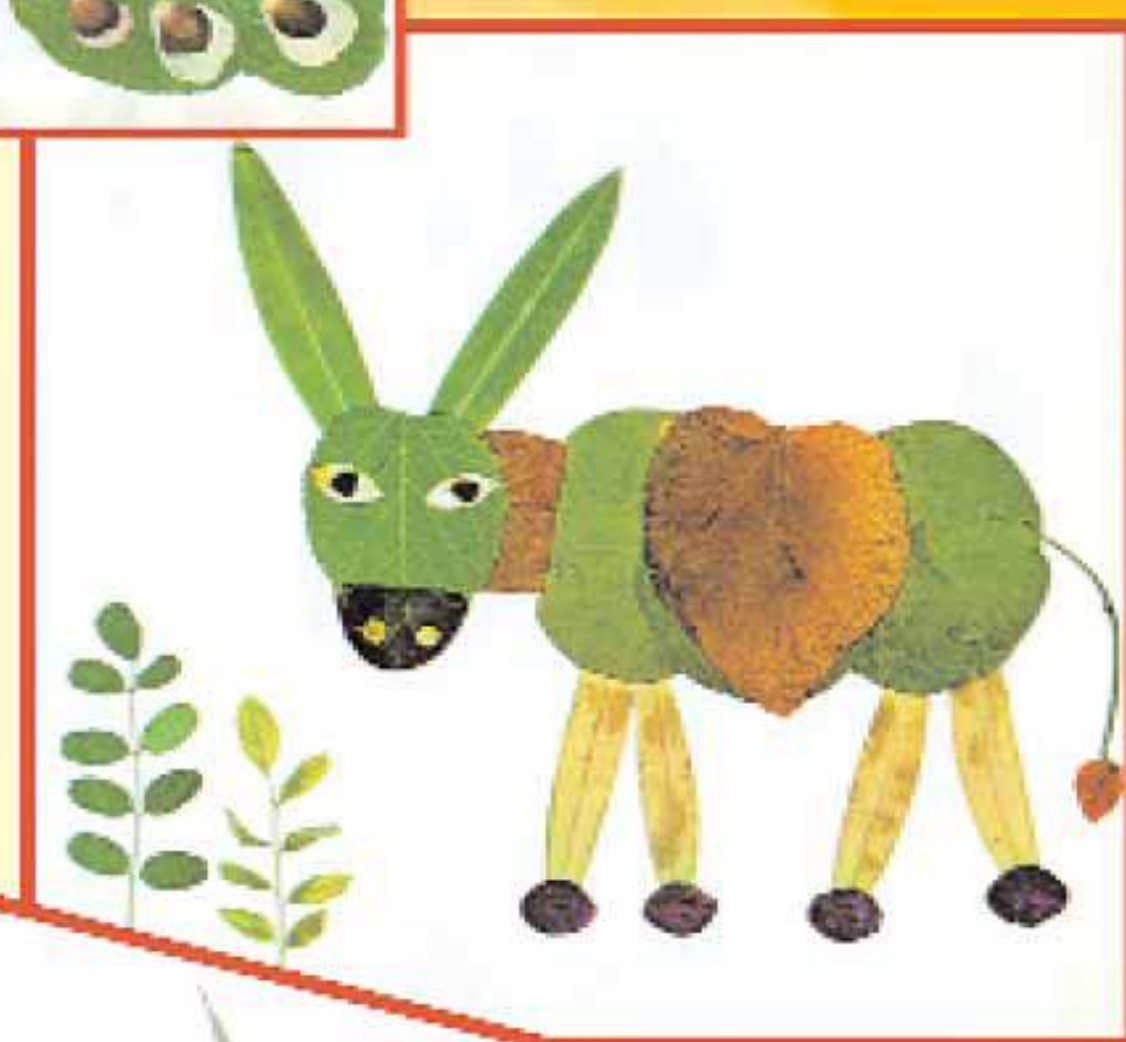

# माथापच्ची

**A.** कितने गुब्बारे उड़ रहे हैं?

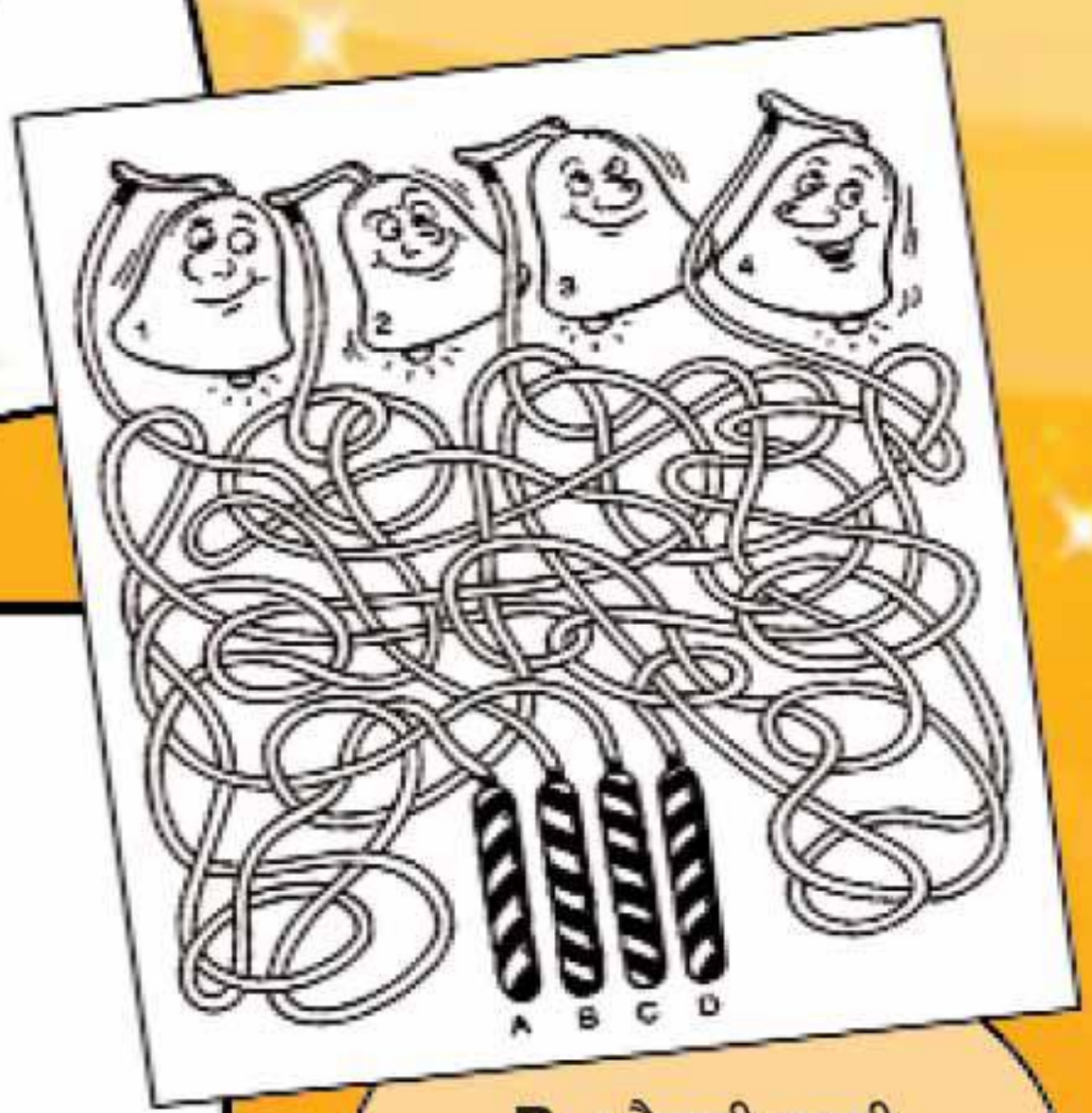


**B.** कौनसी रस्सी में किस नंबर की घंटी बंधी है?

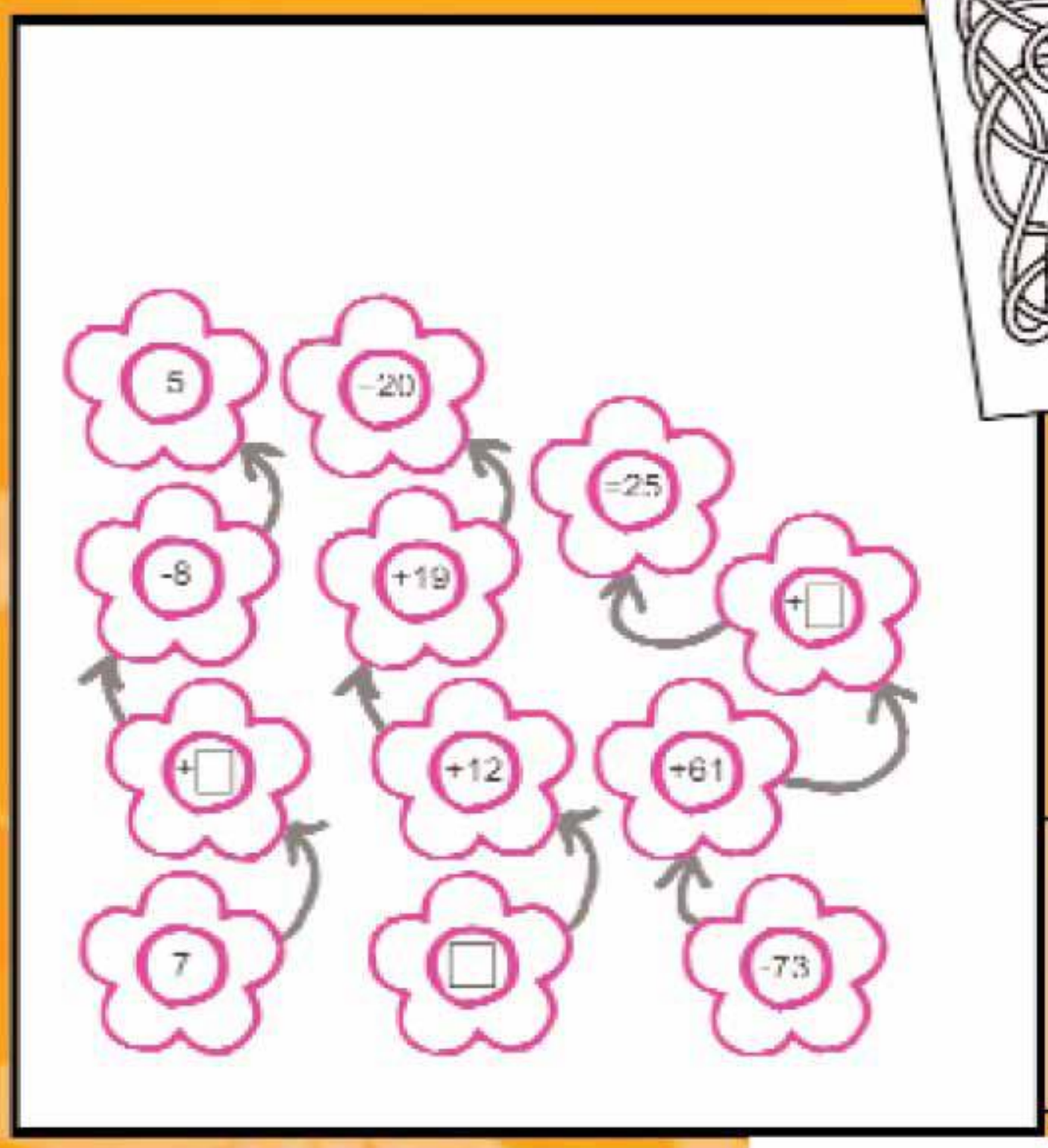


**C.** जोड़-बाकी करके देखो, खाली बॉक्स में कौनसी संख्या आएगी?

उत्तर

**A.** 23
**B.** D=1, A=3, B=4, C=2
**C.** 1-6, 2-11, 3-37
**E.** 54
**F.** LEAVE US SOME CRUMBS

**D.** नीचे लिखी स्पेलिंग ढूंढिए।

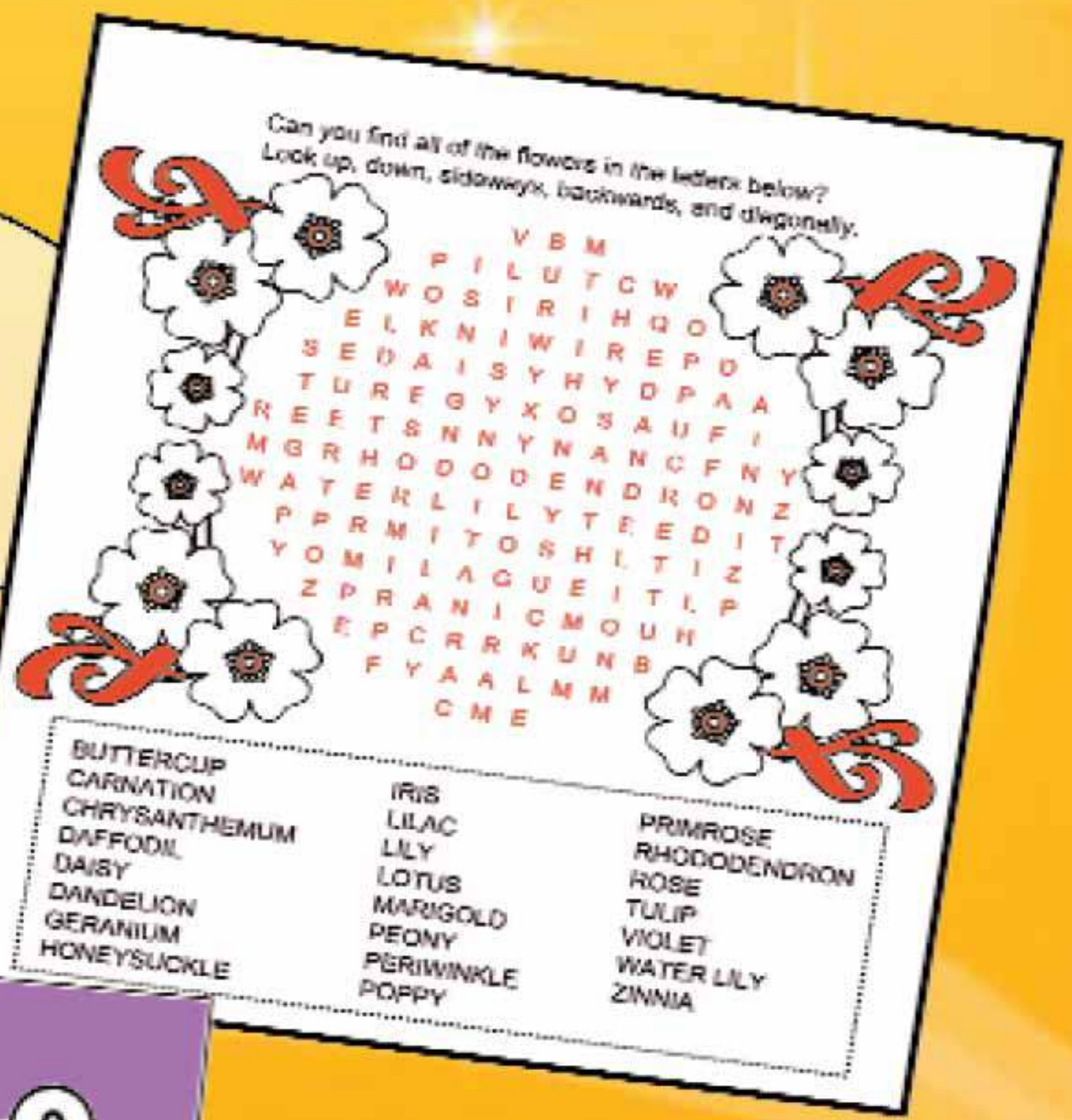


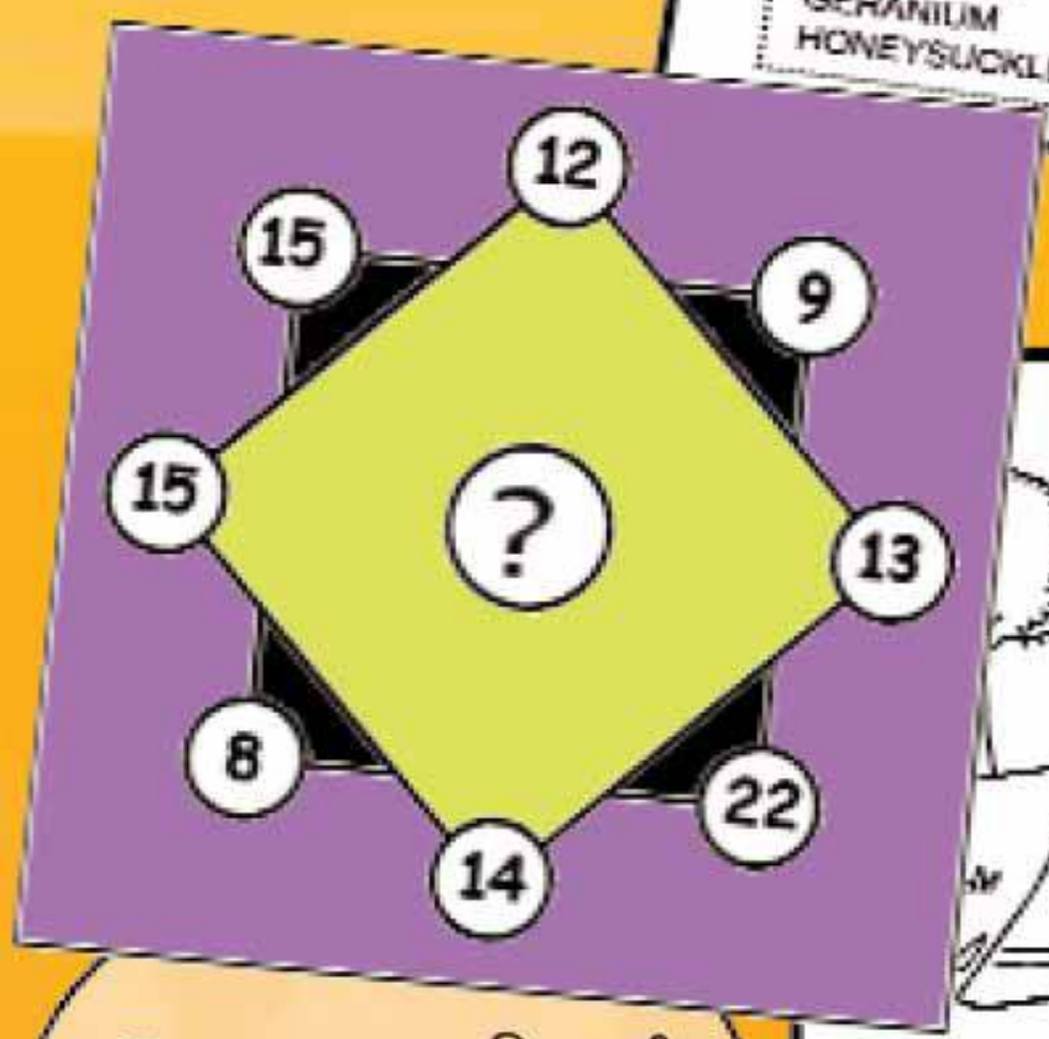


**E.** प्रश्नवाचक चिह्न की जगह कौनसी संख्या आएगी।

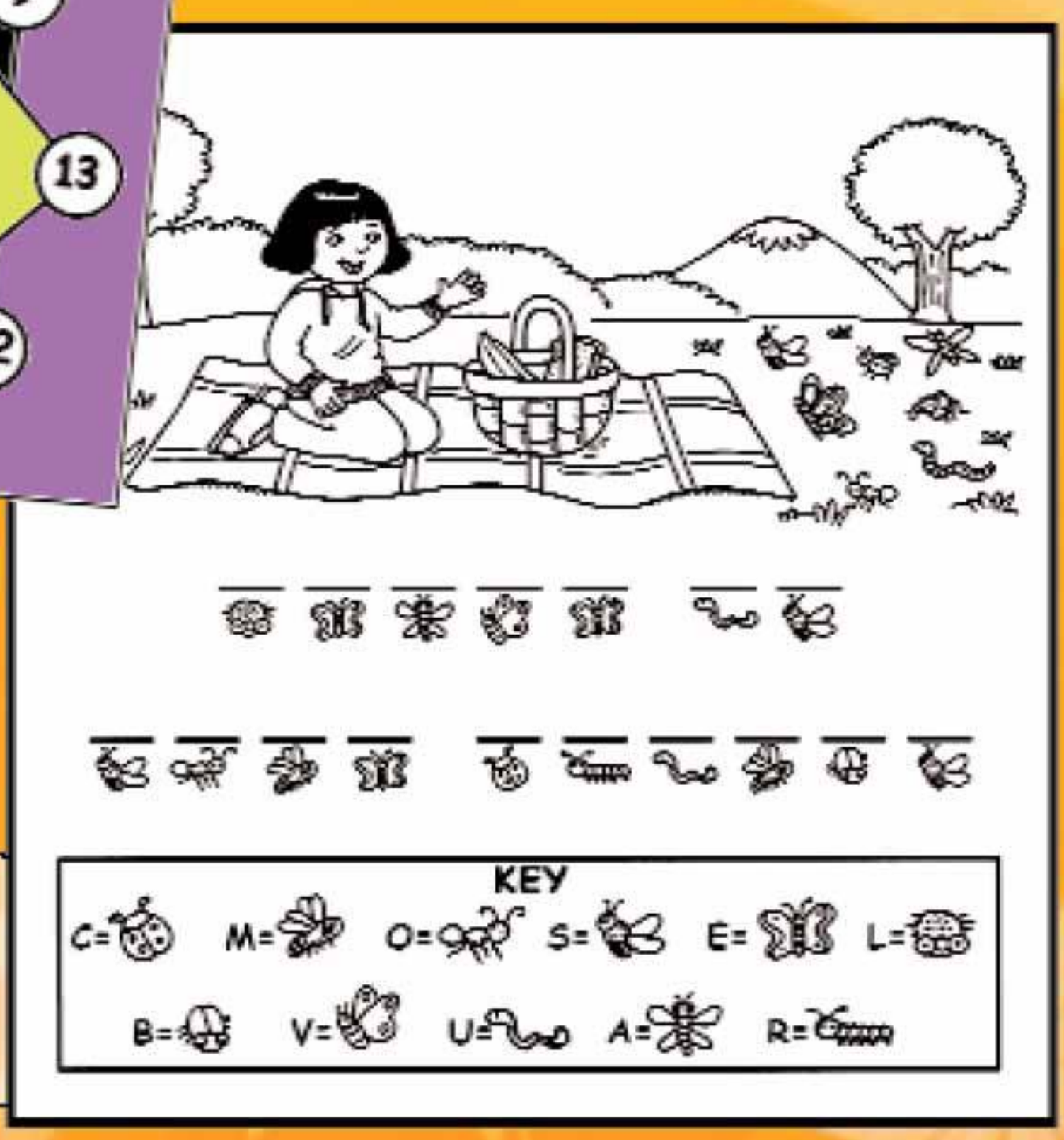


**F.** कोड-वर्ड पता कीजिए।

KIDS' CLUB

**सूर्यमणि व्यास**
उम्र- 14 वर्ष
स्थान-मानसर खेड़ी (राज.)
रुचि-पढ़ना, लिखना।

**रमेश**
उम्र- 13 वर्ष
स्थान-महेन्द्रगढ़ (हरियाणा)
रुचि-पढ़ना, ड्रॉइंग।

**निधि राजभर**
उम्र- 10 वर्ष
स्थान-देवरिया (उ.प्र.)
रुचि-पढ़ना, पेंटिंग।

**सौरभ कुमार**
उम्र- 14 वर्ष
स्थान-फतेहपुर (बिहार)
रुचि-पढ़ना, पेंटिंग।

**बुधाराम विश्नोई**
उम्र- 14 वर्ष
स्थान-सांचौर (राज.)
रुचि-पढ़ना, क्रिकेट।

**विकास चौधरी**
उम्र- 14 वर्ष
स्थान-इलाहाबाद (उ.प्र.)
रुचि-क्रिकेट, कम्प्यूटिंग।

**विनेश कुमावत**
उम्र- 14 वर्ष
स्थान-चौमूं, जयपुर
रुचि-क्रिकेट, पढ़ना।

**सुरेश चौधरी**
उम्र- 14 वर्ष
स्थान-बाड़मेर (राज.)
रुचि-पढ़ना, खेलना।

**निधि माहेश्वरी**
उम्र- 13 वर्ष
स्थान-चौमूं, जयपुर
रुचि-पढ़ना, पेंटिंग।

**काव्या सिंह**
उम्र- 5 वर्ष
स्थान-बीकानेर (राज.)
रुचि-डांसिंग, पढ़ना।

**शोभित सिंघल**
उम्र- 14 वर्ष
स्थान-उदयपुर (राज.)
रुचि-क्रिकेट, पढ़ना।

**रमेश परिहार**
उम्र- 13 वर्ष
स्थान-बाड़मेर (राज.)
रुचि-पढ़ना, खेलना।

**हितेषी जैन**
उम्र- 10 वर्ष
स्थान-सलुम्बर (राज.)
रुचि-पढ़ना, पेंटिंग।

**अश्विन पुरोहित**
उम्र- 9 वर्ष
स्थान-गोटन, नागौर
रुचि-पढ़ना, क्रिकेट।

**सिद्धार्थ मिश्रा**
उम्र- 8 वर्ष
स्थान-फैजाबाद (उ.प्र.)
रुचि-खेलना,पढ़ना।

**कशिश सिंघल**
उम्र- 9 वर्ष
स्थान-जयपुर (राज.)
रुचि-पढ़ना, डांसिंग।

# बिंदु से बिंदु

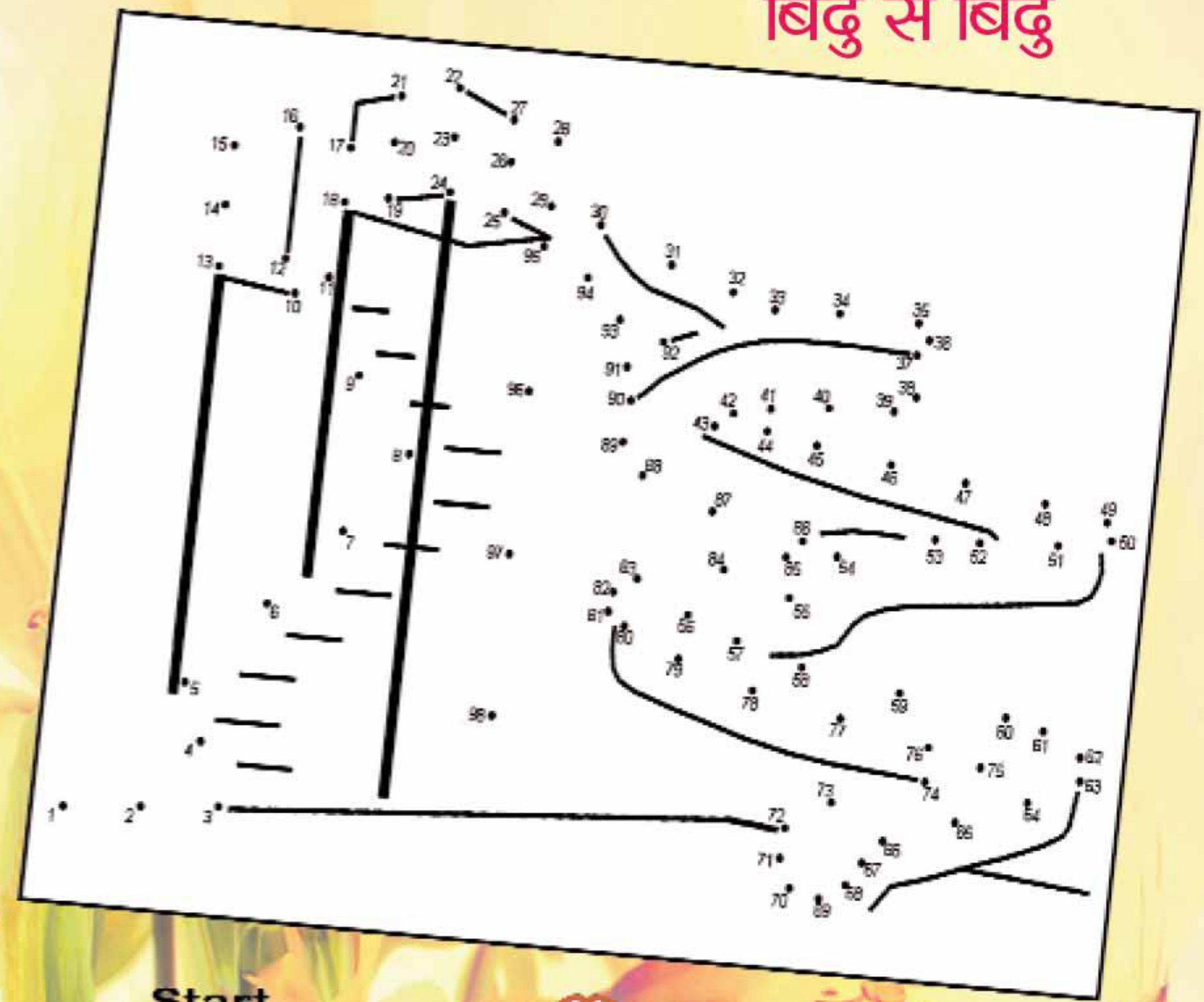

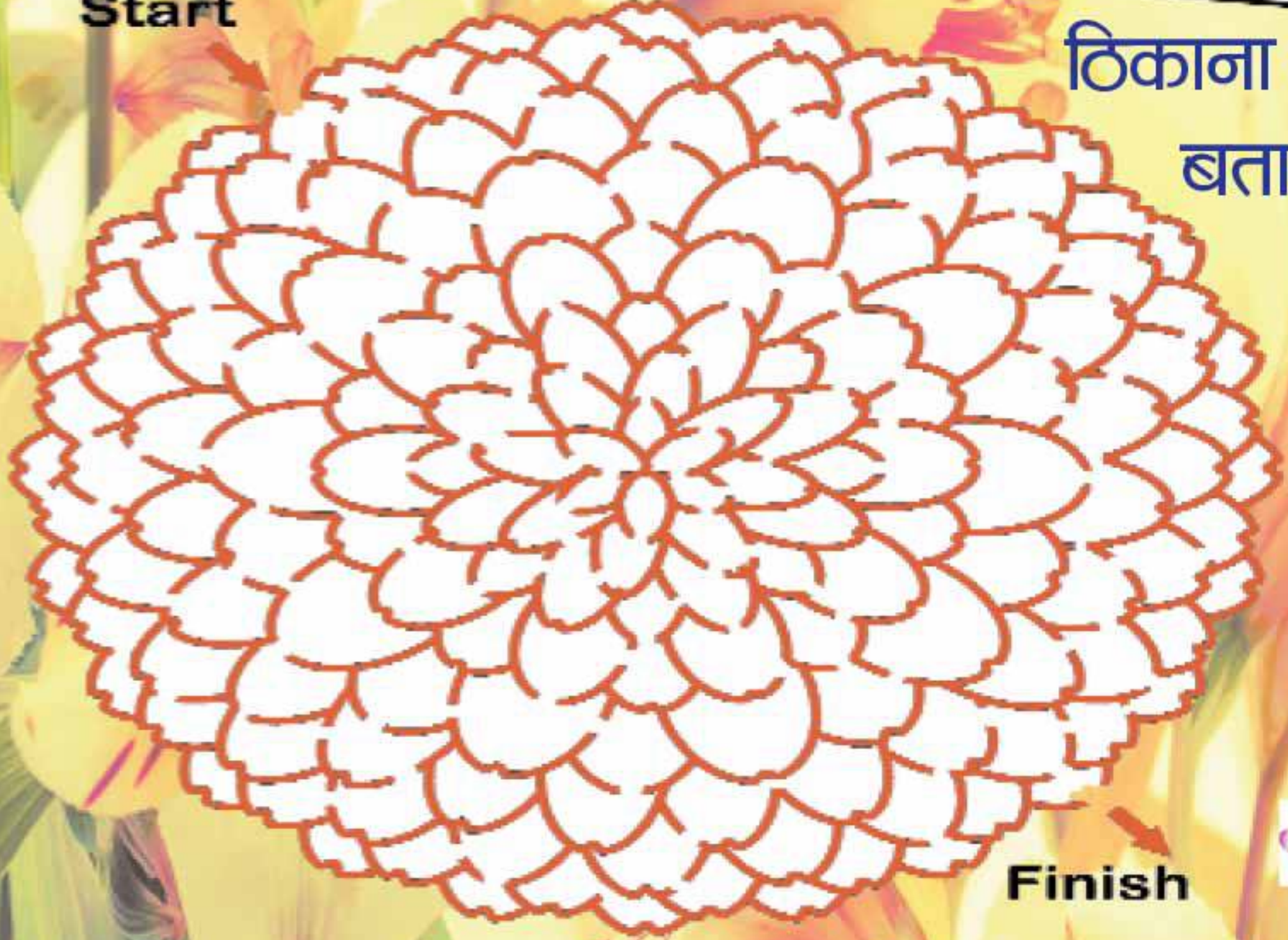


ठिकाना तो बताना

# जानवरों के बारे में मिथक

कई बार तथ्य को कल्पनाओं से अलग करना बहुत ही मुश्किल हो जाता है। खासतौर पर जब इन मिथकों में जानवरों का जिक्र हो। उनका व्यवहार रहस्यमय हो सकता है, इसलिए इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि अगर इनमें से कुछ को लेकर अटकलें लगाई जाएं। जानवरों से जुड़े इन मिथकों पर नजर डालिए और पता लगाइए कि इनमें से कौन-सा मिथक सच है और कौन-सी बातें महज अफवाहें हैं।

## क्या ऊंट सचमुच अपने कूबड़ में पानी सुरक्षित करता है?

**एक** ऊंट पानी के बगैर सात दिनों तक जीवित रह सकता है, लेकिन इसलिए नहीं कि वह अपने कूबड़ में पानी सुरक्षित कर लेता है। वे पानी की कमी से खुद को बचा पाने में समर्थ होते हैं। एक वजह है, जिससे ज्यादातर जानवर मारे जाते हैं, इसकी वजह अंडाकार लाल रक्त-कणिकाएं हैं। जबकि आमतौर पर मानक आकार गोलाकार होता है। जहां तक कूबड़ की बात है यह सिर्फ वसा का बड़ा स्तूप होता है। हालांकि यह इस लिहाज से काम का है कि यह गोलाकार आकृति ऊंटों को तीन सप्ताह के खाने के बराबर ऊर्जा देता है। यह ऊंट के गुर्दे और आंत का कमाल होता है जो पानी को बचाने में उसकी मदद करता है। ये अंग इतने प्रभावी होते हैं जिसकी वजह से ऊंट का मूत्र बहुत ही गाढ़ा और मल बिल्कुल सूखा होता है।

*मिथक निर्णय:* ***गलत***

## एक हाथी कभी कुछ नहीं भूलता

**यह** बात दिमाग में इस तथ्य से भी आती है कि जमीन पर पाए जाने वाले जानवरों में से हाथी का दिमाग सबसे बड़ा होता है, और इसीलिए जितना अधिक वजन, याददाश्त भी उतनी ही बेहतर होगी। हाथियों के पास उनके घर के आसपास के पूरे इलाके का मानसिक मानचित्र रखने की क्षमता होती है, जिसका आकार एक द्वीप के बराबर हो सकता है। हाथी मंडलियों में यात्रा करते हैं और जब उनका समूह बहुत ही बड़ा हो जाता है, सबसे बड़ी हाथिनी अपने समूह को छोड़ देती है। लेकिन फिर भी वह अपने रास्ते को कभी नहीं भूलती।

*मिथक निर्णय:* ***सही***

## मगरमच्छ रोते हैं

**अक्सर** नकली भावनाओं को जाहिर करने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली कहावत का संबंध दरअसल एक प्राचीन कथा से है, जिसमें मगरमच्छ अपने शिकार को ललचाने और मारने के लिए रोता है।

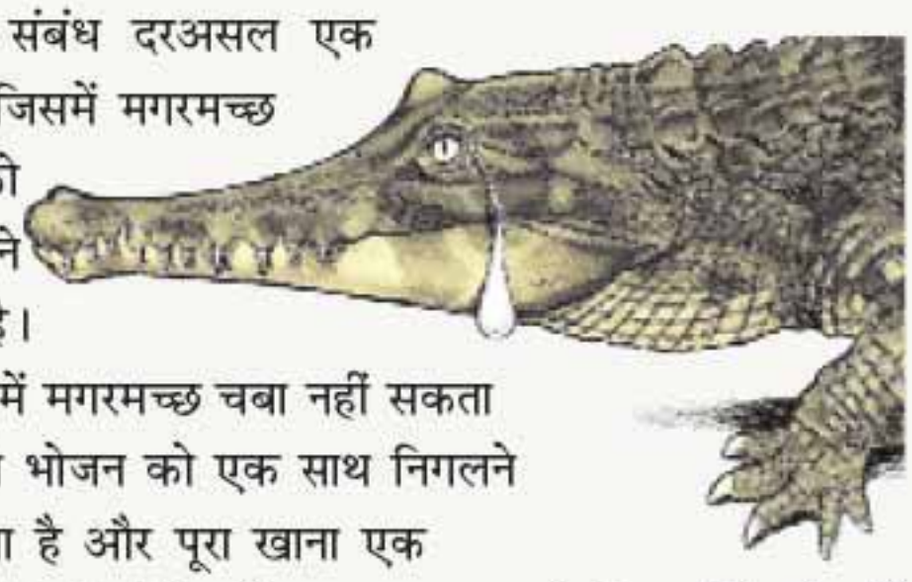

लेकिन वास्तविकता में मगरमच्छ चबा नहीं सकता है इसलिए वह अपने भोजन को एक साथ निगलने के लिए मजबूर होता है और पूरा खाना एक साथ चट कर जाता है। इसे संयोग ही कहा जा सकता है कि आंखों को नमी देने वाली कोशिकाएं उसके गले के पास ही होती है, इसलिए उनकी खाने की आदत की वजह से उनकी आंखों में आंसू आ जाते हैं।

*मिथक निर्णय:* ***सही***

## ग्राउंडहॉग्स वसंत के आगमन की भविष्यवाणी कर सकता है

**यह** अकेला ऐसा स्तनपायी है जिसके अपने नाम पर इसका दिन होता है, और जैसे-जैसे दिन बढ़ते हैं ग्राउंडहॉग नींद से उठ जाता है। अगर उसे अपनी परछाई नजर आती है तो इसका सीधा मतलब होता है कि छह हफ्ते की सर्दियां बाकी हैं, और अगर ऐसा नहीं होता है तो इसका मतलब वसंत ऋतु बस शुरू होने वाली है। असलियत में ग्राउंडहॉग्स छह महीने के सोने की तैयारी करता है और रोजाना अपने वजन का करीब एक-तिहाई हिस्सा खाता है। जब वे उठते हैं तो दरअसल रोशनी और तापमान में होने वाले बदलावों के प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर रहे होते हैं। ये दोनों कारक भविष्यवाणी सुनिश्चित करने में मददगार होते हैं।

*मिथक निर्णय:* ***सही***

# एक बूढ़े कुत्ते को नई करामातें नहीं सिखा सकते

**सिर्फ** इसलिए कि कुत्ते की उम्र बढ़ गई है, इसका मतलब यह नहीं है कि वह कोई एक या दो नई चीज नहीं सीख सकता है। दरअसल दो सप्ताह तक प्रतिदिन 15 मिनट के प्रशिक्षण की मदद से सबसे अड़ियल कुत्ता भी बैठना, रुकना, चालाकी या घूमना सीख सकता है। भले ही उसकी उम्र कुछ भी हो।

*मिथक निर्णय: **गलत***

# क्या चमगादड़ वाकई अंधे होते हैं?

**यह** कहावत हर दिन की बातचीत का हिस्सा बन चुका है। और यह मान्यता संभवत: इसलिए विकसित हुई है, क्योंकि चमगादड़ अंधेरे में रास्ता तलाशने और बाधाओं को दूर करने के लिए सोनार के एक तरीके का इस्तेमाल करता है। हालांकि उनकी आंखें छोटी और कई बार कम विकसित होती हैं लेकिन वे पूरी तरह काम करती हैं। यहां इस बात का जिक्र करने की जरूरत नहीं है कि उसके पास सुनने और सूंघने की बेहतरीन क्षमता होती है।

*मिथक निर्णय: **गलत***

**नीचे दिये गए सवाल का सही जवाब दें, और एनिमल प्लेनेट से इनाम पाएं।**

- ग्राउंडहॉग हाइबरनेशन (सुप्तावस्था) ने अमेरिका में ग्राउंडहॉग दिवस की परम्परा शुरू की थी। यह दिवस किस दिन हर साल मनाया जाता है?

(A) 2 सितम्बर (B) 2 फरवरी
(C) 12 मार्च (D) 12 फरवरी

Name.....
Address.....
City.....Pin.....Phone.....
Date of birth...../...../ .....
Email id.....

*एंट्री फॉर्म को पूरा भरें और इसे इस पते पर भेज दें-*

**Animal Planet- Balhans Contest**
P.O. Box No. 10534, New Delhi- 110 067

*जानवरों के बारे में और खास बातें जानने के लिए एनिमल प्लेनेट पर हर शाम 8 बजे देखें- वॉक विद द वाइल्ड।*

**पिछली बार पूछे गए सवाल कि कौन-सी मछली पानी के बाहर सांस नहीं ले सकती, का सही जवाब है- इपैलुएट शार्क।**

**शर्तें :** कृपया प्रवेश पत्र में अपने विवरण भरें, सही जवाबों पर निशान लगाएं और ऊपर दिये गए पते पर सामान्य डाक से भेजें। इस प्रतियोगिता के छपने के दस दिन के अंदर डिस्कवरी कम्यूनिकेशन्स इंडिया (डीसीआईएन) द्वारा प्राप्त सही एंट्रियों में से विजेताओं का चुनाव किया जाएगा। यदि कई एंट्री सही निकलती हैं, तो डीसीआईएन किन्हीं पांच प्रतियोगियों को रैंडम आधार पर चुनेगा और उन्हें विजेता घोषित करेगा। विजेताओं और प्रतियोगिता के नियमों के सिलसिले में डीसीआईएन का फैसला अंतिम और बाध्य होगा। इस प्रतियोगिता से जुड़े सारे नियम जानने के लिए कृपया देखें।

www.discoverychannel.co.in/animalplanet-balhans contest

# रंग दे प्रतियोगिता परिणाम

## दिसम्बर द्वितीय, 2014

1. **राजकुमार सोनी**, गोमो, धनबाद (झारखंड)
2. **आयुषी गौतम**, कटनी (म.प्र.)
3. **श्यामल कुमार सिन्हा**, हीरापुर, धनबाद (झारखंड)
4. **आशना महाजन**, आगर मालवा (म.प्र.)
5. **राजवीर राज**, पटना (बिहार)
6. **मुदित जैन**, भरतपुर (राज.)
7. **चेष्टा कुमावत**, अजमेर (राज.)
8. **लीना शर्मा**, भरतपुर (राज.)
9. **अविशन बिष्ट**, जयपुर (राज.)
10. **आंचल मिश्रा**, नरहरपुर, सुल्तानपुर (उ.प्र.)

*(विजेताओं को सौ-सौ रुपए पुरस्कारस्वरूप भेजे जा रहे हैं)*

## सराहनीय प्रयास

1. **निकिता महरवाल**, शिकारपुरा (राज.)
2. **कोमल कुमारी**, आधारपुर (बिहार)
3. **कुमार वैभव**, सोहसराय (बिहार)
4. **राजश्री पारीक**, श्रीगंगानगर (राज.)
5. **हनी जाजू**, सूरत (गुजरात)
6. **शशांक शेखर**, पटना (बिहार)
7. **गणेश कुमार शर्मा**, सहारनपुर
8. **रुचिता सिसोदिया**, झालावाड़ (राज.)
9. **हिमानी गुप्ता**, हनुमानगढ़ (राज.)
10. **पीयूष मिश्रा**, रनापुर (उ.प्र.)
11. **रवि शर्मा**, प्रतापगढ़ (उ.प्र.)
12. **उत्कर्ष कुमार**, भोजपुर (बिहार)
13. **अंशिका आनंद**, महेन्द्रू, पटना (बिहार)
14. **ममता गुर्जर**, जयपुर (राज.)
15. **अंकिता रस्तोगी**, पटना (बिहार)

## ज्ञान प्रतियोगिता- 364 का परिणाम

1. **दिशा सोमवंशी**, रीवा (म.प्र.)
2. **पुष्कल शर्मा**, अबोहर, फाजिल्का (पंजाब)
3. **सौम्या गहलोत**, इंदौर (म.प्र.)
4. **सौरभ शर्मा**, किला छावनी, बरेली (उ.प्र.)
5. **देवेन जोशी**, नारायणगढ़, अंबाला (हरियाणा)
6. **धैर्या शर्मा**, एटा (उ.प्र.)
7. **सौम्या गुप्ता**, मथुरा (उ.प्र.)
8. **उदय यादव**, दरजीपुरा, बडोदरा (गुजरात)
9. **अनुराधा शर्मा**, जयपुर (राज.)
10. **श्रवण प्रजापत**, जोधपुर (राज.)

**ज्ञान प्रतियोगिता- 364 का सही हल**

चर्च
1. छह
2. प्लस 91
3. महाविद्यालय
4. चिड़ियाघर
5. एक हजार

*(विजेताओं को सौ-सौ रुपए पुरस्कारस्वरूप भेजे जा रहे हैं)*

***विशेष:*** कृपया अपना पता पूरा लिखें। पिनकोड नंबर अवश्य लिखें।
बिना पिनकोड के प्रविष्टि स्वीकार नहीं की जाएगी।

# ज्ञान प्रतियोगिता

## 367 परखो ज्ञान, पाओ इनाम

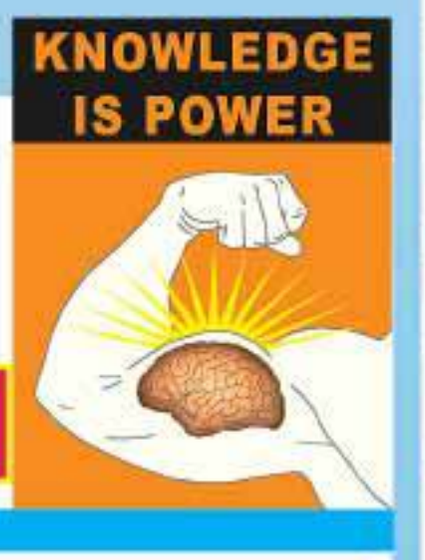


1. खगोल शास्त्र में किसकी जानकारियां होती हैं?
(अ) पृथ्वी की
(ब) आकाश की
(स) भूकम्प की

2. रणजी ट्रॉफी किस खेल में दी जाती है?
(अ) क्रिकेट में
(ब) बिलियर्ड में
(स) स्केटिंग में

3. कालिदास किस भाषा के लेखक थे?
(अ) अरबी
(ब) फारसी
(स) संस्कृत

4. हरारे जाने के लिए किस देश में जाना होगा?
(अ) श्रीलंका
(ब) भारत
(स) जिम्बाब्वे

5. राष्ट्रपति भवन परिसर में कौनसा गार्डन है?
(अ) सुल्तान गार्डन
(ब) मुगल गार्डन
(स) मराठा गार्डन

नीचे कुछ फूलों के चित्र दिए गए हैं। इनमें मेरीगोल्ड, सनफ्लॉवर, जैस्मिन, डहेलिया हैं। सही क्रम दीजिये।

..... .....

..... .....

**ज्ञान प्रतियोगिता- 367**

नाम.....
पता.....
.....पोस्ट .....
जिला.....
राज्य.....पिनकोड.....

*विशेषः कृपया अपना पता पूरा लिखें। पिनकोड नंबर अवश्य लिखें। बिना पिनकोड के प्रविष्टि स्वीकार नहीं की जाएगी।*

**जीतो 1000 रुपए के नकद पुरस्कार**

चयनित दस प्रविष्टियों को 100-100 रुपए (प्रत्येक को सौ रुपए) भेजे जाएंगे।

हमारा पता बालहंस, राजस्थान पत्रिका प्रकाशन, 5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर (राजस्थान)

# रंग दे

**1000 रुपए के पुरस्कार**

दोस्तो, इस चित्र में आपको भरने हैं, प्यारे-प्यारे रंग। चटख रंगों को भर कर, चित्र को काटकर (बालहंस कार्यालय, राजस्थान पत्रिका प्रकाशन, 5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर) में दिनांक 10 फरवरी, 2015 तक भिजवाना है। अगर आपकी उम्र 15 वर्ष या इससे कम है, तभी आप इस प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं। अपना नाम, आयु व पूरा पता साफ-साफ लिखना। पते में पिनकोड अवश्य लिखें। बिना पिनकोड के प्रविष्टि स्वीकार नहीं की जाएगी। सिर्फ डाक से भेजी गई प्रविष्टियां ही स्वीकार की जाएंगी। चयनित दस प्रविष्टियों को 100-100 रुपए भेजे जाएंगे।

नाम.....

पता.....

.....

पोस्ट.....

जिला व राज्य.....

पिनकोड.....

# दूंढो तो...

नीचे लिखी गई आकृतियों को चित्र में ढूंढ़ना है। इतना करके चित्र में रंग भी तो भरो, देखो कितना मजा आता है!

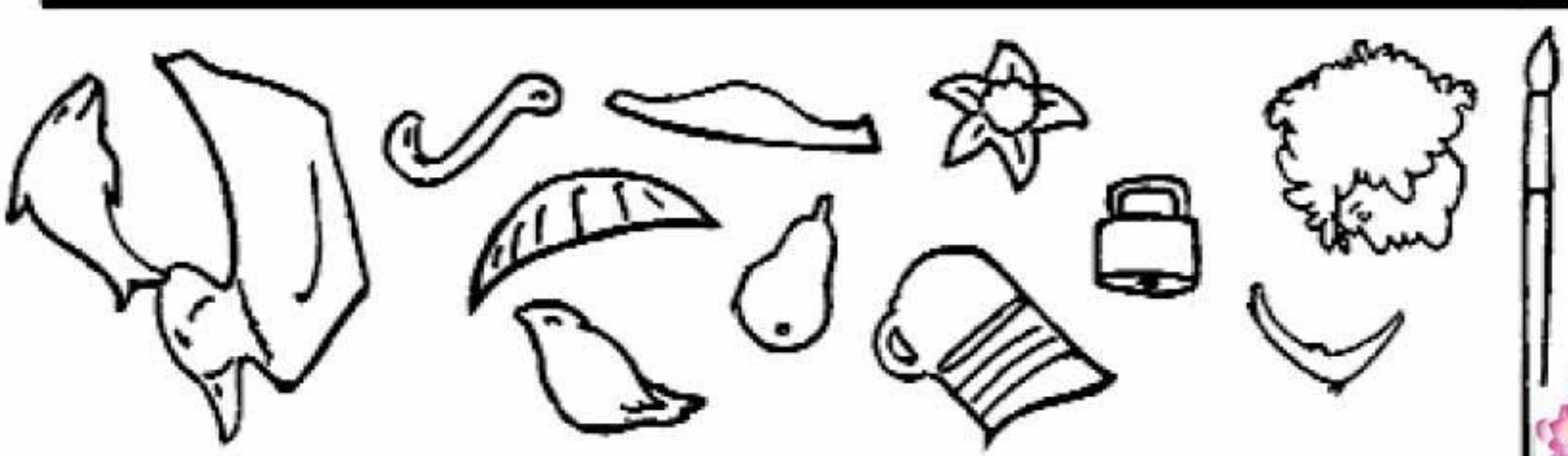

# महाभारत 3

प्रस्तुतिः कुमार मोहनचलम

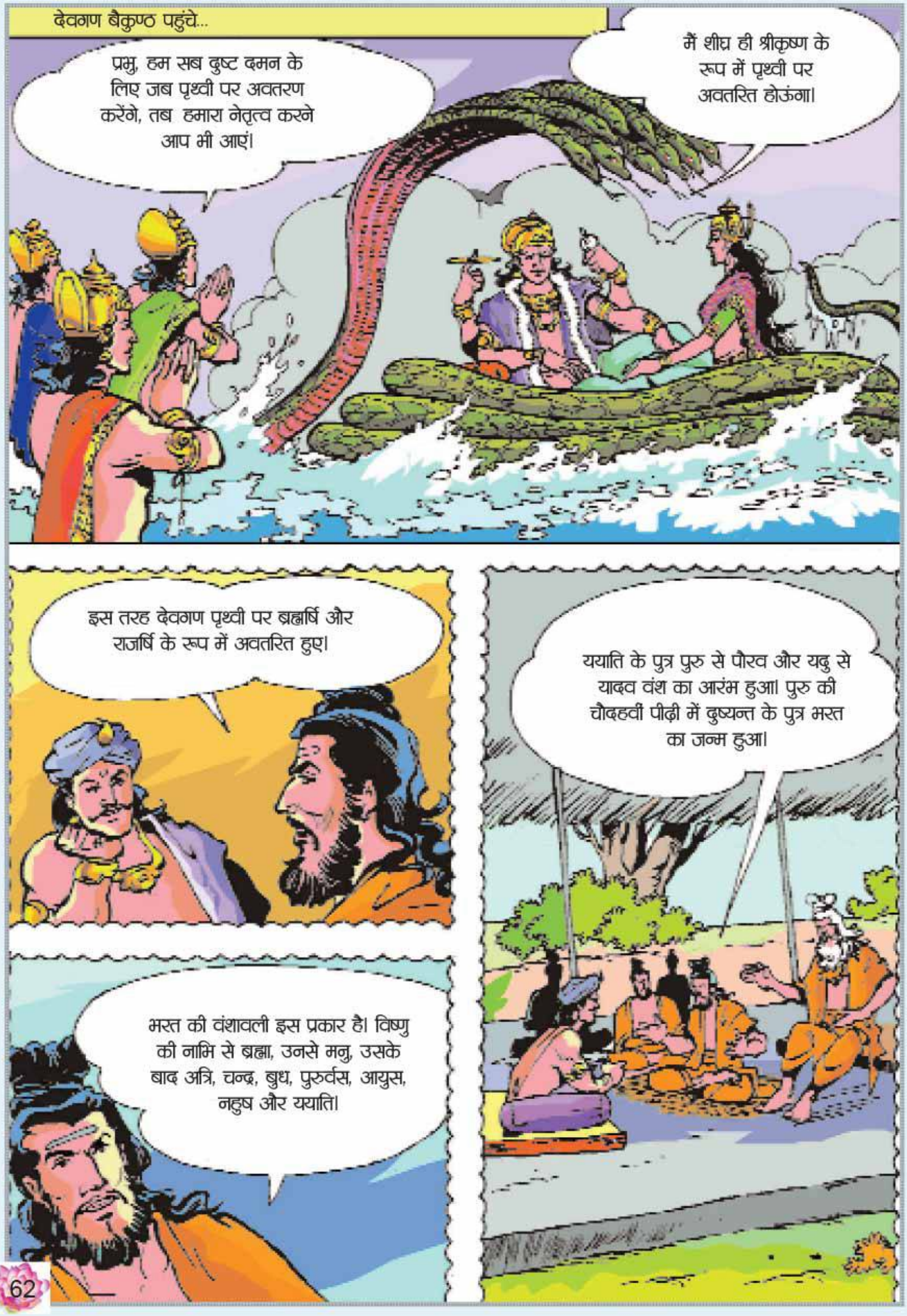

एक बार महाराज दुष्यन्त आखेट के लिए वन में गये..
यह तो कण्व महर्षि का आश्रम है!
आश्रम में उनके समक्ष महर्षि की गोद ली हुई पुत्री, अतिसुंदरी शकुन्तला आयी...
शकुन्तला की सेवा से महाराज दुष्यन्त प्रभावित हुये।
देवी, क्या आप मुझसे विवाह करेंगी?
महाराज, आप पिताश्री से बात करें।
लेकिन प्रेमासक्त दुष्यन्त ने बार-बार विवाह के लिए आग्रह किया, अंत में...।
मैं गंधर्व विवाह के लिए प्रस्तुत हूं, मेरा होने वाला पुत्र ही आपका उत्तराधिकारी होगा।

दुष्यन्त ने शकुन्तला से गंधर्व विवाह कर लिया और अपनी अंगूठी स्मृति के रूप में उन्हें पहनायी। दुष्यन्त कुछ दिन वहीं ठहरे...

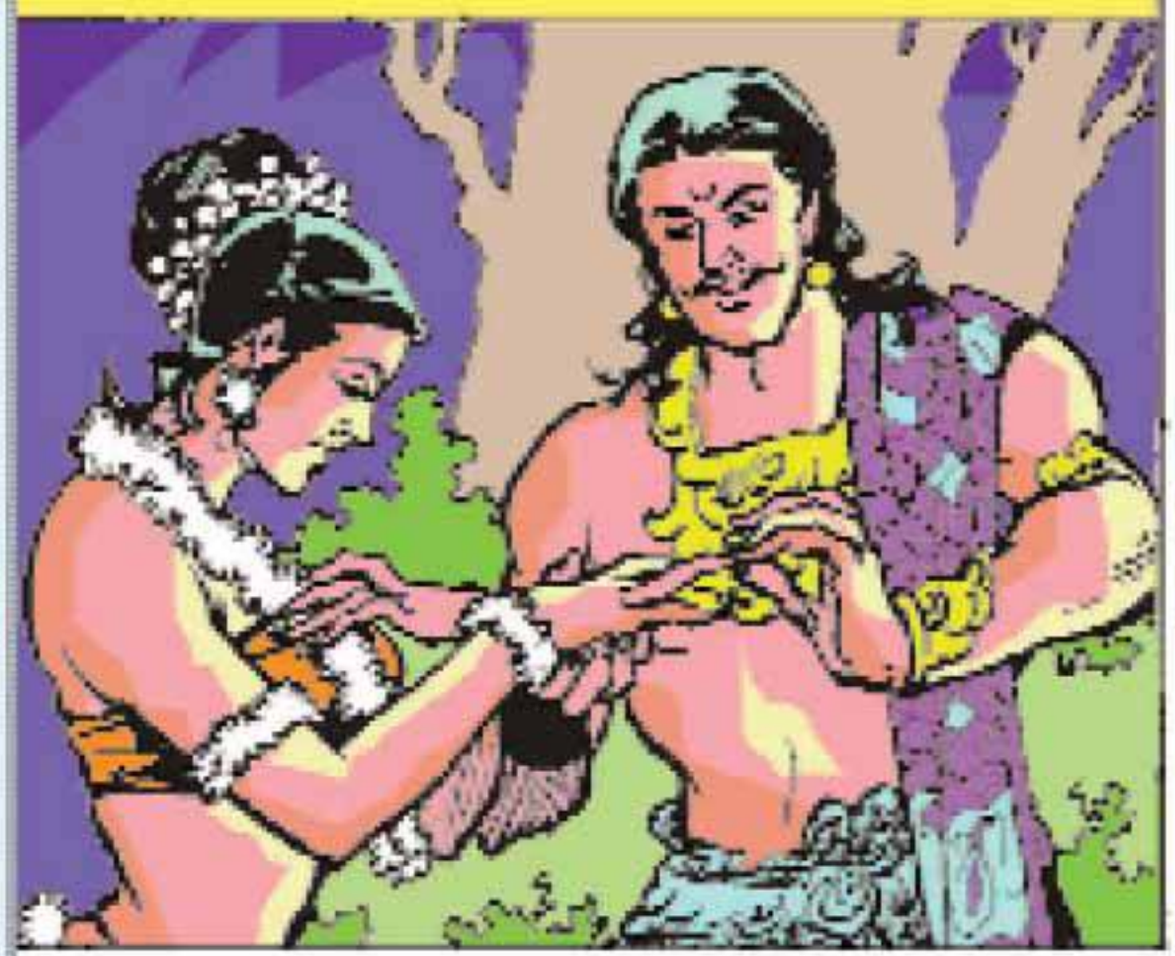

...दुष्यन्त जब लौटने लगे तो उन्होंने शकुन्तला से शीघ्र लौटने का वचन दिया।

एक दिन दुर्वासा ऋषि वहां पहुंचे। दुष्यन्त की स्मृति में डूबी शकुन्तला ने उन्हें नहीं देखा। क्रुद्ध दुर्वासा ने उन्हें शाप दिया कि जिसकी स्मृति...

...में तुम खोयी हुई हो, वह तुम्हें भूल जाये...। बाद में शकुन्तला के बार-बार विनती करने पर वे शांत हो गये।

कण्व ऋषि जब आश्रम लौटे, तब उन्होंने अपनी दिव्य दृष्टि से सब जान लिया।

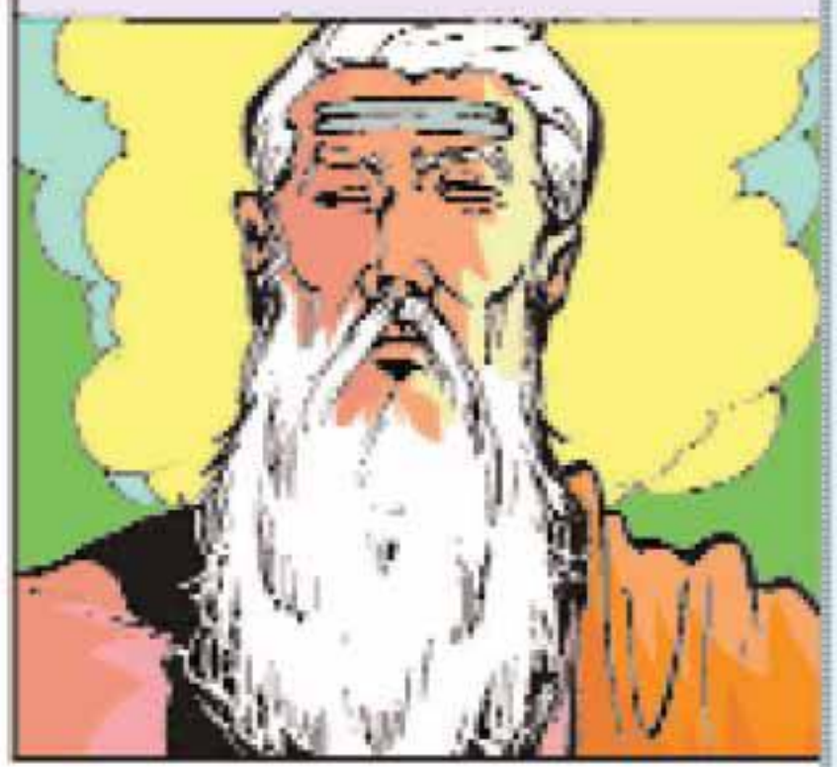

उन्होंने शकुन्तला को आश्वस्त किया।

कण्व महर्षि ने शकुन्तला को अपने शिष्यों के साथ राजा दुष्यन्त की राजधानी हस्तिनापुर भेजा।
मार्ग में शकुन्तला जब नदी में अपना मुंह-हाथ धो रही थीं। दुष्यन्त द्वारा दी गई अंगूठी उनकी अंगुली से नदी में गिर गयी। शकुन्तला को इसका पता नहीं चला और वह राजधानी पहुंची...
मुझे महाराज से मिलना है।
शकुन्तला दुष्यन्त के समक्ष पहुंची।
स्वामी, मैं आपकी पत्नी शकुन्तला हूं, मुझे अपने चरणों में स्थान दें।
देवी आप कौन हैं? मैं आपको नहीं जानता।
दुर्वासा ऋषि के शाप के कारण उन्हें कुछ भी स्मरण नहीं रहा।
बाद में...
-शकुन्तला!
?...
(अगले अंक में जारी)

**बालहंस** पढ़कर मन बहुत हर्षित हुआ। इसकी विशेषताओं का वर्णन के करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। यह बालकों की खास पसंद है। इस अंक में प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, चेखव की कहानियां बहुत रोचक थीं। साथ ही सीख सुहानी, सैर सपाटा में मुंबई, बालहंस न्यूज, क्रेजी किया रे, नॉलेज बैंक, तथ्य निराले, सामान्य ज्ञान, एक साल में कई साल, सभी कुछ बहुत ही रोचक और ज्ञान बढ़ाने वाला था। बालहंस के लिए कहूंगा कि-

बालहंस जब भी आती है
बच्चों-बड़ों को खूब हंसाती है।
मनभावन, दिल को छूकर
जब वह जाती है।
अगले अंक तक हमें
खूब बेचैन करती है।
बहुत ज्ञानवर्द्धक लगती है
मांग इसकी हमेशा रहती है।
इसी कारण बालहंस
सबको बहुत अच्छी लगती है।

**-राकेश मीणा**
सिंघाना, झुंझुनूं (राज.)

*जनवरी प्रथम, 2015*

## कैसा लगा

बालहंस एक मात्र ऐसी पत्रिका है, जो आज के दौर में पाठकों के हृदय में नैतिकता और उत्साह का संचार करती है। साथ ही स्वस्थ मनोरंजन कराती है। मैं इस मैगजीन का आभारी रहूंगा। मेरा पूरा परिवार बालहंस पढ़ता है।

**-अभिषेक शुक्ल**, कानपुर नगर (उ.प्र.)

*बालहंस यूं ही आती रहे*
*ढेर सारी खुशियां लाती रहे।*
*मन को हमारे बहलाती रहे*
*खुशियों के फूल खिलाती रहे।*
*ज्ञान हमारा बढ़ाती रहे*
*सीख सुहानी सिखलाती रहे।*
*मार्ग-दर्शन कराती रहे।*
*देश-दुनिया का ज्ञान देती रहे*
*हिन्दी-अंग्रेजी सुधारती रहे।*

**-कृति तिवारी**, शेखपुर, मुज्जफरपुर (बिहार)

## इनके पत्र भी मिले

-**आरिफ अहमद**, बलिया (उ.प्र.)
-**गौतम कुमार**, सिघौली (उ.प्र.)
-**अर्पित पुरोहित**, उज्जैन (म.प्र.)
-**धर्मवीर गुर्जर**, कुशलपुरा, सीकर
-**राजेन्द्र गोयल**, सरदारपुरा (राज.)
-**नचिकेता वत्स**, लारी (बिहार)
-**सोनू नायक**, जोधपुर (राज.)
-**सम्पूर्ण राज**, लखीसराय (बिहार)
-**शिवेश निगम**, कानपुर नगर (उ.प्र.)
-**दिनेश माथुर**, किशनगढ़ (राज.)
-**पीराराम चौधरी**, काछेला, जालोर
-**रागिनी देवी निगम**, कानपुर (उ.प्र.)
-**राजन राज दिलावर**, खजुरी (बिहार)
-**यश बरनवाल**, गाजियाबाद (उ.प्र.)

## सब्सक्रिप्शन फॉर्म

बालहंस

ग्राहक का नाम.....

पता (जिस पते पर बालहंस चाहिए)-

नाम.....पता.....

.....

पोस्ट.....जिला.....राज्य.....

कितने समय के लिए- द्वैवार्षिक (600/-रुपए)..... वार्षिक (300/-रुपए) ..... अर्द्धवार्षिक (150/-रुपए).....

ड्राफ्ट संख्या .....मनीऑर्डर संख्या .....

कृपया ग्राहक शुल्क (सब्सक्रिप्शन) की राशि बैंक ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से **बालहंस, जयपुर** के नाम भिजवाएं। ड्राफ्ट के साथ इस फॉर्म को भी संलग्न कर भेज सकते हैं।

*सब्सक्रिप्शन व वितरण संबंधी पूछताछ के लिए कृपया संपर्क करें।*
*फोन नं.* **0141-3327700** Ext. 50352, 50358

**राशि इस पते पर भेजें-**
बालहंस (पाक्षिक)
वितरण विभाग
राजस्थान पत्रिका प्रकाशन,
5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र,
जयपुर (राजस्थान), पिन- 302 004

.....
**ग्राहक का पूरा नाम व हस्ताक्षर**

*नोटः बालहंस पत्रिका साधारण डाक से भेजी जाती है। डाक अव्यवस्था के कारण अंक न मिल पाने की सूचना एक माह के भीतर दे देवें। अंक उपलब्ध होने पर ही दुबारा भेजा जाएगा। देर से भेजी गई आपत्तियां अस्वीकार होंगी।*

# Illusion

स्वत्वाधिकारी राजस्थान पत्रिका प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक व प्रकाशकः रघुनाथ सिंह द्वारा राजस्थान पत्रिका प्रा. लि., केसरगढ़, जे.एल.एन. मार्ग/5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं प्लाट नं. 73-74, रीको औद्योगिक क्षेत्र, झोटवाड़ा, जयपुर (राज.) से मुद्रित। आर.एन.आई. नं. 46292/86, सम्पादकः आनन्द प्रकाश जोशी

बालहंस डाक पंजीयन संख्या: Jaipur City/252/2015-17 आर.एन.आई.नं. 46292/86 1 फरवरी, 2015
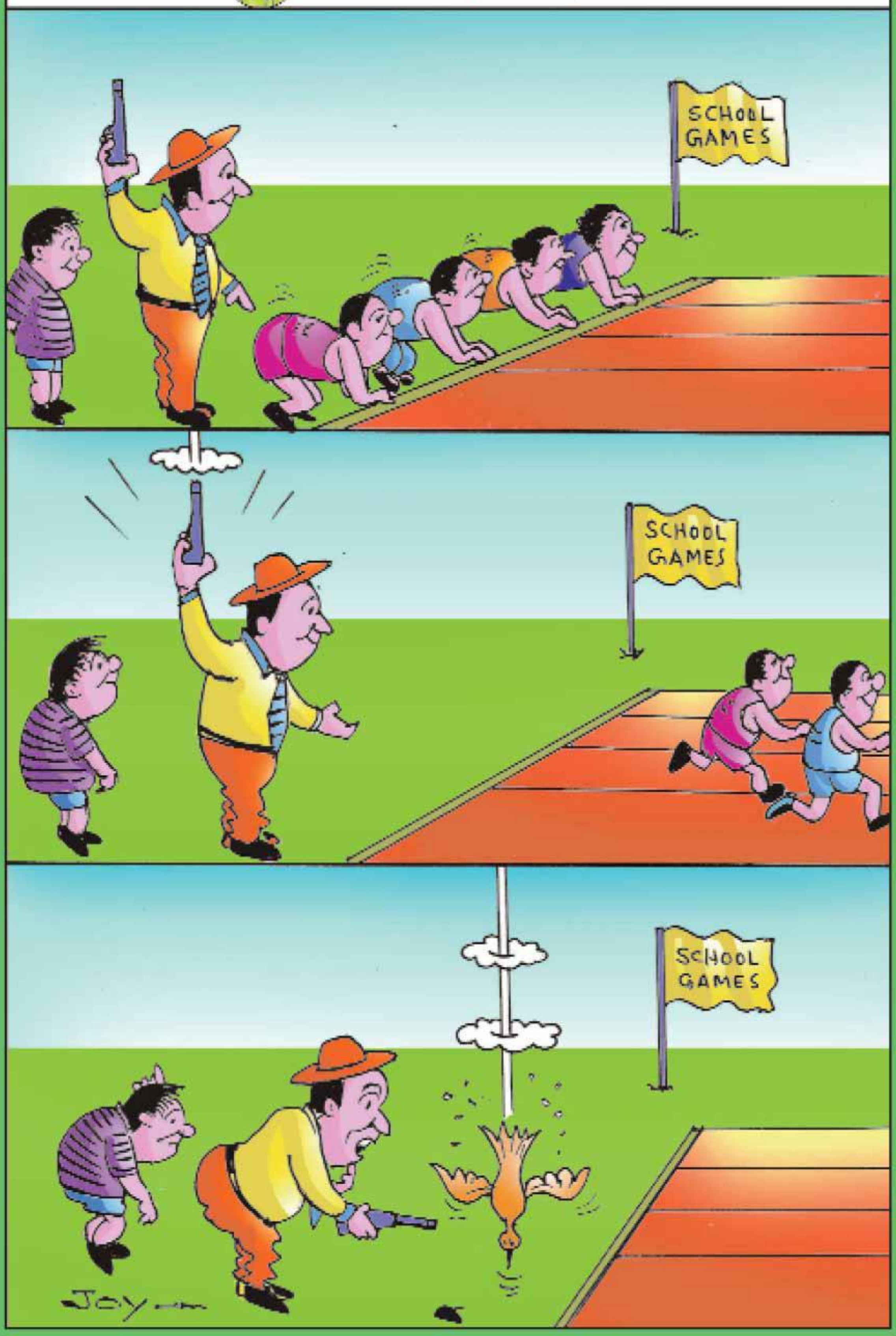
# साइलेंट सैम